युद्ध और विजेता

[भारत-पाक युद्ध १९७१]

लेखक

डॉ० श्यामसिंह शशि

एम० ए०, पी-एच० डी०

सम्पादक 'सैनिक समाचार'

(रक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

किताबघर दिल्ली-३१

मेन रोड,
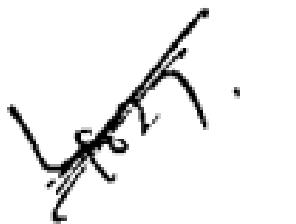
प्रकाशक : किताबघर, गांधीनगर, दिल्ली-३१
प्रथम संस्करण : फरवरी १९७२
मूल्य : पांच रुपये मात्र
मुद्रक : रूपक प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

YUDHA AUR VIJETA (Hindi) Rs. 5.00

प्रकाशकीय

डॉ० श्यामसिंह शशि हिन्दी तथा अंग्रेजी के सुपरिचित लेखक हैं। वे सैन्य-विज्ञान तथा नृविज्ञान के विशेषज्ञ माने जाते हैं। रक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रकाशित सशस्त्र सेनाओं के एकमात्र साप्ताहिक 'सैनिक समाचार' के यशस्वी सम्पादक हैं। अतः प्रस्तुत पुस्तक की प्रामाणिकता तथा तथ्यात्मकता के बारे में हमें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। पाठकों के हाथों में हमें यह अलभ्य उपहार सौंपते हुए परम हर्ष का अनुभव हो रहा है। आशा है सहृदय पाठक इसे स्वीकारेंगे तथा अपनी अमूल्य प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराना न भूलेंगे।

यह है भारत की परम्परा और संस्कृति। पाकिस्तान और दूसरे कुछ देश यह सोचते थे कि बांगला देश पर भारत अपना अधिकार जमा लेगा। कारण यह कि वे इस ढंग से सोचते थे कि 'भारत को क्या पड़ी है कि लगभग दो करोड़ बांगला देश के शरणार्थियों को अपने यहां शरण दें और करोड़ों रुपया प्रतिदिन का उनके ऊपर खर्च करें, अपनी अर्थ-व्यवस्था को संकट में डालें। इसके अतिरिक्त बांगला देश को पाकिस्तान के खूनी पंजे से मुक्त कराने के लिए अपने हजारों सैनिकों को मरवा डालें अर्थात् शहीद कराएं'।

पाकिस्तान और उनके मित्र देशों को यह मालूम होना चाहिए कि भारत की यह परम्परा रही है कि भारत किसी पर अन्याय नहीं करता, और कोई किसी पर अन्याय करता हो तो भारत सहन नहीं करता। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने रावण को पराजित कर लंका के राज्य को अपने

राज्य का अग नही बना लिया था, अपितु रावण के ही भाई विभीषण जो शाति, न्यायप्रिय और सदाचारी था उसको सौंप दिया था। भारत ने अपने स्वर्ण युग मे न्याय और शाति की स्थापना के लिए देश-देशातरों में अपनी सस्कृति की विजय पताका फहराई परन्तु चीन और पाकिस्तान की तरह दूसरे के क्षेत्र को अपने अधिकार का अग नहीं बना लिया। अब भी यदि पाकिस्तान हमारे काश्मीर के क्षेत्र पर जो अधिकार जमा रखा है छोड़ दे तो इस दिसम्बर के युद्ध मे पाकिस्तान के क्षेत्र का जो भाग हमारे अधिकार में है हम छोडने को तैयार हैं।

—प्रकाशक

लेखक की ओर से

गत भारत-पाक युद्ध में मेरे कई मित्र युद्ध-क्षेत्र में गए थे। 'डेस्क कार्य' में फंसा रहने के कारण मुझे यह सौभाग्य तो न मिल सका किन्तु सही समाचारों की सूचनाएं मुझे अवश्य मिलती रहीं। सशस्त्र सेनाओं के एकमात्र साप्ताहिक पत्र 'सैनिक समाचार' के सम्पादन करते समय कुछ ऐसे प्रश्न उठे कि इस युद्ध का सैन्य वैज्ञानिक आधार पर अध्ययन किया जाए तथा सेना के उन अछूते अंगों का विवरण प्रस्तुत किया जाए जिन पर असैनिक लेखकों ने ध्यान नहीं दिया।

इस पुस्तक की कुछ सामग्री मूलतः मैंने अंग्रेजी में लिखी थी जिसे अनुवादक को देना पड़ा था। सम्भव है अनुवादक सम्बन्धी भूलें कुछ रह गई हों। फिर भी मैंने सभी तथ्यों को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। कुछ अध्याय हिन्दी के प्रमुख पत्रों—'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'रवि भारत' आदि में भी लेख के रूप में छपे थे।

हमने इस तूफानी अथवा तड़ित युद्ध को जितना शीघ्र जीता वह विश्व के इतिहास में बेजोड़ घटना है। वस्तुतः इस महान विजय से हमने विश्व की शक्ति-सन्तुलन में अपना स्थान बना लिया है।

तथ्यों के एकत्रीकरण के लिए मुझे 'डीफेंस रिसर्च इन्स्टीट्यूट' के सैन्य विशेषज्ञों एवं अन्य कई सैन्य अधिकारियों से भी साक्षात्कार करना पड़ा। तदर्थ मैं उनका अत्यधिक आभारी हूं। मेरे अनेक सैनिक मित्र युद्ध में शहीद हो गये। उनकी स्मृति में प्रस्तुत है कुछ विश्वास, कुछ घटनाएं। इतिहास के समरजित अध्याय और सत्य की विजय।

—श्यामसिंह शशि

हम युद्ध के पक्ष मे कभी नही थे। हम तो एक शांतिप्रिय राष्ट्र के नागरिक थे। कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है। लेकिन हमने तो काफी प्रतीक्षा करने के बाद ही अपने पर थोपा गया युद्ध लडा।'''हम आराम से बैठकर समूची जाति का विनाश होते हुए नहीं देख सकते थे।

—इन्दिरा गांधी

समर्पित

उन भारतीय सैनिकों को जिन्होंने राष्ट्र की रक्षा में जीवन उत्सर्ग कर दिया। शहीदों को श्रद्धाजलि एवं विजेताओं के अभिनन्दन के साथ—

—लेखक

क्रम

परिशिष्ट

१. युद्ध—एक सामाजिक संस्था

मनुष्य जन्म और प्रवृत्ति से शांति-प्रियप्राणी है । 'योग्यता
की अतिजीविता' के सिद्धांत के अनुसार उसमें आत्मरक्षा-वृत्ति
पनपती है और वह रक्षात्मक स्थिति को दृढ़ से दृढ़तर बनात
है । रक्षा की सर्वोत्तम विधि है—आक्रमण । प्राचीन काल मे
मनुष्य जंगली खतरों से बचने तथा अपना पेट भरने के लि
अन्य पशुओं के विरुद्ध यह विधि अपनाता था । यह वृत्ति शनैः
शनैः संघर्षों के रूप में विकसित होती गई और इस प्रकार यु
का जन्म हुआ ।

युद्ध के उद्गम के विषय में सुकरात ने कहा है, "लो
सरल जीवन पद्धति से सन्तुष्ट नहीं रहेंगे । वे अपनी घरेलू आव
श्यकताओं में सोफा, मेज तथा अन्य फर्नीचर बढ़ाना चाहेंगे
हम उन वस्तुओं तक ही सीमित नहीं रहेंगे जो जीवन के लि
आवश्यक है जैसे—मकान, कपड़े और जूते । हम इन आवश्य
वस्तुओं के अतिरिक्त कुछ और भी पाने की इच्छा करेंगे अ
तब अपने राज्य की सीमाएं बढ़ाना आवश्यक प्रतीत हो
क्योंकि मूल राज्य-क्षेत्र पर्याप्त नहीं रहेगा । जो देश कभी
निवासियों के गुजारे के लिए काफी था, वही अब बहुत छो
और अपर्याप्त हो जाएगा । ऐसी दशा में हम खेती करने त
पशु चराने के लिए अपने पड़ोसियों की भूमि का कुछ भाग ले
चाहेंगे । परिणाम स्वरूप वे भी हमारी भूमि के एक भाग
इच्छा करेंगे तथा हमारी तरह ही आवश्यकता की सीमा

आर्थिक कारण

यूनानी दार्शनिक तथा समाजशास्त्री सुकरात ने आर्थिक कारण को महत्त्वपूर्ण माना था। विलासिता की वस्तुओं की लालसा में राज्यों ने जब कभी अपने क्षेत्र-विस्तार का प्रयत्न किया, तभी पड़ोसी देशों के साथ युद्ध हुए। इसप्रकार युद्ध और राज्यों का विकास हुआ।

पुराने ज़माने में कबीलों के मध्य प्रायः पीढ़ी-दर-पीढ़ी युद्धों का क्रम जारी रहता था। 'खून का बदला खून' एक आम रिवाज था। मर्नेगिन लोगों में स्त्री की चोरी के कारण, पत्थर के हथियारों से युद्ध होते थे जो आधुनिक युद्धों की तुलना में सचमुच बड़े सरल यद्यपि अपरिष्कृत थे।

युद्ध एक सामाजिक संस्था है। यह अनेक प्रबल अन्तर्नोदों और प्रचुर प्रशिक्षण पर आधारित है। सामाजिक ढांचा ही वह नींव है जो संघर्षों को एक दिशा प्रदान करता है। युद्ध तथा शांति के प्रति हमारी अभिवृत्ति पर परम्परा तथा प्रथा का गहरा प्रभाव होता है।

बर्नार्ड शा के अनुसार, "युद्ध एक जैव-आवश्यकता है तथा जनसंख्या-विस्फोट के विरुद्ध एक प्रभावशाली निरोधक है।" शायद मालथस ने अपने जनसंख्या-सम्बन्धी सिद्धांत में इसी मत की पुष्टि की है। कुछ जीव-विज्ञानियों का ख्याल है कि मनुष्य (व्यष्टि के रूप में) एक लड़ाकू प्राणी है, किन्तु इससे युद्ध अनिवार्य नहीं ठहरता क्योंकि युद्ध तो संगठित लड़ाई है जिसको अनुमति समाज का एक वर्ग देता है। अतः युद्ध का कारण सामूहिक व्यवहार में देखना चाहिए।

यदि युद्ध के कारण जैव हों तो युद्ध आवधिक तथा आवर्ती होने चाहिएं। किन्तु कई ऐसे समाज हैं जो शायद ही कभी युद्ध करते हों। इसके अतिरिक्त, युद्धों की संख्या एक जैसी नहीं रही है, एक शताब्दी से दूसरी शताब्दी में अन्तर रहा है। पिछले कुछ दशकों में नृ-विज्ञानियों को मनुष्य के ऐसे समुदाय मिले हैं जो युद्ध से सर्वथा अनभिज्ञ हैं। दूसरी ओर, यह भी कहा जाता है कि युद्ध अनिवार्य है क्योंकि मानव-प्रकृति अपरिवर्तनीय है। किन्तु आज शायद ही कोई विचारक युद्ध को युयुत्सा का परिणाम मानता हो।

आगबर्न तथा निमकॉफ के अनुसार, युद्ध एक सामाजिक आविष्कार है। हमारा अनुमान है कि आदिम युद्ध अपरिष्कृत होते होंगे क्योंकि नये आविष्कार या सामाजिक संगठन की प्रारम्भिक दशा ऐसी ही होती है। उस समय युद्ध-दल छोटे-छोटे होते थे जिनमें १० से ६० तक आदमी होते थे। केवल अफ्रीका की अशन्टी आदिम जाति जैसे कुछ ही समुदायों के पास सेनाएं होती थीं। लगभग सभी आदिम जातियों को सामूहिक लड़ाई का कुछ अनुभव रहा है, किन्तु श्रीलंका के वेद्दा और अफ्रीका के जूनी लोगों के विषय में कहा जाता है कि वे कभी युद्ध नहीं करते।

उस समय युद्धों का कारण था—अपर्याप्त साधनों वाले क्षेत्रों के लोगों द्वारा अतिक्रमण। ये युद्ध छापा मारने-जैसी क्रिया होते थे। शत्रु पर अचानक हमला बोल दिया जाता था। अहकार, गौरव तथा धर्म का आदिकालीन युद्धों से गहरा सम्बन्ध था।

मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि संघर्ष और युद्ध का

अभिप्रेरण भूख या काम-वासना द्वारा हो सकता है जैसे हेलन के लिए ट्राय का युद्ध हुआ या पद्मिनी के लिए अ उद्दीन खिल्जी ने चितौड़ पर आक्रमण किए। यहां ड्राइडन कविता का स्मरण हो आता है, "युद्ध राजाओं का व्यव है।"

भारतीय साहित्य में युद्ध को धर्म कहा गया है। गीत इसे क्षत्रिय का महान धर्म प्रतिष्ठित किया गया है। क्ष का सच्चा धर्म लड़ना है। वह यदि लड़कर विजय प्राप्त क है तो राज्य का भोग करता है तथा उसे यश और सम्म मिलता है किन्तु यदि वीरगति को प्राप्त करता है तो उ लिए स्वर्ग-लोक के द्वार खुल जाते हैं। 'बरस अठारह क्षत्री ज आगे जीने को धिक्कार' तथा इसी प्रकार की अनेक सूक्ति भारतीय जन-जीवन में देखने को मिलती हैं। इससे सिद्ध हो है कि राम और कृष्ण की वीरता से अनुप्रेरित भारतीय संस्कृ में युद्ध की उपादेयता का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। राजस्थ की रजकण में शूरवीरों की अविस्मरणीय घटनाएं लिप हुई हैं।

किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं निकालना चाहिए भारतीय संस्कृति में शांति का महत्व नहीं था। वास्तव में शांति प्रियता तो भारतीय संस्कृति का सर्व-प्रमुख अंग माना जा रहा है। हम स्वयं किसी पर आक्रमण करने के पक्ष में न रहे। अलबत्ता, जब कभी किसी बाहरी शक्ति ने हमें तंग करन चाहा, तो हमारी वीरता से ओत-प्रोत परम्परा आत्मरक्षा लिए जाग उठी। शत्रु का डटकर मुकाबला किया। उसे छटी क दूध याद कराया और अन्ततः विजय प्राप्त की। हमने जब कभ

युद्ध में भाग लिया तो उसका उद्देश्य होता था—शांति की स्थापना। संसार के सभी प्राणी प्रेम-पूर्वक रहें, एक-दूसरे के दुःख-दर्द में सहारा बनें—इसी सद्भावना के आधार पर भारतीय संस्कृति विदेशियों द्वारा पदाक्रांत किए जाने के बावजूद अमिट रही। हां, भारत के हर क्षेत्र की अपनी सैनिक परम्परा एक मूल्यवान मोती के रूप में अक्षुण्ण बनी रही और आज भी जीवित है।

ऐतिहासिक पक्ष

इतिहासकारों के अनुसार प्रतिष्ठा और मिथ्या अभिमान के लिए अनेक युद्ध हुए। १९६२ में भारत पर चीनी हमला हिमालय की पथरीली भूमि के लिए नहीं हुआ; क्योंकि न तो वह उपजाऊ ही थी और न ही उसे लेने से चीनी अर्थ-व्यवस्था में कोई समृद्धि होनी थी। वस्तुतः चीनियों ने अपनी सैन्य शक्ति की धाक जमाने के लिए अतिक्रमण किया था।

यूरोप के देशों का इतिहास बताता है कि प्राचीन काल से अब तक लगभग प्रत्येक देश ने सैकड़ों युद्ध लड़े हैं। युद्धों के उपलब्ध आंकड़ों से स्पष्ट नहीं होता कि कौन से देश उग्र हैं और कौन से शांति-प्रिय।

'सैन्य मनोबल' में कई गुणों का समावेश रहता है। सैनिक शत्रु को मारने, खतरे तथा आक्रमण के समय भयभीत होकर भागने के बजाय निश्चित ढंग से स्थिति का सामना करना, ननुनच किए बिना अपने वरिष्ठ अधिकारियों की आज्ञा-पालन और अपने साथियों से पूर्ण सहयोग करना सीखता है।

यद्यपि प्रेम तथा भ्रातृभाव ने राष्ट्र-संघ के माध्यम से संसार में एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया तथापि संघ की आड़ में और उसके बाहर युद्ध चलते ही रहे। किन्तु इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के पुनर्गठित रूप 'संयुक्त राष्ट्र संघ' को राष्ट्रों के मध्य सद्भाव तथा सहयोग बढ़ाने में बहुत सफलता मिली है लेकिन उतनी नहीं जितनी मिलनी चाहिए। मनुष्य एक ओर तो अन्य ग्रहों पर नया समाज स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है किन्तु दूसरी ओर उसने वर्तमान समाज को नष्ट करने के लिए परमाणु बम और मिसाइल जैसे शस्त्रास्त्र बनाएं हैं। किन्तु, संहार-क्षमता बढ़ने पर मनुष्य की समझ में आने लगा है कि सद्भाव और सहयोग में ही खैरियत है।

२. युद्ध के कारण

❀ ❀

पूर्वी पाकिस्तान (अब स्वतंत्र बांगला देश) से हजारों की
[सं]ख्या में शरणार्थी भारत आ रहे थे। याहिया की सेना ने
[व]हां के निहत्थे स्त्री-पुरुषों को गोली से भून डाला था। स्त्रियों
[के] साथ बलात्कार किया तथा नन्हें-नन्हें शिशुओं को संगीनों
[प]र उठाया; एक क्रूरता पूर्ण ठहाका और बस प्राणांत। बुद्धि-
[जी]वियों को भी नहीं छोड़ा गया। जिसने भी याहिया सरकार
[का] विरोध किया उसे ही सामूहिक मृत्यु-दंड का शिकार बनना
[प]ड़ा। नृशंस अत्याचारों से त्रस्त वहां के नवयुवकों ने एक सेना
[ख]ड़ी की जिसका नाम रखा गया—मुक्तिवाहिनी। यह गुरिल्ला
[यु]द्ध करती और शत्रु को काफी नुकसान पहुंचाती। उसकी देख-
[रे]ख में अनेक शरणार्थी भारत सही-सलामत आ सके।

अवामी लीग को सर्वाधिक मत मिलने पर भी उन्हें सरकार
[न]हीं बनाने दी गई। वहां का सर्वप्रिय नेता शेख मुजीबुर्रहमान
[गि]रफ्तार कर मियांवाली (पश्चिम पाकिस्तान) की काल
[को]ठरी में भेज दिया गया। बंगालियों में प्रतिशोध की ज्वाला
[प्र]धक रही थी। किन्तु कहां पाकिस्तान की आधुनिक अस्त्र-
[श]स्त्रों में लैस सेनाएं और कहां बेचारे देशी हथियारों वाले
[मु]क्तिवाहिनी के अप्रशिक्षित युवक! लेकिन मनोबल की दृष्टि
[से] उनका कोई सानी नहीं था।

इधर भारत में दिन-प्रतिदिन शरणार्थियों की बाढ़-सी आ
रही थी। नौ महीने के भीतर लगभग १० लाख व्यक्ति भारत
[प]हुंच चुके थे। हमारी अर्थ-व्यवस्था बिगड़ती जा रही थी।

हमारे नेताओं ने पाकिस्तान से कहा कि शरणार्थियों को वापि
घर जाने के लिए अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न की जाए किन्
वहां के राष्ट्रपति याहिया खां के कान पर जूं तक नहीं रेंगी
उल्टे स्थिति यहां तक आ गई कि उसकी सेना जबरन असहाय
लोगों को हमारी सीमा में धकेल जाती और उनकी बहू-बेटियो
को अपनी छावनियों में मनोविनोद के लिए रख लेती।

३० नवम्बर १९७१ को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गां
ने कहा कि दुनिया को यह समझ लेना चाहिए कि हम अ
पड़ोस के लोगों का सर्वनाश नहीं होने देंगे। उनका खात
हमारी स्वाधीनता और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए हित में न
है। यह उस नींव को हिला देगा जिसका हमने निर्माण कि
है। प्रधानमंत्री ने सदन में करतल ध्वनि के बीच यह भी कह
कि पाकिस्तान को बांगला देश से अपनी सेनाएं हटानी होंगी
उन्होंने बताया था कि आगामी महीना बड़ा नाजुक और संक
पूर्ण हो सकता है अतः सारे देश को मजबूत तथा संगठित बनन
होगा।

उसी दिन रक्षा-मंत्री श्री जगजीवनराम ने कहा कि भारत
पाक सीमा पर तनावपूर्ण स्थिति होने के बावजूद यदि पाकि
स्तान के शासक समय की पुकार को समझें और बांगला देश क
इच्छा का आदर करते हुए उसे स्वाधीनता दें तो युद्ध अब भ
टल सकता है।

२ दिसम्बर १९७१ को प्रधानमंत्री ने पुनः दृढ़तापूर्वक
कहा कि बांगला देश के मामले पर भारत किसी भी ताकत की
धमकी में आकर पीछे नहीं हटेगा। वहां की निरीह जनता के
नर-संहार से आंख मूंदकर जो देश इसे पाकिस्तान का अंदरूनी

रला बता रहे हैं तथा हमें डराने-धमकाने की कोशिश कर
हैं, वे अच्छी तरह समझ लें कि अब हमारे दबने के दिन
गए हैं।

उन्होंने हर्षनाद के बीच कहा, "गोरी चमड़ी वालों को
तौर पर समझ लेना चाहिए कि अब पहले जैसा जमाना
रहा और भारत वह भारत नहीं है जो पांच साल पहले
" वस्तुतः प्रधानमन्त्री के इन शब्दों में युद्ध की आशंका स्पष्ट
क रही थी। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे नेताओं को याहिया
की क्रूर चालों का पूर्वाभास हो गया था अतः उन्होंने तैयारी
में कोई कसर उठाकर नहीं रखी। हमारी प्रधानमन्त्री ने
श्चिमी देशों का दौरा भी किया किन्तु कोई महत्वपूर्ण
ाम नहीं निकला।

वैसे भारत और पाकिस्तान के बीच वैमनस्य परम्परागत
है। इसकी जड़ें ब्रिटिश औपनिवेशिक काल की हैं। पाकि-
का निर्माण ही मजहब के नाम पर हुआ था। उसके जितने
ासक हुए प्रायः सभी भारत के खिलाफ जिहाद का नारा
करते रहे। वहां प्रजातंत्र कुछ ही दिन चला। बाद में
सैनिक अधिकारी ही वहां के शासक बने।

त चुनावों में पूर्वी बंगाल की अवामी लीग को आशातीत
ता मिली थी। सात करोड़ की जनता का प्रतिनिधि
पश्चिमी पाकिस्तान की कम संख्या वाले नेताओं के लिए
बन गया। वे नहीं चाहते थे कि पूर्वी पाकिस्तान पश्चिमी
तान पर शासन करे। भुट्टो स्वयं राष्ट्रपति बनने के
में थे। फलतः अवामी लीग और उनके सदस्यों तथा
येयों पर जुल्म ढाए जाने लगे। लगभग १० लाख बंगाली

मार दिए गए तथा १० लाख जान बचाकर किसी तरह भार चले आए।

भारत पाकिस्तान पर पूरे पैमाने पर आक्रमण करने पक्ष में नहीं था। न ही उसे उसकी धरती हड़पने की कोई चा रही है। उसका उद्देश्य तो केवल बांगला देश को स्वाधीनत दिलाकर उसके देशवासियों को शांतिपूर्वक घर भेजना था।

आखिर, १३०० मील लम्बी भारत-बांगला देश सीमा प पाकिस्तान ने अपनी फौजें जमा करदीं। वे हमारी सेना के साथ काफी समय से छोटी-मोटी झड़पें करते आ रहे थे। उन्होंने अनेक तोड़-फोड़ की कारवाइयां भी की थीं। अगरतल्ला की ओर तो उनके जासूस आकर हमारी रेलों तक को उड़ाने लगे थे।

उधर मुक्तिवाहिनी जस्सौर तक पाकिस्तानियों के नाक में दम किए जा रही थी। चौदहवीं पंजाब रेजीमेंट (पाकिस्तान) को भी लेने के देने पड़ गए थे। लेकिन जब हमारी सीमाओं को पार करके पाकिस्तानी सैनिक बहुत दूर तक मार करने लगे तो हमारी प्रधानमंत्री ने सेनाओं को आदेश दिया कि वे भी सीमा पार कर सकती हैं और आत्मरक्षा के लिए प्रत्याक्रमण कर सकती हैं।

भारत ने जब देखा कि अमेरिका पाकिस्तान को भारी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र दे रहा है तथा चीन के साथ भी सांठ-गांठ बन रही है तो रूस के साथ सौहार्द-सम्बन्धों का बढ़ाना आवश्यक हो गया। वैसे भी आज अकेले व्यक्ति की आवाज दुनिया मुश्किल ही सुन पाती है। रूस के साथ जो नए सम्बन्ध स्थापित हुए उनमें हमारी प्रधानमंत्री की अनूठी सूझ-बूझ तथा राजनीतिक कुशलता का परिचय मिलता है। वस्तुतः रूस ने इस

युद्ध में जिस प्रकार से हमारा साथ निभाया वह एक सच्चे मित्र का कार्य था। अमरीकी राष्ट्रपति निक्सन ने सातवां जहाज़ी बेड़ा भेजकर न केवल भारत बल्कि स्वयं अपने देशवासियों का जनमत भी अपने विरुद्ध कर लिया।

पाकिस्तान की करतूतें सीमा पार कर गई थी अतः भारत ने आत्मरक्षा के लिए अपनी सेनाओं को मुक्तिवाहिनी की सहायता करने की छूट दे दी।

पाकिस्तान द्वारा बांगला देशवासियों पर जो निर्मम अत्याचार किए गए उनकी लोमहर्षक कहानियां 'टाइम्स', अन्य अमरिकी तथा पश्चिमी देशों के बड़े-बड़े समाचार-पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। स्वीडन के एक प्रमुख समाचार-पत्र 'एक्सप्रेशन' के संवाददाता ने बताया कि जो चीजें जलने योग्य हैं वे सभी जला दी गई हैं, हर जगह बस एक ही नजारा है। बर्तन नष्ट कर दिए गए हैं और जो मकान जला दिए गए हैं उनकी राख में लोग अपनी चीज़ों को टटोल रहे हैं। एक अमरीकी राजनयिक के शब्दों में बांगला देश की प्रसव-पीड़ा पाकिस्तान की मृत्यु-पीड़ा सिद्ध होगी।'

३. पूर्वी मोर्चा

❀ ❀

आत्मरक्षा के लिए आक्रमण

२ दिसम्बर १६७१। पाकिस्तान के विमानों के अगरतल्ला पर अचानक आक्रमण। पाकिस्तान की फौज रात से ही भारी गोलाबारी कर रही थी। त्रिपुरा के कई नागरिक मारे जा चुके थे। भारतीय सेना को आदेश मिला कि वह आत्मरक्षा के लिए सीमा पार कर सकती है। अतः हमारी सेनाओं ने जवाबी हमला किया और शत्रु को पीछे धकेल दिया। पाकिस्तान के हवाई हमलों के समय हमने अपनी विमानभेदी तोपों को दागा तथा एक सेबरजेट विमान को पहले दिन ही धराशायी कर दिया।

उधर मुक्ति फौज ने पाक सेना को अगरतल्ला क्षेत्र में सभी दिशाओं से घेर लिया था तथा दुश्मन के ७ टैंक तोड़कर चूर-चूर कर दिए थे। मुक्तिवाहिनी कई गांवों पर कब्जा कर चुकी थी।

हमारी नौसेना ने ४ दिसम्बर को पहली बार कार्रवाई की। चटगांव बन्दरगाह पर आक्रमण कर पश्चिमी पाकिस्तान की दो गनबोटों को डुबा दिया तथा कराची से सैनिक-सामग्री लेकर आनेवाले एक पाक-पोत को पकड़ लिया। हमारा विक्रांत वहां पहले से ही पहुंच गया था अतः उसके विमानों ने शत्रु के महत्वपूर्ण ठिकानों पर आक्रमण किए। नौसेना के इतिहास में यह दिन वस्तुतः स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। स्वतंत्रता-

प्राप्ति के बाद पहली बार उसने युद्ध में भाग लिया और पह
ही दिन अभूतपूर्व विजय प्राप्त की ।

बांगला देश के २०० किलोमीटर क्षेत्र में हमारी सेना व
कब्जा हो गया। वहां की हवाई सेना बहुत कम रह गई।
दिसम्बर को पाकिस्तान के ३ जंगी जहाज और एक पनडुब
डुबाकर हमारी नौसेना ने एक बहुत बड़ा कमाल हासि
किया। नौसेना शांत सेना कहलाती है लेकिन शांत व्यक्ति
के लिए अत्यन्त घातक भी बन सकता है यह हमारी नौसेना
सिद्ध कर दिखाया।

भारतीय थल सेना ने अखौरा तथा लक्षम पर कब्जा
लिया। अतः समीपस्थ इलाकों में शत्रु के हौसले पस्त हो ग
पूरे बांगला में हमारी सात तथा पाकिस्तान की चार डिवि
सेना थी।

बांगला देश को मान्यता

भारत सरकार ने गणप्रजातंत्री बांगला देश की सर
को ६ दिसम्बर १९७१ को मान्यता प्रदान कर दी। प्र
मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लोकसभा में घोषणा करते
कहा कि हमने बांगला देश की जनता की इस प्रबल आक
को अब तक इसलिए रोके रखा कि हम पाकिस्तान की सर
और विश्व के जनमत दोनों में विवेक की आशा रखते थे।
जब पाकिस्तान ने हमारे ऊपर युद्ध थोप दिया तो इसे और
रखना उचित नहीं था।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने जब यह सूचना सदन में
सारे सदस्यों में हर्ष की लहर दौड़ गई। प्रधानमंत्री ने बां

देश के अद्वितीय नेता शेख मुजीबुर्रहमान को वहां के राष्ट्रपिता की संज्ञा दी और कहा कि वहां सरकार ने गुटों से अलग रहने, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, धर्म-निरपेक्ष नीति अपनाने तथा उपनिवेशवाद का विरोध करने का निर्णय किया है।

बांगला देश को मान्यता प्रदान करते ही सारे देश में खुशी की लहर दौड़ गई। जैस्सोर अब केवल दो किलोमीटर दूर रह गया था। भारतीय सेनाएं द्रुतगति से आगे बढ़ती जा रही थीं।

वास्तव में युद्ध के तीसरे दिन ही हमारी रिजर्व फोर्स पूर्वी क्षेत्र से स्थान्तरित की जाने लगी। इसके चार दिन बाद ही मेजर फरमान अली खान ने सयुंक्त राष्ट्र से युद्ध-विराम की अपील की। हमारे थल सेनाध्यक्ष ने लगातार प्रसारणों द्वारा उन्हें आत्मसमर्पण के लिए सलाह दी। यह मनोवैज्ञानिक विधि पूरी तरह से कारगर सिद्ध हुई। ढाका को चारों ओर से घेर लिया गया। आवागमन तथा संचार-व्यवस्था पहले ही ठप कर दी गई थी। हमारी हवाई सेना अपने करतब दिखा चुकी थी जिससे शत्रु की सारी वायुशक्ति समाप्त हो चुकी थी। अतः अब शत्रु और अधिक वार झेलने को तैयार नहीं था। उधर दक्षिणी मोर्चे पर भी उसे करारी मार सहनी पड़ रही थी। वस्तुतः युद्ध-समाप्ति से पूर्व ही हमें विजयश्री प्राप्त हो गई थी।

पूरी नहीं हो सकेगी। यदि उन्होंने आत्म-समर्पण नहीं किया तो उनकी मौत निश्चित है। उन्होंने कहा कि आप लोग बांगला देश में विभिन्न स्थानों से भागकर नारायणगंज और बारीसाल में एकत्र हो रहे हैं। मुझे यह भी मालूम है कि आप भाग निकलने या बचाए जाने की आशा में इन स्थानों पर इकट्ठे हुए हैं। मैंने इसके लिए भी उपयुक्त कदम उठा लिए हैं कि आप लोग समुद्र के रास्ते भाग नहीं सकें और इसकी चौकसी की जा रही है। यदि आप मेरी बात मानकर आत्मसमर्पण नहीं करते और भागने की कोशिश करते हैं तो आपको कोई बचा नहीं सकेगा। यह मत कहिएगा कि मैंने आपको चेतावनी नहीं दी। यदि आपने आत्मसमर्पण किया तो आपके साथ सम्मान का बर्ताव किया जाएगा और जेनेवा समझौते के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

इधर हमारे कुशल सेनानायक आत्मसमर्पण के लिए चेतावनियां दे रहे थे और उधर हमारे जवानों में ढाका पहुंचने की होड़ लगी हुई थी। ढाका पर निर्णायक हमले की तैयारी की जा चुकी थी। मेघना नदी पार करके हमारे जवान आगे बढ़े जा रहे थे। नोआखली मुक्त करा लिया गया था। चटगाव के निकट आर्डिनेन्स फैक्ट्री पर बम वर्षा की जा रही थी। हमारी प्रधानमन्त्री ने राष्ट्र का मनोबल ऊंचा रखने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी। रामलीला मैदान में उन्होंने एक आम सभा में कहा, "बहादुरों लड़ो, विजय हमारी होगी।" आकाशवाणी से प्रसारित एक अन्य सन्देश में वे बोलीं, "आप राष्ट्र की स्वतंत्रता और उसके सम्मान की रक्षा के लिए बड़े साहस और वीरता से युद्ध कर रहे हैं। पूरा देश आपकी सराहना करता है।

दे देशवासी आपके साथ हैं। आप और हम महान सिद्धान्तों लिए लड़ रहे हैं।"

देश की अटूट एकता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ज सभी क्षेत्रों, सभी भाषाओं, सभी धर्मों के लोगों और सभी जनीतिक दलों में पूरी एकता है। आपकी तरह आक्रमण-ारी को पराजित करने में लगे हुए हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों को एक सभा में श्रीमती न्दिरा गांधी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि हम किसी के दबाव में हीं आएंगे, अपने सिद्धान्तों के लिए लड़ेंगे तथा बांगला देश के ारणार्थियों के अपमान का बदला लेंगे।

७ दिसम्बर को जैस्सोर और सिल्हट पर हमारी सेनाओं का कब्ज़ा हो गया तथा कोमिल्ला को काट दिया गया जिससे ढाका की ओर विजय-अभियान और तेज हो सके। बांगला देश को भूटान ने मान्यता प्रदान कर दी तथा शरणार्थियों को वापिस भेजने की योजना तैयार की जाने लगी।

११ दिसम्बर तक बांगला देश के १० बड़े नगरों पर कब्ज़ा हो गया था। १८०० पाक सैनिक आत्मसमर्पण कर चुके थे। लेकिन भागती हुई पाकिस्तानी सेना बौखलाहट में पुलों तथा रेल की पटरियों को ध्वस्त करती जा रही थी। अनेक बुद्धि-जीवियों तथा सम्भ्रांत परिवारों को कत्ल किया जा रहा था।

स्थिति कुछ और ही थी। यह भी एक प्रकार की धमकी ही थी जिसे निक्सन ने भारत जैसे सुदृढ़ मनोबल वाले राष्ट्र को चुनौती के रूप में भेजा था। हम उस बेड़े से बिलकुल नहीं डरे और अडिग रहे। हां, यदि ढाका लेने में और ज्यादा देर हो जाती और पाक सैनिक आत्मसमर्पण न करते तो हो सकता था यह बेड़ा कुछ गुल खिलाता और हमारी सेनाओं का मनोबल गिराने का प्रयत्न करता। यह भी सम्भव था कि रूस का जहाजी बेड़ा (जैसे कि रिपोर्ट मिली थी कि वह भी जापान सागर से होता हुआ आ रहा है।) उससे टक्कर लेता। ऐसी स्थिति में युद्ध किस दिशा में मोड़ लेता यह कहना कठिन है। किन्तु हमारे सैन्य अधिकारियों की सूझ-बूझ ने ढाका पर शीघ्र ही विजय प्राप्त कर ली।

१२ दिसम्बर को छाताधारी ब्रिगेड भी ढाका के पास उतर चुकी थी। १३ दिसम्बर को जनरल मानेकशा ने पुनः चेतावनी दी। अन्ततः १४ दिसम्बर को बांगला देश में पाकिस्तान का सिविल शासन समाप्त हो गया। याहिया सरकार के असैनिक गवर्नर डॉ० ए० एम० मलिक, उनके मंत्रियों तथा वरिष्ट अधिकारियों ने अपने पदों से सामूहिक इस्तीफा दे दिया। उधर ढाका के लिए लड़ाई शुरू हो गई थी। पहली ही चपेट में शत्रु के ब्रिगेडियर सहित कई बड़े अफसर पकड़ लिए गए। १६ दिसम्बर को वहां के ऐतिहासिक रेसकोर्स मैदान में पाकिस्तानी ले० जनरल नियाजी ने भारत की पूर्वी कमान के मुख्य सेनापति ले० जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा को अन्य सैनिकों सहित आत्म-समर्पण कर दिया तथा विधिवत् दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए। इस प्रकार से बांगला देश के मुक्ति संघर्ष का समापन हो गया।

सारे देशवासी आपके साथ हैं। आप और हम महान सिद्धान्तों के लिए लड़ रहे हैं।"

देश की अटूट एकता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आज सभी क्षेत्रों, सभी भाषाओं, सभी धर्मों के लोगों और सभी राजनीतिक दलों में पूरी एकता है। आपकी तरह आक्रमणकारी को पराजित करने में लगे हुए हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों को एक सभा में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि हम किसी के दबाव में नहीं आएंगे, अपने सिद्धान्तों के लिए लड़ेंगे तथा बांगला देश के शरणार्थियों के अपमान का बदला लेंगे।

७ दिसम्बर को जैस्सोर और सिल्हट पर हमारी सेनाओं का कब्जा हो गया तथा कोमिल्ला को काट दिया गया जिससे ढाका की ओर विजय-अभियान और तेज हो सके। बांगला देश को भूटान ने मान्यता प्रदान कर दी तथा शरणार्थियों को वापिस भेजने की योजना तैयार की जाने लगी।

११ दिसम्बर तक बांगला देश के १० बड़े नगरों पर कब्जा हो गया था। १८०० पाक सैनिक आत्मसमर्पण कर चुके थे। लेकिन भागती हुई पाकिस्तानी सेना बौखलाहट में पुलों तथा रेल की पटरियों को ध्वस्त करती जा रही थी। अनेक बुद्धिजीवियों तथा सम्भ्रांत परिवारों को कत्ल किया जा रहा था।

स्थिति कुछ और ही थी। यह भी एक प्रकार की धमकी ही थी जिसे निक्सन ने भारत जैसे सुदृढ़ मनोबल वाले राष्ट्र को चुनौती के रूप में भेजा था। हम उस बेड़े से बिलकुल नहीं डरे और अडिग रहे। हां, यदि ढाका लेने में और ज्यादा देर हो जाती और पाक सैनिक आत्मसमर्पण न करते तो हो सकता था यह बेड़ा कुछ गुल खिलाता और हमारी सेनाओं का मनोबल गिराने का प्रयत्न करता। यह भी सम्भव था कि रूस का जहाजी बेड़ा (जैसे कि रिपोर्ट मिली थी कि वह भी जापान सागर से होता हुआ आ रहा है।) उससे टक्कर लेता। ऐसी स्थिति में युद्ध किस दिशा में मोड़ लेता यह कहना कठिन है। किन्तु हमारे सैन्य अधिकारियों की सूझ-बूझ ने ढाका पर शीघ्र ही विजय प्राप्त कर ली।

१२ दिसम्बर को छाताधारी ब्रिगेड भी ढाका के पास उतर चुकी थी। १३ दिसम्बर को जनरल मानेकशा ने पुनः चेतावनी दी। अन्ततः १४ दिसम्बर को बांगला देश में पाकिस्तान का सिविल शासन समाप्त हो गया। याहिया सरकार के असैनिक गवर्नर डॉ० ए० एम० मलिक, उनके मंत्रियों तथा वरिष्ट अधिकारियों ने अपने पदों से सामूहिक इस्तीफा दे दिया। उधर ढाका के लिए लड़ाई शुरू हो गई थी। पहली ही चपेट में शत्रु के ब्रिगेडियर सहित कई बड़े अफसर पकड़ लिए गए। १६ दिसम्बर को वहाँ के ऐतिहासिक रेसकोर्स मैदान में पाकिस्तानी ले० जनरल नियाजी ने भारत की पूर्वी कमान के मुख्य सेनापति ले० जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा को अन्य सैनिकों सहित आत्मसमर्पण कर दिया तथा विधिवत् दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए। इस प्रकार से बांगला देश के मुक्ति संघर्ष का समापन हो गया।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सुमुल हर्षध्वनि के बीच कहा कि बांगला देश की मुक्ति के साथ हमारा यह संकल्प पूरा हो गया जो हमने नर-संहार शुरू होने के ६ दिन बाद अर्थात् ३१ मार्च को एक प्रस्ताव में प्रकट किया था। उन्होंने एक तरफा युद्ध-विराम का प्रस्ताव भी रखा। जिसे याहिया को मजबूरन मानना पड़ा। १७ दिसम्बर की रात को १४ दिनों से चली आ रही लड़ाई बन्द होने के साथ ही जो तोपें गरजकर अग्निवर्षा कर रही थी, शांत हो गईं और बांगला देश में नवजात स्वाधीनता की खुशियां मनाई जाने लगीं।

बांगला देश की इस अनुपम विजय का विश्लेषण कुछ सैन्य विशेषज्ञों ने इस प्रकार किया है :

बांगला देश में संक्रिया पश्चिमी क्षेत्र से भिन्न थी। यहां यद्यपि भारतीय सेना विदेशी भूमि पर लड़ रही थी किन्तु वहां हमें उस देश की जनता तथा छापामार सैनिकों 'मुक्तिवाहिनी' का अतिरिक्त सहयोग प्राप्त था जिसने सोने में सुगंध का कार्य किया।

मुक्तिवाहिनी के सैनिकों को देश की आन्तरिक स्थिति का सही ज्ञान था। स्मरण रहे पाकिस्तान ने इस क्षेत्र में यत्र-तत्र सुरंगें बिछा रखीं थीं। अगर मुक्तिवाहिनी का सहयोग न मिला होता तो शायद १० दिन के अन्दर यह अभूतपूर्व विजय प्राप्त नहीं हो पाती।

वर्तमान युद्ध-कला के कुछ आलोचकों ने पाकिस्तानी गढ़ों कोछोड़करआगे बढ़नेकी नीति की आलोचनाकी है, विशेष रूप [illegible]जपुर और रंगपुर क्षेत्रों में। किन्तु भारतीय सेना का [illegible] था कम से कम समय में ढाका पहुंचना तथा वहां सैनिकों

से आत्मसमर्पण कराकर स्वतंत्र बांगला सरकार की स्थापना कराना। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु ही भारतीय सेना पाकिस्तानी गढ़ों को वहां की जनता तथा मुक्तिवाहिनी के ऊपर छोड़कर आगे बढ़ती गई। वास्तव में मुक्ति सेना हमारी सेना के आंख और कान थे।

उच्च प्रशिक्षण

युद्ध के अन्तिम विश्लेषण से यही निष्कर्ष निकलता है कि हमारी इस महान सफलता का श्रेय उच्च प्रशिक्षण को है। जटिल उपस्कर, पूर्ण आसूचना प्रणाली, उच्च सामरिक कौशल तथा राष्ट्र की इच्छा के अनुकूल कार्यवाही इसमें महान सहयोगी रहे।

इसमें समूचे राष्ट्र का सहयोग कुछ कम महत्वपूर्ण न था। साथ ही हमारे कमाण्डरों ने भी राजनीतिक नेताओं द्वारा निर्धारित सामरिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सही कदम उठाए तथा अधीन अफसरों और जवानों ने अपने प्रयासों से उसे सम्भव तथा सफल बनाया।

४. पश्चिमी मोर्चा

३ दिसम्बर १९७१ को पाकिस्तानी विमानों ने भार
के आधा दर्जन नगरों और हवाई अड्डों पर शाम को अचान
हवाई हमला कर दिया। उन्होंने एक साथ अमृतसर, पठानको
श्रीनगर और बाद में बाड़मेर पर भी बम-वर्षा की। हम
विमान भी क्यों चुप रहते! उन्होंने तुरन्त शत्रु का पीछा कि
और उसके आधा दर्जन विमानों को या तो मार गिराया
उन्हें गोली द्वारा छलनी-छलनी कर दिया। उसी दिन एय
मार्शल एम० एम० इंजीनियर ने बताया कि पाकिस्तान के हवा
हमलों से हमें खरोंच तक नहीं आई है, क्षति पहुंचने की बात त
दूर रही।

राष्ट्रपति वी० वी० गिरि ने खतरे को ध्यान में रखते हु
आपात-कालीन घोषणा कर दी। याहिया ने १० दिन पूर्व कह
था कि वह दस दिन के भीतर युद्ध छेड़ देगा। वास्तव में उसने
अपना वादा पूरा कर दिया और भारत को युद्ध में घसीटने के
लिए मजबूर कर दिया।

पश्चिमी सीमा पर जोर-शोर की लड़ाई शुरू हो गई।
आगरा और अम्बाला पर भी हवाई आक्रमण के समाचार मिले
यद्यपि हताहतों के बारे में कोई सूचना नहीं मिली।

पश्चिमी पाकिस्तान के बर्बर आक्रमण के उत्तर में भार-
तीय सेना ने ४ दिसम्बर को स्थल और आकाश में जिस तीव्रता
के साथ प्रहार किए, उसने शत्रु के एक दर्जन ठिकानों को काफी
हानि पहुंचाई तथा शत्रु के ३३ विमान नष्ट कर दिए। उधर और

हाजीपीर के बीच पहाड़ी पर हमारा कब्जा हो गया तथा भारतीय सेना पाकिस्तान की सीमा के ७ किलोमीटर अन्दर पहुच गई। वहां के ६ गांवों को अपने अधिकार में ले लिया गया।

५ दिसम्बर को हमारी सेना ने सिन्ध में ८ चौकियों और २० गांवों पर कब्जा करके पाक आक्रमणों को विफल कर दिया। अमृतसर क्षेत्र में ३ पाक चौकियां कब्जे में ले ली गईं।

भारतीय सेना पाक अधिकृत काश्मीर में भी आगे बढी जा रही थी। हमारी आमंर और इन्फेन्ट्री का सहयोग इस युद्ध में उत्कृष्ट रहा। पूरब से शकरगढ क्षेत्र में और उत्तर से जफरवाल क्षेत्र में प्रवेश करना कोई आसान काम नहीं था। हम १०-१२ दिन में इस क्षेत्र में सिर्फ १० से १६ किलोमीटर ही शत्रु क्षेत्र में घुस पाए।

६ दिसम्बर को भारतीय नौसैनिकों ने पाकिस्तान की सबसे बड़ी पनडुब्बी गाजी को डुबाकर नौसैन्य युद्ध में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। साथ ही अन्य चार जहाज और बहुत से स्टीमर, तोप नौकाए एवं मोटरबोटों को जलसमाधि लेनी पड़ी।

छम्ब में पाकिस्तान का गर्व-भंजन हो चुका था। लाहौर और मराला हमारी मंजिल बनती जा रही थी। भारतीय जवान तीन ओर से हैदराबाद सिंघ और उसके आगे कराची को लक्ष्य बनाकर आगे बढ़े। सामरिक दृष्टि से ७ दिसम्बर को हमें छम्ब का कुछ क्षेत्र खाली करना पड़ा था। एक सैनिक प्रवक्ता ने बताया कि दुश्मन को पकड़ने के लिए पैंतरेबाजी का सहारा लेना पड़ता है। आज के दिन भारत ने पाक के टैंकों का 'शतक' बनाकर ही चैन की सांस ली। बाड़मेर के f
सेना ने एक अन्य पाक-विमान मार गिराया

११ दिसम्बर को छम्ब में पाक सेना को मुनव्वर तवी के पार खदेड़ दिया गया। डेराबाबा नानक पुल पर तिरंगा लहराया गया। इन हमलों में भारतीय वायुसेना ने थल सेना की बड़ी मदद की। छाडबेट के १२० वर्ग मील पर कब्जा हो गया था और नया छोड़ पर युद्ध जारी था।

पूर्वी बंगाल पर विजय प्राप्त होते ही भारत ने युद्ध-विराम का प्रस्ताव रखा जिसे पराजित शत्रु शायद पहले से ही मानने को तैयार था। अन्ततः १४ दिन का युद्ध समाप्त हो गया।

राजस्थान क्षेत्र में हमारी आर्मर तथा इन्फेन्ट्री ने शत्रु क्षेत्र में काफी अन्दर तक प्रवेश किया था। यह सफलता एक ऐतिहासिक गाथा के रूपमें स्मरण की जाएगी। वास्तव में शत्रु-क्षेत्र में यदि संचार-व्यवस्था का अभाव हो वहां काफी अन्दर तक घुसकर प्रहार करना बड़ा महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। यह सामरिक नीति के निर्धारकों की कुशलता पर निर्भर होते हैं।

५· आंखों देखी घटनाएं

✿ ✿

हम यहां अपनी तीनों सेनाओं द्वारा प्रदर्शित शौर्य-पूर्ण घटनाओं के कुछ अविस्मरणीय अंश प्रस्तुत कर रहे हैं।

१· पैटन टैंकों का समाधि-स्थल—शकरगढ़

'पाकिस्तान का शकरगढ़ क्षेत्र पैटन टैंकों का नया समाधि-स्थल बनता जा रहा है।' यह सूचना एक सैनिक प्रेक्षक ने इस क्षेत्र के दौरे से वापस आने पर दी थी।

पैटन टैंक नष्ट करने वाले बहादुर जवान सुप्रसिद्ध ग्रेनेडियर रेजिमेंट के थे। १९६५ के युद्ध के समय मरणोपरान्त परमवीर चक्र पाने वाले सी० क्यू० एम० एच० अब्दुल हमीद भी इसी रेजिमेंट के सैनिक थे।

विगत युद्ध में टैंकों की सबसे भीषण लड़ाई मलाकपोरा गांव के आस-पास गन्ने के खेतों में ११ दिसम्बर को शाम और १२ दिसम्बर को प्रातःकाल हुई थी।

हमारी बख्तरबन्द सेना, पैदल सेना, तोपखाना और वायु-सेना की मिली-जुली कार्रवाई ने दुश्मन को हर कदम पर भारी नुकसान पहुंचाया। जहां हमारी वायुसेना पाकिस्तानी टैंकों का पता लगाती थी वहां हमारा तोपखाना और टैंकभेदी तोपें जमीन से उन पर गोले बरसाती थीं।

११ दिसम्बर को भारतीय सेना ने दुश्मन को शकरगढ़ और नरवोट की तरफ धकेलना आरम्भ कर दिया। दुश्मन भी पूरी तरह तैयार था। टैंकों की भयंकर लड़ाई शुरू हुई

शत्रु के टैंक २०० से ३०० गज की दूरी से गोले बरसा रहे थे, लेकिन उनकी निशानेबाजी कमजोर थी। उनके तीन टैंकों को नष्ट करके हमारे सैनिकों ने एक अधिकारी, दो जूनियर कमीशन प्राप्त अधिकारियों और दो अन्य सैनिकों को बन्दी बना लिया।

दूसरा टैंक-युद्ध १२ दिसम्बर को शुरू हुआ। इसमें दोनों तरफ के विमानों ने कार्रवाई की। दुश्मन ने कोबरा मिसाइल का भी इस्तेमाल किया। इस बार फिर हमने अपनी समन्वित और मिली-जुली सैनिक कार्रवाई से शत्रु पर विजय पाई। शत्रु के नष्ट हुए टैंक मैदान में पड़े याहिया खां को रो रहे थे।

इस युद्ध में हमारी विजय का श्रेय भारतीय वायुसेना को है। युद्ध शुरू होने के कुछ ही मिनटों बाद थल सेना के कमांडरों द्वारा हवाई मदद मांगी गई। हमारे जहाज तुरन्त ही आकाश में छा गए। उनके तीव्र प्रहार से शत्रु का मनोबल बहुत जल्दी ही गिर गया। किन्तु हमारी सेना का मनोबल उच्च से उच्चतर होता गया। हमारे युवा पायलटों ने अग्रिम क्षेत्र में विमानों की कार्रवाई का नियंत्रण किया तथा थल सेना के साथ मिलकर विमानों को शत्रु के ठिकानों पर प्रहार का निर्देश दिया।

थल-सेना के विभिन्न अंगों द्वारा सम्मिलित रूप से की गई कार्रवाई से काफी सफलता मिली। सेना के इंजीनियरों ने भारी गोलाबारी तथा हवाई हमले की परवाह नहीं की और रावी पर पुल बनाने के बाद ही वहां से हटे। साहस और श्रम का कैसा अनूठा योग हो गया था।

२. साहसी

हमारी थल सेना ने ४ दिसम्बर की रात को गदरा नगर पर कब्ज़ा कर लिया था। पाकिस्तानी सेना ने जो थोड़ा-बहुत मुका-बला किया, उसका सामना हमारी एक टुकड़ी ने बड़ी बहादुरी से किया। उसमें एक बहादुर राईफलमैन कौशलराम भी था।

पाकिस्तानियों ने खोखरापार के नजदीक गाजी कैम्प में अपनी चौकी पर सेना तैनात की थी। कई इंच मोटे कंकरीट के मजबूत बंकरों में बैठे हुए शत्रु ने हमारी बढ़ती हुई सेना पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी।

राइफलमैन कौशल राम ने, गोलियों की परवाह नहीं की तथा रेंगते हुए शत्रुओं के बंकरों की ओर बढ़ना शुरू किया। जैसे ही वह एक बंकर के नजदीक पहुंचा, शत्रु का गोला उसके दाहिने हाथ पर पड़ा जिससे वह हाथ उड़ गया। किन्तु कौशल राम ने उसकी तनिक भी परवाह नहीं की। उसने आगे बढ़ना जारी रखा। एक बंकर के अन्दर बैठे दो पाकिस्तानी सैनिकों को हथगोला फेंककर मार दिया। फिर वह वहां से उठा, अपने कटे हुए हाथ को दूसरे हाथ से दबाया और अपने मोर्चे पर लौट आया। घायल अवस्था में उसे अस्पताल पहुंचाया गया। गोरा-बादल और राणासांगा की परम्परा पुनः लौट आई।

३. बहादुर तोपची का हौसला

'मेरे घावों पर बस एक पट्टी बांध दो तथा दुश्मन के और अधिक विमानों को मार गिराने के लिए जाने दो' ये शब्द थे बहादुर तोपची नवरातो वावले के, जिन्होंने पाकिस्तान के दो

सैबर जैट विमानों को मार गिराया था।

८ दिसम्बर की सुबह। पश्चिमी पाकिस्तान में दुश्मन के विजित क्षेत्र में चावले अपनी विमानभेदी तोप पर तैनात थे। हमारे ट्रकों का एक काफिला सैनिकों के लिए सामान लेकर मोर्चे पर जा रहा था। रास्ते में बालू बहुत थी अतः वह उसमें फस गया। जब हमारे जवान उसे निकालने लगे तो अचानक ६ पाकिस्तानी सैबर जैट आ धमके। तोपची चावले ने बड़ी फुर्ती दिखाई और उनपर गोले दागने शुरू किए। इसी बीच उसकी छाती में एक गोली लगी जो कुछ तिरछी घुसी थी। शायद इसी-लिए शरीर में अधिक अन्दर तक नहीं जा पाई। चावले ने शीघ्र ही गोली निकाल ली। वह बिलकुल नहीं घबराया। हां, उसके पांव से बहुत खून बह रहा था। लेकिन उसके लिए अपना कर्तव्य पहले था। उसने फिर विमानभेदी तोप से गोले दागे जिससे दुश्मन के दो सैबर जैट विमान धराशायी हो गए। चावले को फिर एक गोली लगी, किन्तु उसने गोले दागना बन्द नहीं किया। अपने दो साथियों की हालत देखकर शेष चार सैबर विमान भाग निकले। हमारे काफिले को कोई नुकसान नहीं पहुंचा और वह अपने निर्धारित रास्ते पर फिर बढ़ने लगा। उल्लेख-नीय है तोपची चावले ने १९६५ के भारत-पाक युद्ध के समय भी पाकिस्तान के बहुत से विमानों को मार गिराया था। साहस की पराकाष्ठा सम्भवतः ऐसे ही अवसरों पर प्रदर्शित होती है।

४. सैनिक का वचन

खेमकरण के निकट का पाकिस्तानी गांव सेहजरा अब हमारे अधिकार में है, किन्तु इस गांव पर भारतीय झंडा लह-

राने वाला वीर योद्धा नायक सूबेदार गणेश हमारे बीच नहीं है। उस क्षेत्र का दौरा करके लौटे एक सैनिक प्रेक्षक का कहना था कि उसके अपूर्व साहस की गाथा दूसरे सैनिकों को सदैव प्रेरणा देती रहेगी।

६ दिसम्बर को नायक सूबेदार गणेश अपनी पलटन को सेहजरा के दक्षिण की ओर से ला रहा था। उसके सैनिकों को शत्रु के घेरे के चारों ओर फैली ६ मील लम्बी, ६ फुट गहरे पानी की एक सुरंग पार करनी थी। उधर शत्रु निरन्तर गोली चला रहा था। नायब सूबेदार गणेश ज्यों ही सुरंग से बाहर निकला, उसपर शत्रु की ओर से अचानक गोलियां बरसने लगीं। इससे उनकी पलटन के लिए आगे बढ़ना कठिन हो गया।

शत्रुओं की मीडियम मशीनगन को बन्द किए बिना आगे बढ़ना असम्भव होता है यह सोचकर नायब सूबेदार गणेश उस स्थान की तरफ बढ़ा जहां मीडियम मशीनगन से गोलियां दागी जा रही थीं। मशीनगन के निकट पहुंचते ही उसने अपनी स्टेनगन से गोली चलाना शुरू कर दिया। शत्रु की एक गोली उसकी छाती में लगी। किन्तु वह तब तक अपनी स्टेनगन चलाता रहा, जब तक उसमें गोलियां रहीं। उसकी सहायता के लिए नायक नरेन्द्र बहादुर राणा भी घायल हो गया। उसके अदम्य शौर्य से प्रेरित पलटन के अन्य सैनिक भी शत्रुओं पर टूट पड़े और उनसे मीडियम मशीनगन छीन ली।

नायब सूबेदार बुरी तरह जख्मी हो गए थे। अगले दिन उनका प्राणांत हो गया। अन्तिम सांस लेने से पूर्व उन्होंने अपने सैनिकों से कहा था, "मैंने अपना वादा पूरा कर दिया।"

५. विजयन्त – विजय का प्रतीक

भारत-निर्मित 'विजयन्त टैंक' पाकिस्तान के विरुद्ध रण-क्षेत्र में जहां कहीं भी गया शत्रु के लिए काल ही सिद्ध हुआ। इसने शत्रु के टैंकों और आर्मर का बहुसंख्या में विनाश किया।

विजय के प्रतीक इस टैंक ने हमारे थल-सैनिकों को शत्रु-सीमा में प्रविष्ट होने के प्रयास में महान सहयोग किया है।

सर्वत्र विजयी 'विजयन्त टैंक' मद्रास के निकट हैवी व्हीकल फैक्ट्री, आवड़ी में निर्मित होता है। इस फैक्ट्री से प्रथम विजयन्त टैंक दिसम्बर १९६५ में बनकर तैयार हुआ था।

विजयन्त टैंक उच्चकोटि के सामरिक गुणों और गतिशीलता से परिपूर्ण है। इसकी गति ४८ किलोमीटर प्रति घंटा तक हो सकती है।

यह टैंक १०५ एक-एक तोप से सज्जित है। इसका वजन करीब ३९ टन है और इसकी ऊंचाई ८ फुट ४ इंच है। इसके मूल्य के आधार पर इसमें ६० प्रतिशत सामग्री देशी होती है। हैवी व्हीकल फैक्टरी में सेल्फ प्रायेल्ड गन से सज्जित विजयन्त चासिस का भी उत्पादन किया गया है।

गत युद्ध में हमारे विजयन्त के सामने शत्रु को जगह-जगह घुटने टेकने पड़े थे। हमारे विजयन्त का नाम शत्रु की सेना के हौसले पस्त कर देता था। इस युद्ध में भी हमारे विजयन्त ने पैटन को खूब पीटा।

६. चुनौती स्वीकार की

युद्ध में कई मजेदार घटनाएं भी घटती हैं हालांकि उनका

मूल्य जान की बाजी लगाकर चुकाना होता है। ऐसी ही एक घटना है डेरा बाबा नानक क्षेत्र की। वहां के कमांडर ने घोषणा की कि जो सैनिक पाकिस्तानी इस्पात टावर को नष्ट करेगा उसे एक बोतल रम भेंट की जाएगी।

डेरा बाबा नानक पुल के पश्चिमी छोर पर स्थित दुश्मन की ११० फुट ऊंची इस्पात टावर कमांडर के लिए मुसीबत बनी हुई थी क्योंकि इससे हमारे सैनिक ठिकानों तथा हमारी सैनिक कार्रवाइयों पर नजर रखी जाती थी।

आखिर बख्तरबन्द दल रेजिमेंट के जवानों ने इस शर्त को स्वीकार किया। कुछ देर बाद उन्होंने कार्रवाई शुरु कर दी। एक ही गोला लगना था कि इस्पात टावर चूर-चूर हो गया। इसका श्रेय मिला बहादुर तोपची दफेदार कुजन नायर को।

एक सैनिक प्रेक्षक ने टावर का निरीक्षण करने के बाद बताया कि वहां पर उसे लोहे के कुछ टेढ़े-मेढ़े ढांचे तथा दो पाकिस्तानी सैनिकों की क्षत-विक्षत लाशें देखने को मिलीं।

कुजन नायर को क्षेत्रीय कमाडर ने रम की बोतल भेंट की तथा वरिष्ठ अधिकारियों ने उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की।

७. नेट का झपट्टा मिराज पर

भारत के बनाए हुए नेट ने, जो सैबर-मारक के नाम से मशहूर है, पश्चिमी अग्रिम क्षेत्र में स्थित एक हवाई अड्डे पर पाक वायुसेना के बहुत चर्चित विमान मिराज को मार गिराया जिसका श्रेय एक २८ वर्षीय फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट को प्राप्त हुआ।

विमान-चालक, अपनी टोली के प्रमुख के साथ अपने

नेट विमान में हवाई अड्डे के ऊपर उड़ रहा था तो उसे शत्रु के विमानों के आक्रमण का समाचार मिला। इन दोनों ने तुरन्त अपने विमान की गति तेज की तथा शत्रु की खोज में लग गए। कुछ ही समय में नेता ने दो मिराज विमानों को हवाई अड्डे की तरफ आने की सूचना दी। प्रमुख उन पर आक्रमण करने के लिए एकदम भागा और शत्रु के दोनों विमानों के ठीक पीछे हो गया। इतनी देर में इस युवा अधिकारी ने दो और मिराज विमानों को पहली जोड़ी के पीछे आते देखा। वह तीसरे विमान को मारने के लिए उसके पीछे भागा, परन्तु तभी उन्होंने देखा कि दूसरा मिराज उसके प्रमुख का पीछा कर रहा है।

यह युवा अधिकारी जमीन से ३०० फुट की ऊंचाई पर अकेला ही इन पांच मिराज विमानों के बीच था। यह मिराज नम्बर ३ के पीछे हो गया और ६०० गज की दूरी से इस पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। उन्होंने इसकी टंकी को खुलते देखा परन्तु विमान से किसी प्रकार का धुआं या आग निकलती नहीं दिखाई पड़ी। उन्होंने समझा कि विमान भागने का प्रयत्न कर रहा था और उनकी मार से बाहर निकल रहा था। उन्होंने यह भी सोचा था कि इस विमान ने ऐसा पिछले मिराज विमान के बचाने पर किया होगा जो कि उनकी सुरक्षा के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। उन्होंने एक ऐसा पलटा खाया कि उनके पीछे वाला मिराज उनके सामने आ गया और लगभग ६०० गज की दूरी से गोलियों की वर्षा शुरू कर दी। उनके देखते-देखते दुश्मन के विमान में आग लग गई और धुआं निकलने लगा। बाद में थल सेना के अधिकारियों को इस विमान के अवशेष पड़े मिले।

८. मारुत ने सैंबर जेट को मारा

भारत निर्मित एच एफ-२४ (मारुत) हवाई जहाज ने राजस्थान क्षेत्र में एक पाकिस्तानी सैंबर जेट विमान को मार गिराया। भारतीय मारुत जब गश्ती उड़ान पर था तो उसे पाकिस्तानी वायु सेना के चार सैंबर-विमान दिखाई दिए। भारतीय वायुसेना के विमान ने उन विमानों पर गोले दागे और उनमें से एक को मार गिराया। दो पाकिस्तानी विमान वापस भाग गए और तीसरे ने हमारे विमान का पीछा किया, परन्तु विमान के चालक ने जहाज को उससे बचाकर अपने हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतार लिया।

९. सतलुज के तट पर युद्ध

बृहस्पतिवार की शाम को जब आकाशवाणी ने बांगलादेश में पश्चिमी पाकिस्तान की सेना के आत्मसमर्पण के समाचार सुनाए, तो पश्चिमी क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना ने पंजाब की पूरी सीमा पर गोलाबारी और तीव्र कर दी। सेना के एक प्रेक्षक ने जो पाकिस्तान के जलालाबाद क्षेत्र के विपरीत स्थित हमारी एक अग्रिम चौकी पर उपस्थित था, बताया है कि शत्रु द्वारा जोरों से गोलाबारी चालू करने पर उस क्षेत्र को हमारे कमांडर ने भी पाकिस्तानी सैनिकों से भिड़न्त का फैसला कर लिया।

सीमा पार सतलुज के तट पर स्थित घट्टी-भरोना गांव में स्थापित पाक चौकियों से गोलाबारी की जा रही थी। शत्रु को विचलित करने के लिए सब से अच्छा तरीका यह था कि

चौकियों पर अधिकार कर लिया जाए ।

शत्रु ने इस क्षेत्र की किलाबन्दी कर रखी थी । वे लम्बी घासों के पीछे छुपे हुए थे । उनकी सेना मीडियम मशीनगनों, मार्टरों और तोपखानों से लैस थी ।

अभियान की योजना शीघ्र ही तैयार कर ली गई । रात के डेढ़ बजे हमारे जवानों ने शत्रु के ठिकानों को घेरकर आक्रमण कर दिया । चकित पाकिस्तानी सिपाही घबराहट में भागे और अपने पीछे मीडियम व लाइट मशीनगनें, स्वचालित राइफलें तथा काफी गोलियां छोड़ गए । बुधवार को प्रातः ३-३० बजे तक अभियान पूरा हो गया था । घट्टी-मरोला गांव पर अधिकार कर लिया गया ।

अभियान में सेकण्ड लेफ्टिनेन्ट पी० सी० भारद्वाज एक प्लाटून का नेतृत्व कर रहे थे । प्लाटून ने जब शत्रु पर एक बांध के निकट आक्रमण किया, तो पाकिस्तानियों ने लाइट व मीडियम मशीनगनों से गोलाबारी चालू की । सेकण्ड लेफ्टिनेन्ट भारद्वाज के माथे को छूती हुई दो गोलियां गुजरीं, किन्तु वे अविचलित रूप से आगे ही बढ़ते गए ।

१०. पठानकोट या वायुशक्ति कोट

सैन्य विशेषज्ञों का कहना था कि सीमा से सटे पठानकोट के हवाई अड्डे पर शत्रु के संभवतः सबसे अधिक आक्रमण हुए । रात्रि में शत्रु का दबाव बढ़ जाता था । चांद निकलते ही वह अपनी कार्यवाही आरम्भ कर देता और सुबह तक ये कार्यवाहियां चलती रहतीं । इतना सब कुछ होने पर भी हवाई-अड्डे को कोई क्षति नहीं पहुंची । स्टेशन कमांडर ने मुस्क-

राते हुए कहा, "उनके हवाई आक्रमण तो अब मजाक बनकर रह गए हैं।"

एक दिलचस्प कहानी सुनाते हुए स्टेशन कमांडर ने कहा, "शत्रु के विमान अपनी बत्तियां जलाए आते हैं, घबराते हुए गुजरते है, कुछ पटाखे छोड़ते हैं और अपनी जान बचाने के लिए भाग खड़े होते हैं। लगता है शत्रु केवल लाग-बुककी खाना पूरी करने का प्रयत्न कर रहा है।"

हमारे हवाबाज आत्मविश्वास और फुर्ती के साथ शत्रु के क्षेत्र में घुसकर सही स्थलों तक पहुंच जाते, दुश्मन के इलाकों में दूर तक पहुंच जाते तथा कई हवाई अड्डों और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों को बेकार कर लौट आते थे। विंग कमांडर सी० वी० पारकर की कहानी सुनाते हुए स्टेशन कमांडर ने गर्व से बताया कि पारकर शत्रु के क्षेत्र में १५० मील दूर तक गए तथा उन्होंने जमीन पर खड़े दो सैबर विमान और सामरिक महत्व के प्रतिष्ठान को तबाह कर दिया। लेकिन इससे पहले कि वे वहां से निकल सकते, दो सैबर विमानों ने उन पर हमला कर दिया और विंग कमांडर पारकर के विमान पर गोलाबारी की। पारकर ने शत्रु को चकमा देने का प्रयत्न किया, तब तक उनके विमान में शत्रु की गोली लग चुकी थी। उन्होंने विमान की ईंधन की टंकी खाली करके उसे अपने हवाई अड्डे पर उतार दिया। उन्होंने सफलतापूर्वक अपना मिशन पूरा किया तथा अपने विमान को भी पूरी तरह नष्ट होने से बचा लिया।

११. विंग कमांडर मंगत

विंग कमांडर एच० एस० मंगत ने विमान चलाने में अद्भुत साहस और कौशल दिखाया है। एक हवाई हमले के दौरान जब उनका विमान पश्चिमी पाकिस्तान के ऊपर उड़ रहा था, तो उनके विमान पर इतनी अधिक गोलियां लगी कि वह छलनी-छलनी हो गया। विमान-नियंत्रण के कई पुर्जे भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए थे। फिर भी विंग कमांडर मंगत ने साहस और धैर्य नहीं छोड़ा। उन्हें अपनी कार्य-कुशलता और सुखोई-७ (रूस में बने विमान) की उत्तमता पर पूर्ण विश्वास था। इसी विश्वास के आधार पर वे अपना विमान हमारे अग्रिम क्षेत्र में बने हवाई अड्डे पर उतारने में सफल हो गए।

बाद में उन्होंने रूसी कारीगरों की इतना बढ़िया विमान बनाने के लिए बहुत प्रशंसा की।

१२ भारतीय नैटों का कमाल

पकड़े गए पाकिस्तानी विमान चालकों में दो के नाम हैं: फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परवेज मेंहदी तथा फ्लाइंग आफिसर खलील अहमद।

भारतीय वायुसेना के जिन चालकों ने पाक विमानों को गिराया उनके नाम हैं: फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट आर० मैसी, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट एम० ऐ० गणपति तथा फ्लाइंग आफिसर डी० लज़ारस।

रक्षा-उत्पादन मंत्री श्री शुक्ल ने इस घटना के बारे में

विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि दोपहर बाद लगभग २-४६ बजे ४ पाकिस्तानी सैबर जेट विमान भारतीय सीमा की ओर बढ़ते हुए दिखाई दिए। उन्हें रोकने के लिए भारतीय वायुसेना के ४ नैट विमान भेजे गए। पाकिस्तानी विमान भारतीय सीमा के अन्दर लगभग ५ किलोमीटर तक घुस आए थे। २-५६ बजे पाकिस्तानी विमानों का पीछा कर उन्हें भगा दिया गया। इस हवाई लड़ाई में ४ में से ३ सैबर जेट मार गिराए गए।

पाकिस्तानी चालक हवाई छतरी से नीचे उतर गए। उनमें से २ हिरासत में ले लिए गए। भारतीय नैट विमानों को कोईक्षति नहीं पहुंची।

बाद को श्री शुक्ल ने जब यह घोषणा राज्य सभा में की तो उसका करतल ध्वनि सेस्वागत किया गया। सभी राजनीतिक दलों के सदस्यों ने भारतीय चालकों के इस साहसपूर्ण कार्य की सराहना की। कुछेक ने सरकार को भी बधाई दी।

भारतीय वायुसेना के नैट विमानो ने २२ नवम्बर दोपहर के बाद कलकत्ता से लगभग ३० मील उत्तर-पूर्व बोगरा के निकट पाकिस्तान के ३ सैबर जैट विमानों को मार गिराया। पाकिस्तानी चालक छतरी के सहारे उतरे। तीनों चालकों को गिरफ्तार कर लिया गया।

इन आक्रमणकारी विमानों को रोकने के लिए भेजे गए चारों नैट विमान सुरक्षित वापिस लौट आए।

१३. नौसेना को मौके की तलाश: पाकिस्तान का विनाश

इस वर्ष का नौसेना दिवस विशेष महत्व का रहा क्योंकि

उस दिन देश स्वाधीनता के उपरान्त प्रथम वार सागर तल पर युद्ध में व्यस्त था।

नौसेना के लिए यह अवसर तथा चुनौती दोनों ही थीं।

भारतीय नौसेना ने सफलतापूर्वक पाकिस्तानी नौसेना की चुनौती को स्वीकार किया तथा शत्रु की एक कुख्यात पनडुब्बी 'गाज़ी' और कुछ अन्य युद्धपोतों जिसमें एक दूसरी पनडुब्बी भी सम्मिलित थी, डुबो दिया। पश्चिमी पाकिस्तान के बन्दरगाहों परजाने वाले अनेकव्यापारिक पोतों को रोकदिया गया।

नौसेना किसी व्यक्तिगत साहस तथा शूरवीरता के कारनामों का वर्णन नहीं करती। उसके योद्धा, विमान, पोत तथा चालक स्वतः प्रमाण होते हैं।

ऊपर : युद्ध-स्थल में जूझते हमारे बहादुर जवान।
नीचे : डेराबाबा नामक पुल पर ध्वजारोहण।

२२ नवम्बर, १९७१ को तीन पाकिस्तानी सेबर जेटों को गिरानेवाले हमारे शूरवीर वायुयान चालक (बाएं से दाएं) फ्ला. लै. आर. मैसी, फ्ला. लै. एम. ए. गणपति तथा फ्लाइंग अफसर डी. लाजरस

रक्षामन्त्री श्री जगजीवनराम युद्ध-क्षेत्र में ।
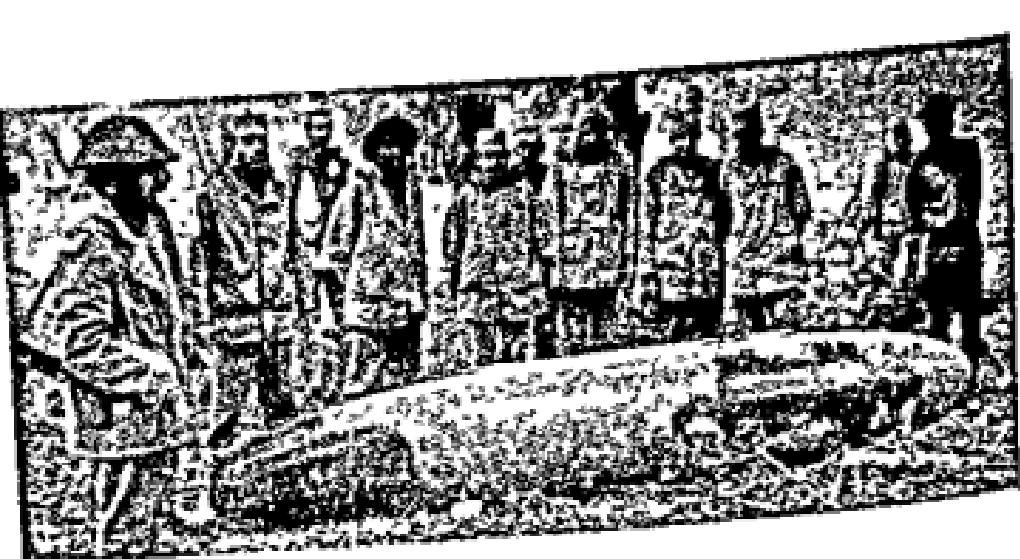
जय बांगला ! जय हिन्द !

भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी बांगला देश के राष्ट्रपति (अब प्रधानमंत्री) शेख मुजीबुर्रहमान से वार्ता करती हुई।

ले. जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा

ले. जनरल जी जी बी

हमारे जनरल

ले० जनरल के पी. कैण्डेथ

मेजर जनरल जे

ले. मेजर जनरल सगतसिंह

एयर मार्शल एम. एम इंजीनियर

हमारे सेनापति

एयर मार्शल एच. सी. दीवान
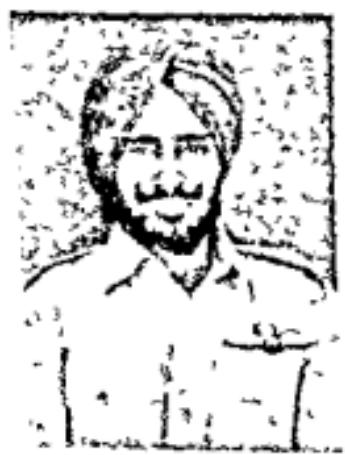
फ्ला. आफीसर निर्मल जीतसिंह शेखो
(मरणोपरात)

मेजर होशियारसिंह

हमारे परमवीर
(परमवीर चक्र विजेता)

सेकिंड लेफ्टि. अरुण क्षेत्रपाल
(मरणोपरात)

लेसनायक एल्बर्ट एक्का
(मरणोपरात)

महावीर चक्र विजेता

ऊपर (बाएं से दाए)ले. कर्नल पी.के. खन्ना, मेजर ए.एम गहलोत, मेजर एस मनकोटिया, लासनायक आर यू पाडे, विग कमांडर सी. वी. पारस्क लो ए एन भारद्वाज, ले. क गुप्ता, ले कमांडर नरोहा।

MAHAVIR CHAKRA WINNERS.

महावीर चक्र विजेता

ऊपर : (अंग्रेजी में)
नीचे : ब्रिगेडियर के. एल. गोरीनंदर, ले. कर्नल कश्मीरीलाल रतन,
ले. कर्नल रतननाथ शर्मा

महावीर चक्र विजेता

(बाए से दाएं)

प्रथम पंक्ति : ब्रि. एम. एल. विग, ले. कर्नल एच. सी. पाठक, ले. कर्नल के. एस. पन

द्वितीय पंक्ति : मेजर धर्मवीरसिंह, ले. नायक दृगपालसिंह, (मरणोपरांत) केप्टन एस

प्रकाश, ए वी. एस. एम. ।

महावीर चक्र विजेता

(बाएं से दाएं)

प्रथम पंक्ति ब्रि सतसिंह, ब्रि. हरदेवसिंह क्लेर, ब्रि ए. एच. इ. मिचीगा

द्वितीय पंक्ति : ले. कर्नल बी. पी. घई (मरणोपरांत) के० एस. एस. बा

(मरणोपरान्त) ग्रु. के. चन्दनसिंह ।

हमारे परम विशिष्ठ
सेवा मेडल विजेता

ढाका के पतन के बाद ले. जनरल नियाज़ी आत्मसमर्पण-
सम्बन्धी पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए।
बाईं ओर भारतीय थलसेना के पूर्वी कमान
के सेनापति ले. जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा।
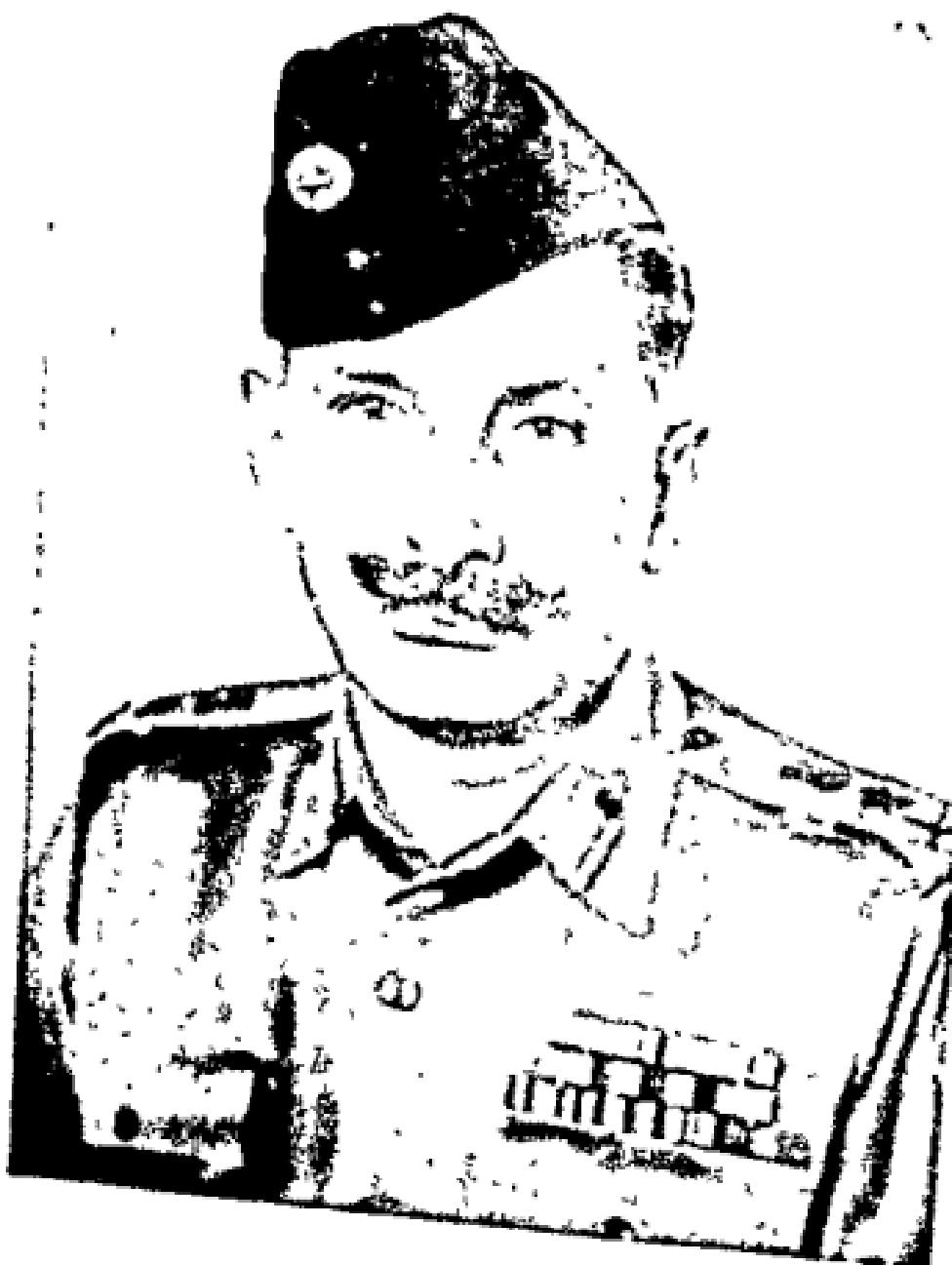
६. तोपें बोलती हैं

थल-युद्ध में तोपखाने का स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है
तोपखाने के दो प्रमुख अंग माने जाते हैं—तोप और तोपची
यद्यपि सेना में प्रत्येक सैनिक का अपना महत्वपूर्ण स्थान हो
है तथापि तोपखाने को सैनिक 'युद्ध-क्षेत्र के राजा' की संज्ञा
विभूषित किया जाता है। तोप उसका सबसे अमूल्य धन हो
है। जिसकी रक्षा के लिए वह अपने प्राण तक न्योछावर
देता है। वास्तव में तोपचियों की सदा से परम्परा रही
कि वे अपनी तोपों को क्रियाशील बनाए रखें तथा किसी
स्थिति में उन्हे न गंवाए। उनके लिए यदि कोई दुखद घटन
तो वह है उनकी तोपों का नष्ट-भ्रष्ट हो जाना।

तेरहवीं शताब्दी में बारूद की अनायास उपलब्धि से
की कल्पना साकार हो उठी और १४५३ तक उसका यु
प्रयोग किया जाने लगा। मोहम्मद द्वितीय ने कुस्तुन्तुनिया
सुरक्षा के लिए जिन तोपों का इस्तेमाल किया था वे २०
वजन की थीं, २०० व्यक्ति उनको चलाते तथा लगभग
बैल उन्हे खींचते थे।

शनैः-शनैः विभिन्न क्षमताओं की तोपों का निर्माण
गया। सामरिक नीति तथा किलेबन्दी में परिवर्तन आया
समय कल वरिन्स २० पौण्ड वजन की होती थी तो सेम
पौण्ड की और डबल कैनन ७० पौण्डवाली तोप थी। तोप
एक पूरा संगठन बन गया था। गुस्तावेज एडल्फस चलते-

विभिन्न प्रकार की आक्रामक संक्रियाओं में किया था।

नेपोलियन : एक बड़ा तोपची

पहले बैलगाड़ियों के द्वारा तोपों को युद्धस्थल में ले जाया जाता था किन्तु अठारवीं शताब्दी तक तोपगाड़ी का निर्माण हो गया था। नेपोलियन विश्व का सर्वश्रेष्ठ तोपची माना जाता था क्योंकि वह आज के सेना-प्रमुखों की भांति किसी कार्यालय में बैठकर युद्ध संचालन नहीं करता था, बल्कि स्वयं युद्ध के मैदान में अपनी सेना के साथ रहता था। यही कारण था कि उसने अपने प्रिय युद्ध-उपकरण तोप को बड़ा विकसित किया।

१७०४ में ब्लेनहम युद्ध में मालब्रो ने तोपखाने का जमकर उपयोग किया था। उस समय बारूद तो प्रयुक्त होता ही था किन्तु उसकी कमी हो जाने पर पत्थर तथा लोहे के टुकड़ों का भी प्रयोग किया जाता था। लेकिन यह प्रणाली काफी श्रम-साध्य थी। तदुपरान्त केस शाट का आविष्कार हुआ। यह कई मिसाइलों को मिलाकर बनाया गया था। पन्द्रहवीं शताब्दी में कारतूस का निर्माण हो जाने से तोपों की प्रहार शक्ति कई गुना बढ़ गई। धीरे-धीरे शार्पनैल, बैनेस्टिक, टाइम फ्यूज आदि का प्रयोग होने लगा। प्रथम विश्व युद्ध में धूम, ज्वलनशील तथा रासायनिक गोलों का प्रयोग हुआ था। द्वितीय विश्व-युद्ध में बी० टी० फ्यूज़ जैसे महारक गोलों का प्रयोग किया गया।

तोप या मौत

...।९८८ में शतघ्नी शस्त्र के प्रयोग का वर्णन है। ...वह भी एक प्रकार की तोप ही होती थी। चीनी

और मंगोलों ने भी तोप को थोड़ा-बहुत विकसित किया। किन्तु पूर्व में जन्मा यह शस्त्र और आगे न बढ़ सका। बाद में तुर्की और मुगलों ने इसमें बड़ी निपुणता हासिल की। बाबर ने अपनी तोपों के कमाल से ही भारत पर विजय प्राप्त की थी। अकबर तोपखाने को अपने साम्राज्य की 'ताला-कुंजी' कहा करता था। दक्षिण भारत में भी इसकी लोकप्रियता बढ़ती गई। रणजीत सिंह तथा टीपू सुल्तान ने इसका खूब प्रयोग किया था। शत्रु-सेना को यदि यह पता चल जाता कि विपक्ष तोपों से लैस है तो उसका मनोबल पहले ही आधा हो जाता। उस समय तोप को मौत का असली रूप समझा जाता। था क्योंकि उसको नष्ट करने वाला हथियार नहीं बन सका था।

ब्रिटिश शासन में भारत में कई प्रकार की तोपें बनने लगी थी। डायल साइट, डाइरेक्टर्स, रेंज फाइण्डर तथा थियोलराइट जैसे उपकरणों का आविष्कार हुआ, फलस्वरूप तोपों की परास-शक्ति बढ़ती गई। सिगनल उपकरणों के बनने से दुश्मन के दांत खट्टे करने में आसानी हो गई।

तोपों के वाहक

आज तोपों को युद्धभूमि में ले जाने के लिए अश्व-शक्ति अथवा मानव-शक्ति की आवश्यकता नहीं, अब तो बड़े-बड़े टेंक बन गए हैं जिनमें बड़ी कुशलता के साथ तोपें फिट की जाती हैं। कलों और पुर्जों के द्वारा इन तोपों को किसी भी दिशा में घुमाया जा सकता है। हर्ष का विषय है कि भारत को इनके लिए पाकिस्तान की तरह विदेशों का मुंह नहीं देखना

पड़ा। टैंकों तथा तोपों के निर्माण में हम आत्मनिर्भर हैं। मद्रास के निकट आवड़ी का टैंक निर्माण केन्द्र सम्भवतः विश्व का एक मात्र ऐसा टैंक कारखाना है जिसमें सभी कल पुर्जे एक ही स्थान पर बनते हैं जब कि अन्य देशों में इस प्रकार को तकनीक का विकेन्द्रीकरण किया रहता है। १९६२ से अब तक हमारे देश में ७ नये आधुनिक कारखानों की स्थापना की जा चुकी है। अम्बाझारी और चांदा में भी काम शुरू हो गया है। एक नए मोटर गाड़ी कारखाने में उत्पादन शुरू हो गया है जिसमें सेना के लिए ट्रक तथा जीपें पहले से दुगुनी संख्या में बनने लगी हैं। उल्लेखनीय है कि हमारा विजयन्त अमेरिका के गौरव 'पैटन' को कई बार पीट चुका है।

व्यवस्थाएं तथा बाधाएं

आर्टिलरी इन्स्टीट्यूट कमेटी रेजीमेंट की परम्पराओं की रक्षा तथा कर्तव्य-पालन में सहयोग देती है। समिति का अध्यक्ष वरिष्ठ कर्नल कमाण्डेण्ट होता है। आर्टिलरी एसोसिएशन तथा आर्टिलरी बेनीवोलेन्ट एसोसिएशन अफसरों तथा जवानों के कल्याण-कार्य में योगदान करती है। लेकिन तोपखाने के विकास में अभी भी कई प्रकार की बाधाएं हैं जिन्हें दूर कर के हमारी सेना का यह प्रमुख अग कई गुना अधिक शक्तिशाली बन सकता है। तोपखाने के निदेशक मेजर जनरल टी०एन०आर० ... के अनुसार ये बाधाएं इस प्रकार हैं :

१. तात्कालिक आवश्यकता-पूर्ति के लिए भावी विकास का ह्रास। इसका कारण मूलभूत अनुसंधान तथा विकास की ... उपेक्षित रही।

२. राजनीतिक तथा सैनिक नेताओं ने तोपखाने की महत्ता को समुचित स्थान देने में उदासीनता बरती।

३. शायद अधिक व्यय भार के कारण भी तोपखाना उपेक्षित रहा।

४. धातु-विज्ञान तथा रासायनिक इंजीनियरिंग में पिछड़ापन और उचित औद्योगिक आधार का अभाव भी एक कारण रहा।

क्षमता-वृद्धि की आवश्यकता

इसमें कोई शक नहीं कि हाल ही में हमारे तोपचियों ने शत्रु की थल सेना को ही पराजित नहीं किया बल्कि उनके विशालकाय मिराजों तथा सैबर जैटों तक को धराशायी कर दिया। हमारी विमानभेदी तोपों ने दुश्मन की सभी चालें विफल कर दी। उसे जहां हमारी वायुसेना के नन्हें नेट का डर बना रहता, वहां विमानभेदी तोपों का भी पूरा खतरा बना रहता। हमारे पास तटीय तथा टैंकभेदी तोपों का भी अभाव नहीं है। तोपखाने में सेल्फ प्रापल्ड, एयर आब्जर्वेशन पोस्ट ा जवाबी बमबारी के विकास से तोपचियों को अधिक जटिल रकरणों का प्रयोग करना पड़ा। फलतः चालक को इलेक्ट्रा-ःस तथा सम्बन्धित विषयों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक । गया।

स्वचालित तोपखाना अब कम्प्यूटर द्वारा संचालित होने ा है। दूसरे बड़े राष्ट्रों में होड़ लगी है कि किस प्रकार से नका तोपची एक स्थान पर बैठे-बैठे अपनी तोप को आदेश दे के। उसे अब युद्ध-भूमि में बहुत आगे जाने की जरूरत नहीं

७. पहाड़ों पर लड़ाई

❀ ❀

भारत का स्वर्ग कश्मीर है तो योरोप का स्वीटज़रलैंड। दोनों ही पर्वतीय प्रदेश हैं। प्रकृति ने सौन्दर्य के विशाल भंडार जो यहां खोल रखे हैं। प्रकृति और प्रेम का प्यासा मानव यदि भटकता हुआ इन रम्य स्थलियों में पहुंच जाता है तो उसे अनायास स्वर्गीय आनन्द की प्रतीति हो उठती है, यहां की घाटियां सोना उगलती हैं और उस सोने में छिपे होते हैं कुछ हीरे-जवाहर—यहां के नर-नारी जो सचमुच सौन्दर्य की खान है। लेकिन इस खान की रक्षा के लिए कितने धन-जन की आवश्यकता होती है, किस प्रकार की रक्षा पद्धतियों की अपेक्षा की जाती है, हम प्रस्तुत अध्याय में विचार करेंगे।

हिमालय को कभी देश का प्रहरी माना जाता था। कोई शत्रु-देश उसे पार करके आक्रमण करेगा, ऐसा सोचना निरुद्देश्य समझा जाता था। १९६२ तक हमारी यही धारणा बनी रही। चीन एक लम्बे अरसे से तैयारी कर रहा था। उसके सैनिक पर्वतीय युद्ध का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे। हम सोये हुए थे परिणाम वही हुआ जो होना था। हमें भारी क्षति उठानी पड़ी। न केवल नये उपकरणों का अभाव बल्कि पर्वतीय युद्ध की अज्ञानता भी इसका मूल कारण रही।

दो सौ वर्ष हो गए किन्तु स्वीटजरलैंड का सैनिक एक क्षण को नहीं सोया। वह अनवरत अपनी पर्वतीय सीमा की रक्षा में तत्पर रहा। आज वहां की रक्षा-व्यवस्था इतनी उत्तम एवं सशक्त है कि शत्रु जल्दी से आंख उठाकर भी नहीं देख सकता,

छिपावस्थल होते हैं। प्रत्येक देश अपने सैनिकों से यह आशा करता है कि वे प्रतिक्रियावादियों अथवा घुसपैठियों पर नजर रखें तथा समय मिलने पर उचित दण्ड भी दें। पर्वतों में लड़ने के लिए वहां के व्यक्ति ही अधिक उपयुक्त होते हैं। वे लोग वैसे भी स्वभावतः हृष्ट-पुष्ट तथा स्वतंत्रता प्रेमी होते हैं अतः उन पर ही पर्वतीय क्षेत्र की सुरक्षा का कार्यभार सौंपा जाता है। फ्रांस को अल्जीरिया की एटलस पर्वत माला में इसका अनुभव हुआ। युगोस्लाविया में तो टीटो ने गुरिल्ला युद्ध की तैयारी जगलों से भरे पर्वतों में ही की थी। ब्रिटेन ने अदन में १९६४ में रदफन के खिलाफ कुछ बड़ी मुहिम छेड़ी थी। संभवतः पहली बार यहां के पर्वतों में हेलिकोप्टरों का खुलकर प्रयोग हुआ था। अल्जीरिया मे फ्रांस ने अपने हेलिकोप्टरों का उपयोग किया था किन्तु अदन की तुलना में वह बहुत थोड़ा था।

पर्वतीय युद्धों के प्रशिक्षण के लिए भारत में कई रेजिमेंट तथा बटालियनें खड़ी की गई हैं। उदाहरणार्थ कुमायूं रेजिमेन्ट, डोगरा, आसाम आदि। हाल ही में नागा रेजिमेन्ट की भी स्थापना हो चुकी है जिसमें अधिकांश नागा तथा कबायली सैनिक हैं। वस्तुतः यदि एक मद्रासी या बंगाली को हिमालय की ठिठुरती हवा तथा बर्फीली दुर्गम घाटियों में लड़ने को भेजा जाए तो वह इतना सफल नहीं हो सकता जितना गढ़वाल, नागालैंड या कश्मीर का जवान। यही कारण है कि मैदान का सैनिक हिम-मंडित हिमालय के वातावरण के समायोजन नहीं कर पाता। उसे या तो कोई व्याधि घेर लेती है अथवा उसे अन्य स्थान पर स्थानान्तरित होना पड़ता है। यद्यपि आज वहां सभी प्रदेश का सैनिक कार्यशील है।

पर्वतीय युद्ध यदि बड़े पैमाने पर होते हैं तो उनके लिए तकनीकी तथा उपकरण साधन भी उसी पैमाने पर होने चाहिए। वास्तव में तकनीकी प्रगति से ही पर्वतीय युद्ध के रूप में परिवर्तन होता है। अतः जिस देश में इस प्रकार का अनुसंधान जारी है वहां नये ढंग के अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण होता रहता है। वहां का सैनिक आधुनिकतम वस्तुओं से सामान्वित होता है। हालांकि पर्वतीय युद्ध की न तो मूलभूत विशेषताएं ही बदलती हैं और न ही उनके सिद्धांतों में कोई खास अन्तर आता है किन्तु वैज्ञानिक प्रगति से उनके तरीकों में परिवर्तन अवश्य होता है। हम यहां विभिन्न सैन्य विशेषज्ञों की मान्यताओं के आधार पर उक्त युद्ध की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करेंगे। वस्तुतः पर्वत वनस्पति रहित हो सकते हैं या सूखे चट्टानी। तेज धूप से तपे हो सकते हैं अथवा हिम से आच्छादित —सभी सैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं।

१. पर्वतीय पथ तंग तथा चढ़ाई वाले होते हैं। सैनिकों के लिए इन्हीं पथों से आगे बढ़ना होता है अतः ये पूर्व निश्चित होते हैं। मैदानों की तरह किसी भी दिशा में जाने की स्वतंत्रता यहां नहीं होती।
२. इन पथों को छोड़कर अन्य किसी पगडंडी पर चलना तो बड़ा ही कठिन होता है। सैनिक वैसे ही काफी सामान अपनी पीठ पर लादे रहता है इसलिए इस प्रकार के रास्तों पर चलना संभव नहीं हो पाता। यदि वह कोई छोटा रास्ता ढूंढता भी है तो उस पर उसकी गति अत्यन्त धीमी रहती है।
३. रक्षात्मक युद्ध के लिए [illegible] अच्छे माने जाते

हैं। यही कारण है छापामार तथा गुरिल्ला लड़ाइयां पर्वतों के अनुकूल होती हैं।

४. पर्वतों में छिपने के लिए अधिक स्थल होते हैं तथा सैनिक बड़ी सरलता से अपने दुश्मन की नजर बचाकर उस पर प्रत्याक्रमण कर सकता है।

५. कमांड आवजर्वेशन इस युद्ध कला में पर्याप्त सफल रहता है किन्तु यह प्रायः सीमित रहता है।

६. रक्षात्मक युद्ध में टोह व्यवस्था और अच्छी तैयारी का सर्वाधिक लाभ पर्वतीय युद्धों में प्राप्त किया जा सकता है। मैदानों में इतने लाभ की गुंजाइश नहीं रहती।

७. पर्वतों में बड़े विमानों का उतरना संभव नहीं होता, अतः हेलिकोप्टरों तथा अन्य छोटे विमानों का सहारा लेना पड़ता है। धीमी गति से चलने वाले विमान अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं।

८. शत्रु की चेष्टाएं देखने, लड़ाई के समय स्थल का चयन करने तथा यथासंभव छिपे रहने की संभावनाएं अधिक बढ़ जाती हैं।

पर्वतों में आसूचना-स्रोत जितने अधिक उन्नत होंगे उतनी ही अच्छी तैयारी की जा सकती है। पुराने जमाने में आसूचना केवल दो स्रोतों पर निर्भर थी। मनुष्य की आंख तथा शत्रु पक्ष को छोड़कर आने वाला व्यक्ति। दोनों ही स्रोत अधूरे थे। आंख बेचारी आखिर कितना देख सकती थी। इसी प्रकार शत्रु के यहां से भेदिए का सही-सलामत आना भी निश्चित नहीं होता था क्योंकि कई बार ये बेचारे शत्रु के शिकार बन जाते थे। वैसे भी उन्हें प्रशिक्षण देने में बरसों लग जाते थे।

कालान्तर में नये-नये यंत्र बने। दूरबीनों का उपयोग होने लगा। विमानों को काम में लाया जाने लगा। दूर से ही शत्रु का पता लगा लिया जाता। किन्तु रात के अंधेरे में कुछ नज़र न आता। फलतः, वायरलैस, राडार, उष्णता-सूचक यंत्र, कैमरा आदि नवीन यंत्रों का आविष्कार हुआ। आसूचना के स्रोत बढ़ गए। शत्रु का विमान अभी मीलों दूर है किन्तु हमारा राडार तत्काल अध्ययन कर लेता है और आसूचित कर देता है। वायरलैस से एक क्षण में ही हम अपनी जगह बैठे-बैठे संदेश प्राप्त कर लेते हैं।

रफ़दन संक्रिया के विवरण में एक स्थान पर लिखा है :

"सर्वप्रथम एक विशेष प्रकार की वायु सेवा ने पर्वतों में अपने छोटे-छोटे गश्ती दल भेजे। ये रात्रि में शत्रु की ओर जाते, आतंक पैदा करते तथा भयभीत करके लौट आते। सभी कमांड, दस्तों तथा बटालियनों ने उनका अनुकरण किया। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि स्पेशल एयर सर्विस स्क्वेड्रन जैसी कमजोर यूनिट को, यदि समुचित रूप में प्रयुक्त किया जाए तो उसमे भी उपयोगी आसूचना उपलब्ध की जा सकती है।"

हेलिकोप्टर पर्वतीय युद्ध के लिए वरदान होते हैं। इन्हीं के बल पर पर्वतीय सैनिक आगे बढ़ता है। हेलिकोप्टर न केवल अन्य सैनिकों की कुमुक सहायता के लिए लाता है बल्कि उनके खाने-पीने के लिए रसद भी ढोता है, अस्त्र-शस्त्र पहुंचाता है, तथा आवश्यकता पड़ने पर शत्रु पर आक्रमण भी करता है। आजकल युद्ध केवल थल अथवा जल तक ही सीमित नहीं रहते। आज तो वायु सैनिक का योगदान सर्वाधिक होने लगा है। वह अपने बमवर्षक को आकाश में लेकर उड़ता है। शत्रु के ठिकाने पर

आंख बचाकर पहुंच जाता है और पलक झपकते ही बम गिरा कर वापिस लौट आता है। शत्रु ढेर हो जाता है और विजयी पक्ष की थल सेना का मस्तक गर्व से ऊंचा उठ जाता है। वस्तुतः वायु सेना यदि पर्वतीय युद्ध में सहयोग न दे तो गुरिल्ला युद्ध करने वाला शत्रु आगे बढ़ता जाता है तथा भारी हानि पहुंचाता है।

आजकल प्रायः सभी देश हवाई-नियंत्रण के लिए सगठन-दल की व्यवस्था करते हैं। यह एक जटिल समस्या है किन्तु दिशा निर्देश के लिए इसका सगठन होना अत्यन्त आवश्यक है। वैज्ञानिकों का मत है कि भविष्य में जो भी पर्वतीय युद्ध होंगे उनके लिए तीन प्रकार के यानों का प्रयोग किया जाएगा। परिवहन, बम-वर्षक तथा स्वयं चालित अनुधावक। उनका नियंत्रण तथा संचालन खाकी वर्दी वाले नहीं बल्कि नीली वर्दी वाले वायु-सैनिक करेंगे। हवाई पट्टियां होंगी। हवाई कमाड होंगी और तब पर्वतीय सैनिक भी शायद वायु सैनिक ही होंगे।

चीनी आक्रमण से भारत में अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं पर ध्यान दिया गया है। पर्याप्त सामग्री उपकरण तथा तकनीकी कौशल सभी को समान रूप से समझने का प्रयत्न किया जा रहा है। रक्षा मंत्रालय का उत्पादन विभाग नवीनतम अस्त्र-शस्त्रों के विकास का प्रयत्न कर रहा है। पर्वतों में काम आने वाले यंत्र बनाए गए हैं। कभी बर्फीली हवा से बचने के लिए विदेश से चश्मों, बिस्तरों तथा वस्त्रों का आयात किया जाता था, लेकिन आज हम अपने देश में ही इन वस्तुओं का निर्माण करने लगे हैं।

मोन्टाई विर्टेल का कहना है कि विनाशकारी शक्ति अथवा राजनैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु जो सेनाएं भेजी जाती हैं उनमें यदि तोपों की संख्या अल्प अथवा अपूर्ण मात्रा में हो तो निश्चय ही यह उनके विनाश का कारण होता है।

वस्तुतः हमारे तोपचियों ने इन दोनों युद्धों में बड़ी बहादुरी के साथ अपना कार्य पूरा किया। उसका प्रमाण हमें कुछ कमांडरों से प्राप्त संसूचनाओं से मिलता

१. पूर्वी क्षेत्र के एक जी० ओ० सी० ने लिखा है मुझे यह सूचित करते हुए परम हर्ष हो रहा है कि हमारे तोपचियों ने बहुत ही योग्यता से अपना कर्तव्य निभाया है और हमारी सफलता में इनका सर्वाधिक योगदान है।

२ पश्चिमी क्षेत्र के एक अन्य जी० ओ० सी० ने लिखा है 'इसमें कोई सन्देह नहीं कि युद्ध में विजय का वास्तविक श्रेय आर्टिलरी को है। तोपों के सहयोग की सभी को अपेक्षा थी और शत्रु भी इन्हें नष्ट करने का अनथक प्रयास कर रहा था किन्तु फायर की मांग पर हमें कभी निराश नहीं होना पड़ा। वह तत्काल तथा प्रभावकारी उपलब्ध हुई। सक्षेप में सफलता का श्रेय आर्टिलरी ब्रिगेड को है जिसके किसी भी संभावित पराजय को विजय में परिणित कर दिखाया।"

शत्रु के हमारे बारे में क्या विचार थे? युद्ध-विराम से पांच घंटे पूर्व छम्ब क्षेत्र के एक पाकिस्तानी कमांडर ने हमारे ब्रिगेड के कमांडर को जो सन्देश भेजा था, उसने कहा था, "अल्लाह के वास्ते गोलाबारी बन्द कर दीजिए। मैं आपका

जरूर हूं, लेकिन अभी युद्ध-विराम होने में कुछ ही घंटे
है। आप अपने तोपचियों से कहे कि वे हम पर रहम करें।
हमें काफी सजा दे दी है। कृपया उन्हें आदेश दें कि वे
रे हाल पर छोड़ दें।"

ारतीय तोपचियों में जनरल पी० पी० कुमारमंगलम,
न्ट जनरल पी० एस० ज्ञानी, लेफ्टीनेन्ट जनरल के०
डेथ, पी० वी० एस० एम० लेफ्टीनेन्ट जनरल जे० के०
या लेफ्टीनेन्ट जनरल सरताज सिंह के नाम विशेष रूप
खनीय हैं। उन्होंने सेना में उच्च स्थान प्राप्त किया
ं निसन्देह अपनी तोपों और उनके तोपचियों पर भारी
।

युद्ध में हमारे सैनिकों ने शत्रु को कारगिल की
से १४००० फुट की चोटियों से जिस रणकौशल के
ड़ा वह पर्वतीय युद्ध में सदैव स्मरण किया जाएगा।
ना पड़ेगा कि पहाड़ी क्षेत्र में युद्ध के लिए जिस प्रकार
प्रशिक्षण की आवश्यकता है उसके लिए सभी सैनिक
उपयुक्त नही होते किन्तु हमारी सेना की यह विशेपता
उन्होंने इतना कठोर तथा उच्च प्रशिक्षण प्राप्त किया
ी इस पहाड़ी क्षेत्र से पीछे हटना पड़ा। हमारे सैनिकों
तथा लेह मार्ग की सचार व्यवस्था को शत्रु के खतरे
रखने के लिए इस क्षेत्र में शत्रु की करीब २० चौकियों
किए रखा।

प्रकार का साहस हमारे पर्वतीय युद्ध के बहादुर
अन्यत्र भी प्रदर्शित किया। उदाहरणार्थ टियवाल,
टी, उड़ी तथा पुंछ में शत्रु को काफी चौकियां खाली

करनी पड़ीं। घुसपैठ के प्रयास में भी उसे भारी हानि उठानी पड़ी। इन संक्रियाओं में हमारे सेना-नायकों का उद्देश्य एक-मात्र यही था कि शत्रु-शक्ति को विभिन्न क्षेत्रों में विभक्त रखा जाए तथा उसके संसाधनों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जाए। हमारी अनूठी विजय इस बात की साक्षी है कि हमें इस प्रकार के युद्ध में भी अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई।

८. जवान—हमारे राष्ट्र का गौरव

❀ ❀
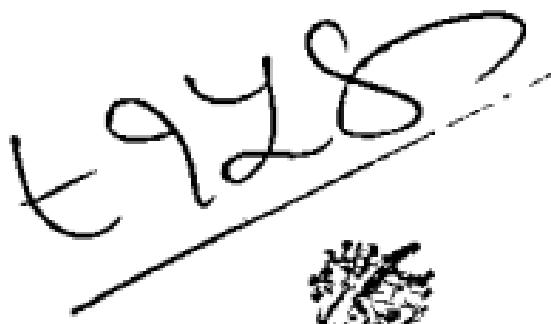
भारतीय जवान भारत की वीरतापूर्ण एवं अनुशासनबद्ध परम्परा का प्रतीक है। उसकी बहादुरी पर देश को सदैव अभिमान रहा है। वह गौरव एवं दायित्व-भावना से परिपूर्ण है। फ्लेंडर के खेतों, उत्तरी अफ्रीका के रेतीले इलाकों, बर्मा के जंगलों, नेफा, कश्मीर और लद्दाख की घाटियों कच्छ के रन तथा इच्छोगिल नहर में उसने अनेक विपदाओं और विषम परिस्थितियों का सामना हँसी-खुशी के साथ किया है। सर्वत्र उसने विजयश्री उपलब्ध की है।

बलिष्ठ नाटा गोरखा, दुर्दमनीय जाट, पौरुषयुक्त पंजाबी, कठोर सिख, फुर्तीला मराठा, बहादुर राजपूत, निडर डोगरा, फौलादी गढ़वाली अपनी अनुपम बहादुरी और अद्भुत साहस से भारत का गौरव सदैव बढ़ाया है। हमारे सभी प्रदेशों के जवान शक्ति के प्रतीक हैं।

जवान अपने सगे-सम्बन्धियों को छोड़कर अनथक रूप से निर्भयतापूर्वक डटा रहता है तथा स्वतंत्रता की रखवाली करता है। प्रतिकूल मौसम में भी वह अपनी सीमाओं पर सजग और सतर्क रहता है। उसका एकमात्र लक्ष्य होता है आक्रान्ता को पराजित करके देश की रक्षा करना। देशवासी जब रात्रि में निश्चित होकर शयन कर रहे होते हैं तो जवान अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए पहरा देते हैं।

जवान का जीवन पर्याप्त कठोर होता है। सवेरा होने पर उसे किन्हीं कोमल हाथों से प्रातःकालीन चाय सुलभ नहीं होती।

उसे हजारों फुट नीचे से पानी लाकर स्वयं खाना बनाना होता है। भूमिगत बंकर उसका घर होता है। यह घर वह स्वयं तैयार करता है और उसकी देख-भाल भी करता है। यदि शत्रु सुगम हो तो वह इसमें बहुत कम ध्यान प्रदान करता है। उसका जीवन सदैव जोखिम और खतरों से भरा होता है। वह जानता है कि स्वतन्त्रता के लिए सतत सतर्कता का मूल्य चुकाना कितना आवश्यक होता है और इसमें जरा-सी ढिलाई भी घातक प्रमाणित हो सकती है।

रेजीमेंट के ध्वज

रेजिमेंट के ध्वजों का जवान के लिए प्रतीकात्मक महत्व होता है। वस्तुतः किसी सैन्य टुकड़ी या रेजिमेंट का पुराना गौरव ही उसे प्राप्त होने वाले रण-सम्मानों में प्रकट होता है। इस प्रकार जवान अपने पूर्ववर्तीयों द्वारा स्थापित वीरतापूर्ण परम्परा को विरासत में प्राप्त करता है। ये ध्वज अपने भावनात्मक मूल्यों के कारण पवित्र माने जाते हैं और जवान इन ध्वजों के गौरव की रक्षा के लिए हंसते-हंसते अपने प्राण समर्पित कर देता है। युद्ध काल हो अथवा शान्तिकाल, जवान अपने रेजिमेंट के ध्वज की आन कायम रखना चाहता है और इस प्रकार रेजिमेंट के इतिहास में नया अध्याय जोड़ने का प्रयत्न करता है। यद्यपि आधुनिक युद्ध प्रणाली के कारण ये ध्वज रणक्षेत्र में नहीं ले जाए जाते, फिर भी इनका रस्मी महत्व बना हुआ है और जवान इन प्रथाओं का उत्साहपूर्वक निर्वाह करता है।

हमारे जवान का कार्य-क्षेत्र केवल स्वदेश तक ही सीमित

नहीं रहा। वह शांति का सन्देश लेकर विदेशों में भी जा चुका है, विशेषकर कांगो, वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस, गाजा, कोरिया तथा लेबनान में। उसने सर्वत्र अपनी शानदार छाप छोड़ी है। उसके अनुशासन, ईमानदारी और मानवीयता प्रभृति गुणोंकी अन्य सेनाओं ने भी सराहना की है।

शान्ति का सन्देशवाहक

अपनी सामान्य शिक्षा-दीक्षा के बावजूद उसने असाधारण सूझ-बूझ तथा धैर्य एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के मानवीय गुणों का परिचय दिया है। आधुनिक युद्ध ने तो जवान का जीवन ही बदल दिया है। उसे अपने घर से हजारों मील दूर जाकर लड़ना पड़ता है। अतः उसे अपने देश के इतिहास, संस्कृति, भूगोल और भाषा की जानकारी प्राप्त करनी होती है जिसकी उसे नियमित रूप से शिक्षा दी जाती है।

मनोबल किसी ध्येय में व्यक्ति की गहरी निष्ठा से उत्पन्न होता है। यह स्वयमेव, देश अथवा मित्रों के गौरव का सूचक है। इसके अनेक पहलू हैं। जवान को सुदीर्घ प्रशिक्षण और सैद्धान्तिक शिक्षा के द्वारा युद्ध-कला सिखाई जाती है। खतरे का सामना और ठोस प्रहार का ढंग भी सिखाया जाता है। अनुशासन से सेना को शक्ति और स्निग्धता प्राप्त होती है, परन्तु इसे विश्वास के बिना कायम नहीं रखा जा सकता।

महात्मा गांधी ने कहा था—"सच्चा सैनिक आगे बढ़ते समय यह बहस नहीं करता कि सफलता कैसे प्राप्त होगी। परन्तु उसे यह विश्वास होता है कि यदि वह अपनी विनम्र भूमिका सही अदा करेगा तो रण किसी न किसी प्रकार जीत ही लिया

जाएगा।" यहां हमें एक अंग्रेजी कविता की पंक्तियां स्मरण हो आई हैं :

जब लाइट ब्रिगेड मृत्यु की घाटी
की ओर प्रयाण कर रही होती है
तो उसके समक्ष क्यों का प्रश्न
नही होता
वह केवल करना या मरना
जानती है।

जवान असंदिग्ध रूप से इस परम्परा का अनुसरण करता है और अपने खून के अन्तिम कतरे तक युद्ध करता है। विश्व के इतिहास से पता चलता है कि भारतीय जवान विश्व का सर्वोत्तम योद्धा है।

विवेकशील नागरिक

जवान कोई असामान्य व्यक्ति नहीं। उसका दूसरा रूप शांत अनुशासित नागरिक का है। उसे अपनी घरेलू समस्याएं हल करनी होती हैं, बच्चों को शिक्षित करना होता है और अपने सम्बन्धियों आदि की सहायता भी करनी होती है। वह नास्तिक नही होता, बरन अपने धर्म में विश्वास रखता है। वह सैनिक के साथ-साथ नागरिक भी होता है। यद्यपि वह राजनीति में कभी भाग नहीं लेता, परन्तु अपने अधिकार और कर्तव्य को भली-भांति जानता है। उसे सैनिक होने के कारण समाज से पृथक नहीं किया जा सकता।

जवान अच्छा गृहपति होने के साथ-साथ एक आदर्श खिलाड़ी, छात्र, शिक्षक, तकनीशियन और नेता भी होता है।

राष्ट्र जवान की सेवाओं का ऋण कभी नही चुका सकता। यह एक ऐसा ऋण है जो बढ़ता ही जाता है।

गत युद्ध में उसने जो शौर्य दिखाया उसकी चर्चा पिछले अध्यायों में की जा चुकी है। भारतीय जवान वास्तव में राष्ट्र, समाज और परिवार सभी के लिए गौरव का प्रतीक है।

६. जल युद्ध

अजेय है विक्रान्त

भारतीय नौसेना के विजयस्तम्भ विक्रान्त के ध्वनि-विस्तारक यंत्र हर रात साढ़े नौ बजे एक युद्ध-गीत प्रसारित करते हैं, जिसका भाव इस प्रकार है :

"विक्रान्त अजेय है, इसपर समुद्री या हवाई आक्रमण करने का कोई भी साहस नहीं कर सकता। हम विक्रान्त के नौसैनिक हैं, हम लड़ने में शूरवीर हैं।

"हम लंगर उठाकर और 'स्वर्न लाइन' खोलकर विक्रान्त को सागर में चलाते हैं, इसका पथ प्रशस्त करते हैं। यह महासागरों में दूर-दूर तक जाता है। युद्ध एवं शान्ति में विक्रान्त हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है।

"युद्ध की वेला में कोई इसकी शक्ति की बराबरी नहीं कर सकता, जो भी इससे लड़ने की धृष्टता करेगा, उसे ही यह पराजित कर देगा। इसके सोहाकऔर अलाइज विमान प्रलयंकारी हैं।

"विक्रान्त लड़ाई के उद्देश्य से अवगत है। इसके डेक पर कार्य करने वाले और नीचे कार्यरत विजेता नौसैनिक इसे सदैव गतिशील रखते हैं। इसका बहादुर कप्तान इसे भावी उज्ज्वल क्षितिज की ओर ले जा रहा है।

"और हम सब मिलकर गाएंगे। उस दिन के लिए संघर्ष करेंगे, जब राष्ट्रों में परस्पर सौहार्द बढ़ेगा तथा दुनिया वाले

कहेंगे कि विक्रान्त के योद्धाओं की शूरवीरता के माध्यम से भारतीय आत्मा का पुनर्जन्म हुआ है।"

भारतीय नौसेना की विजय का यह गीत है, जिसने हाल ही के नौसैनिक युद्ध में सार्थकता ग्रहण की और हमारे नौसैनिकों ने पाकिस्तान की अनुमानतः तीन पनडुब्बियां एवं अनेक युद्ध-पोत समुद्र में डुबा दिए। विक्रान्त ने इस युद्ध में जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उससे सारा संसार आश्चर्य में पड गया। आखिर क्या खासियत है इस विशाल युद्धपोत में जिससे पाकिस्तान की नौसेना आतंकित हो उठी और उसने घुटने टेक दिए। आइए, आपको विक्रान्त के डैक पर ले चलें, जहा आपको अगाध जलराशि में तैरते इस 'हवाई अड्डे' का पूरा आभास हो सकेगा।

विक्रान्त की लम्बाई लगभग ७०० फुट है और वजन २०,००० टन। इसके हैंगरों में ३५ विमान तथा २ हेलिकाप्टर विद्यमान हैं। इन विमानों को उड़ान भरने के लिए उड़ान-डैक पर पहुंचाने के लिए दो बड़ी लिफ्ट भी होती है। इस युद्धपोत में १५०० नौसैनिक तथा ३०० अफसर होते है। जहाज का सर्वोच्च अधिकारी कैप्टन कहलाता है।

विक्रान्त में अनेक विभाग हैं। वर्क-शाप, सप्लाई डिपो, मरम्मत स्थल, इंजन कक्ष, विशाल स्विच-बोर्ड, बिजली का जेनरेटर, मौसम विभाग आदि। इन सबका एक ही ध्येय होता है—अपने चालकों का हौसला बनाए रखना और देश की ३५०० मील लम्बी जल सीमा की रक्षा करना।

विक्रान्त में सब लोग 'टीम स्प्रिट' से काम करते हैं, पृथक-पृथक नहीं। वहां किसी व्यक्ति विशेष को श्रेय नहीं मिलता

शक्ति जहाजी कप्तानों की कुशलता एवं युद्ध-प्रवीणता की प्रशंसा की जाती है। वास्तव में यह प्रवृत्ति किसी भी युद्धपोत का गौरव बढ़ाती है। तमाम जहाजी टुकड़ी के संगठन और जहाज के संचालन के लिए जो भी प्रयत्न होते हैं, वे सब युद्धपोत के ही नाम से होते हैं।

कैप्टन के आदेश पर जहाज चलने लगता है। दैत्याकार घिरनियों की तरह इंजन पुर्र-पुर्र करते हैं। जहाज के शाफ्ट हिलते हैं और यों सारा का सारा जहाज हिलने-डुलने लगता है। पानी में बिलोने-से चलते हैं तथा पोत का सर्वोच्च अधिकारी सारी देखभाल स्वयं करता रहता है।

उड़ान-डैक पर टाइगर जेट विमानों को देखता हुआ कैप्टन 'पुल' पर डटा रहता है। पायलट अपनी विशेष प्रकार की वर्दी पहनता है तथा अन्य आवश्यक उपकरण संभालता है। सब पायलट कमरे में इकट्ठे होते हैं। वहां उन्हें एयर कमांडर आवश्यक निर्देश देता है। एक निर्धारित संकेत पर पायलट अपने-अपने विमानों में बैठते हैं और प्लास्टिक फलकों को अपने सिर पर बांध लेते हैं।

भारी गड़गड़ाहट के साथ सीहाक विमान उड़ते हैं, फिर टाइगर स्क्वाड्रन के विमान उड़ते हैं और कैप्टन के आदेशानुसार शत्रु-सेना पर बमवर्षा कर अपने अड्डों पर सही-सलामत लौट आते हैं। गत भारत-पाक युद्ध में नौसेना के विमानों ने चटगांव तथा बांगला देश के समुद्री तटों के पास भारी बमवर्षा की थी। इसी भांति कराची की हवाई पट्टी को भी नेस्तोनाबूद कर दिया था।

नौसेना के पायलट का कार्य वायुसेना के पायलट की अपेक्षा

अधिक जोखिम भरा होता है। उसे समुद्र में स्थित अपने जहाज पर उतरना पड़ता है। अतः अधिक सावधान रहने की आवश्यकता होती है। उसे आकाश तथा जल दोनों से ही जूझना होता है। रात के समय की उड़ान तो बिल्कुल मृत्यु की क्रीड़ा ही होती है। उस समय विमान को वापस युद्धपोत पर लाना अत्यन्त दुष्कर कार्य होता है।

विक्रान्त पनडुब्बीनाशक संयंत्रों, सोनार तथा तारपीडो से लैस है। उसे कई और अच्छे बमवर्षक भी मिल गए हैं। पिछले दिनों हमारी सोनार व्यवस्था ने शत्रु की विशालकाय पनडुब्बियों को भी जलविलीन कर दिया। आइए, अब पनडुब्बी विरोधी अस्त्र-शस्त्रों के भंडार में आपको ले चलें।

डेप्थ-चार्ज के द्वारा विस्फोटक बड़ी मात्रा में जल की सतह पर उपस्थित नौपोत अथवा जलमार्ग से, छिपी हुई पनडुब्बी पर गिरा दिया जाता है, जिससे शत्रु का पोत आनन-फानन में मृत्यु का शिकार बन जाता है।

युद्ध में कई प्रकार के ध्वंस अथवा तोड़-फोड़ की कार्रवाइयां करनी पड़ती हैं जैसे पुल तोड़ना, भूमि पर रेलों को नष्ट करना, शत्रु के बन्दरगाह के मोर्चे विस्फोटकों द्वारा उड़ाना आदि। अतः जलगर्भी उपकरण के नौसैनिकों को कई प्रकार के कामों का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस संबंध में सोनार और तारपीडो के नियंत्रक नौसैनिक जहां महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वहां गोताखोर भी पीछे नहीं रहता। उसका प्रमुख कार्य जहाज को समुद्री यात्रा के योग्य बनाए रखना होता है। वह उसके जलमग्न भाग की जांच तथा मरम्मत भी करता है। इस तरह वह जहाज को युद्ध के लिए निश्चित रखता है।

पानी को सतह के नीचे विस्फोटकों के प्रयोग द्वारा शत्रु के जहाज को भारी नुकसान पहुंचाता है। वह सुरंगें साफ करके अपने युद्धपोत का पथ सुगम बनाता है।

आज प्रायः सभी बड़े युद्धपोतों में सोनार तथा तारपीडो की व्यवस्था होती है। इन उपकरणों से समुद्र में शत्रु की पनडुब्बी का पता लगा लिया जाता है तथा उसे डुबो दिया जाता है। सोनार एक ऐसा उपकरण होता है, जिसमें पनडुब्बी विरोधी अद्यतम नियंत्रण-व्यवस्था होती है। सोनार के संचालन के लिए पांच नौसैनिकों का एक दल होता है। ये जहाज के ही एक कक्ष-विशेष में रहते है तथा सोनार-नियंत्रक के आदेश का पालन करते हैं।

जब किसी शत्रु-पनडुब्बी के आने का आभास होता है तब सोनार-चालक ध्वनि तरंगें उत्पन्न करता है तथा उन्हें इच्छित दिशा में भेजता है। पानी के भीतर जो ध्वनि भेजी जाती है अथवा प्राप्त की जाती है, उसके द्वारा पनडुब्बी की गति का विस्तृत ब्योरा उपलब्ध किया जाता है।

सोनार पर जो नौसैनिक तैनात किए जाते हैं, उनको हैड-फोन दे दिए जाते हैं ताकि वापिस आई हुई प्रतिध्वनियों का भली-भांति अध्ययन किया जा सके। ये प्रतिध्वनियां सोनार उपकरण इलैक्ट्रानिक विश्लेषक (स्कैन) पर भी अंकित हो जाती हैं जिनके सहारे सोनार-चालक पनडुब्बी की दिशा में ध्वनि तरंगें भेजता है।

कई बार पनडुब्बी को सोनार का शक हो जाता है और वह तुरन्त पैंतरा बदल लेती है। स्कैन पर 'ब्लिप' देखने और हैड-फोन द्वारा सुनने पर सोनार-नियंत्रक 'कान्टॅक्ट' शब्द को पुकारता

है। वह समझता है कि शायद शिकार कब्जे में आ गया है किन्तु जब प्रतिध्वनि सुनाई नहीं पड़ती और स्कैन पर 'ब्लिप' अदृश्य हो जाता है तो उसकी आशा निराशा में परिणत हो जाती है। पनडुब्बी चालाकी से भाग जाती है।

चतुर कप्तान उसे फिर पकड़ने का प्रयत्न करता है। वह सोनार चालक को आदेश देता है। खोज शुरू हो जाती है और प्रतिध्वनियां भी आने लगती हैं। कप्तान नियन्त्रक से अंतिम सूचना सुनता है—'२३५ डिग्री—६००—प्रतिध्वनि का स्वर-मान ऊंचा है, पनडुब्बी की अनुमानित दिशा १२० डिग्री, गति ६ नॉट में—आक्रमण के लिए तैयार।' कैप्टन का आदेश मिलते ही तोपें दाग दी जाती हैं और इस बार पनडुब्बी पकड़ में आ जाती है। जल-सुरसा जल में ही समा जाती है। हां, कुछ टुकड़े उसकी अंतिम करुण-कथा कहने के लिए इधर-उधर अवश्य तैरने लगते है, पाकिस्तान की दूसरी बड़ी पनडुब्बी 'गाजी' का गर्व इसी तरह भंग किया गया था।

पनडुब्बीनाशक शस्त्रों में तारपीडो का बड़ा महत्व है। यह स्वचालित जलगर्भी शस्त्र होता है जिसमें विस्फोटक पदार्थ भरा होता है। यह शत्रु के जलयान से टकराकर उसे ध्वस्त कर देता है। इसमें जो यन्त्र लगे होते हैं, उन्हीं के बल पर इसकी दिशा, गति तथा गहराई का नियन्त्रण किया जाता है।

आज तारपीडो का भी आधुनिकीकरण हो गया है। इन्हें हम चालकशक्ति की दृष्टि से दो प्रकार के उपकरणों में बांट सकते हैं। परम्परागत तथा विद्युत-युक्त। स्टीम या डीजल पर चलने वाली तारपीडो की गति २७ से ५१ नाट और परास १००० से ४००० गज तक होती है। यह इतनी गहराई तक जा सकती

तथा परास लगभग २४ मील होती है। इसकी सबसे बड़ी
षता यह है कि शत्रु को इसकी उपस्थिति का पता नहीं
ता क्योंकि राडार उपकरण इसकी प्रतिध्वनि और समुद्री
ों की ध्वनि में अन्तर नहीं समझ पाता।

थल सेना की तरह सुरंगों (माइन्स) का उपयोग नौसेना
ी किया जाता है। इन्हें बिछाने के लिए विमान तथा नौ-
तथा पनडुब्बियों को काम में लाया जाता है। इन्हें बन्दर-
के मुहानों अथवा समुद्र के उथले क्षेत्रों में बिछाया जाता
आक्रमण के समय इन्हें शत्रु-सीमा में सुनियोजित ढंग से
दिया जाता है और रक्षात्मक कार्यवाही के लिए अपने
के निकट बिछा दिया जाता है ताकि शत्रु तट पर आते ही
त हो जाए।

आज परमाणु युद्ध के खतरे से न केवल नौसेना बेड़े की
नाओं तथा सामरिक विधि पर असर पड़ा है, प्रत्युत
यर 'फाल आउट' के विरुद्ध भी व्यवस्था की गई है तथा
ाप्रदीय प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण किया गया है। आज हमारी
ा में फ्रिगेट, पनडुब्बी, क्रूजर आदि कई प्रकार के युद्धपोत
होंने पाकिस्तान में शाहजहां, बाबर, खैबर तथा खैबर
ाधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से लैस जहाजों तक को सफाया कर
और अमरीका से 'मेहर' में मिली गुरमा-सम पनडुब्बी
ुद्र में दफना दिया। आइए, आपको इसी पनडुब्बी के
ने का 'आंखों देखा' हाल बताएं।

धानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जिस समय ३ और ४
र की रात को राष्ट्र के नाम सन्देश प्रसारित कर रही थी,
 एक विध्वंसक जहाज और गश्ती नौका को इस महत्व-

पूर्ण नौसेना अड्डे के आसपास गश्त लगा रहे थे, ने पनडुब्बी के एक संकेत को पकड़ा। हमारे जहाजों ने पानी के अंदर मार करनेवाले हथियारों से हमला कर दिया। इसके बाद एक बहुत बड़ा धमाका हुआ।

अगले दिन सुबह जब नौसैनिक अधिकारी स्थानीय मछुओं की सहायता से इस इलाके का निरीक्षण कर रहे थे, तो उनमें से एक को लाइफ जैकेट मिल गई। खराब मौसम के कारण इस क्षेत्र में और अधिक निरीक्षण के काम में रुकावट पड़ी। तीन दिनों के भीतर पानी की सतह पर तैरती हुई कुछ और चीजें भी पाई गई।

इस घटना के पूरे प्रमाण केवल ८ दिसम्बर को ही मिले, जब तीन शव तैरते हुए पाए गए। जाच करने पर पता चला कि ये पाकिस्तानी नाविकों के ही शव थे। पानी की सतह पर तैरने वाले कागजातों से इस बात की पुष्टि हो गई कि डूबने वाला जहाज पाकिस्तानी पनडुब्बी 'गाजी' है।

पनडुब्बी का कोई भी नौसैनिक जीवित नहीं बचा। तीनों शवों को नौसैनिक परम्परा के अनुसार दफनाया गया।

पाकिस्तान को यह पनडुब्बी संयुक्त राज्य अमेरिका से मिली थी। टैंच श्रेणी की इस पनडुब्बी की लम्बाई ६२ मीटर तथा जलगर्भी रफ्तार १० नाट थी। २४२८ टन की इस पनडुब्बी के विषय में १९६५ में पाकिस्तानी नौसेना का दावा था कि इसने भारतीय फ्रिगेट नौपोत ब्रह्मपुत्र को डुबो दिया है। हालांकि ब्रह्मपुत्र आज भी हमारी नौसेना में मौजूद है।

युद्ध से पूर्व भारत पाकिस्तान की नौसेना की तुलनात्मक शक्ति इस प्रकार थी :

	भारत	पाकिस्तान
एयरक्राफ्ट कैरियर	१	—
क्रूजर	२	१
फ्रिगेट	६	२
पनडुब्बियाँ	४	४
विध्वंसक	४	२
विध्वंसक सहायक	६	३
गश्ती नौकाएं	१०	४

नौसेनाध्यक्ष एडमिरल नन्दा से एक साक्षात्कार में मैंने जब यह पूछा कि उन्होंने अपने विशाल समुद्री तट की रक्षा के लिए क्या कदम उठाए हैं तो वे बड़े इत्मीनान से बोले, "हमारा अकेला विक्रान्त पूरी समुद्री सीमा की रक्षा के लिए पूरा है क्योंकि पाकिस्तान आज तक विक्रान्त जैसा कोई एयरक्राफ्ट नहीं जुटा पाया। साथ ही हमारे नौसैनिकों का प्रशिक्षण भी बहुत ऊंचा है जिससे शत्रु के नौसैनिकों का सफाया बड़ी आसानी से हो जाएगा।"

१९६५ के भारत-पाक युद्ध के बारे में जब नौसेनाध्यक्ष से बातचीत हुई तो वे बोले, "१९६५ में पाकिस्तान का जहाजी बेड़ा अपने बन्दरगाह से बाहर ही नहीं निकला अन्यथा उसे हम खूब मजा चखाते।"

१९७१ के भारत-पाक युद्ध में हमारे कुशल नौसेनाध्यक्ष ने सचमुच अपना वचन पूरा कर दिया।

१०. भारत और विश्व की वायु-शक्ति

✿ ✿

संसार की वायु सेना अन्य सेनाओं की अपेक्षा कम आयु की है, युवावस्था में है। जब विमान की कल्पना ही उन्नीसवीं सदी में राइट ब्रादर्स द्वारा थोड़ा-बहुत साकार रूप ले सकी, तो वायु सेना के गठन का प्रश्न ही नहीं उठता। वायु शक्ति किसी राष्ट्र की उच्चतम तकनीकी प्रगति का प्रतीक है। आज तो जैसे वायु शक्ति के बिना किसी राष्ट्र की अतिजीविता ही दूभर हो गई है। हजारों-लाखों सैनिक मिलकर जिस शत्रु-देश पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते, उस पर एक मामूली राकेट कुछ बमों के सहारे मिनटों-सेकिन्डों में अधिकार कर लेता है। वायु-सत्ता के लिए निम्नलिखित पद्धतियां अपनायी जाती हैं:

१—जब किसी शत्रु देश से आक्रमण का भय होता है तो उससे बचने के लिए आकाश में वायु-शक्ति इतनी बढ़ा दी जाती है कि शत्रु देश के विमान न तो अन्दर ही घुस सकते हैं और न ही कोई प्रभावकारी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इसमें पड़ोसी मित्र-देशों का सहयोग अपेक्षित होता है किन्तु यह सर्वाधिक कठिन प्रणाली है।

२—दूसरी पद्धति शत्रु के साथ परोक्ष रूप से लड़ने की होती है। मित्र-देश शत्रु पर आक्रमण करते हैं उसकी सीमा में प्रवेश करते है और शत्रु के विमानों को ध्वस्त कर देते हैं। उसकी अन्य सेनाओं की हानि भी इस पद्धति में निहित होती है।

३—तीसरी और अन्तिम तकनीक है—सम्पूर्ण विनाश की। इसके अन्तर्गत शत्रु की वायु-शक्ति के समस्त स्रोतों का अन्त कर दिया जाता है। उसके कार-खानों, वायु-संभरण डिपो, पायलट-प्रशिक्षण केन्द्रों आदि अनेक मुख्य स्थानों को नष्ट कर दिया जाता है।

वैसे वायु शक्ति की उपलब्धि केवल वायु सेना पर ही
वलम्बित हो, ऐसी बात नही है। वास्तव में थल सेना तथा
न सेना की सहायता भी उतनी ही आवश्यक है जितनी वायु
ा की कार्य-कुशलता। वायुसेना के एक पायलट के पीछे वायु
ा के दस और सैनिक होते हैं जो पृथ्वी से उसकी सहायता
ते हैं। उन्हें 'सपोर्ट फोर्सेज' की संज्ञा दी जाती है। परिवहन,
ाव, वायुसैनिक-प्रशिक्षण यूनिटें, मैकेनिक, इंजीनियर,
ार तथा रेडियो ऑपरेटर, वायु मौसम सेवा संभरण, रख-
व तथा अन्य अनेक यूनिटें आकाश में लड़नेवाले सैनिक के
ं में पूरा-पूरा योगदान करती हैं।

वायुयान द्वारा आक्रमण करने से पूर्व शत्रुदेश के मुख्य
ानों के नक्शे प्राप्त किए जाते हैं। अन्तिम निर्णय लेने से
पूरा अध्ययन करना आवश्यक होता है। आक्रमण काफी
-विचार कर ही किए जाते हैं क्योंकि वायु-युद्ध बड़े महगे
हैं। जर्मनी के प्रसिद्ध युद्धशास्त्री कर्नल जी०जी० रेनहार्डट
ुशक्ति की उत्कृष्टता के लिए इन बातों का उल्लेख
है: वायुयानों तथा उसके चालकों की उत्तम स्थिति,
ल-प्रणाली, आकस्मिक आक्रमण करने की योग्यता,
ा की तैयारी।

शत्रु-शक्ति के सबसे बड़े नाशक हैं बम जो प्रमुख स्थानों पर छोड़े जाते हैं। शहरों, औद्योगिक संस्थानों तथा शत्रु में युद्ध के लिए सामग्री प्रदान करने वाले अड्डों पर फेंककर गहरी हानि पहुंचाना इनका लक्ष्य होता है। ये बम कई प्रकार के हो सकते हैं। उदाहरणार्थ एच० ई०, एटोमिक, बैक्टीरियल, केमिकल तथा अन्य नवीन प्रकार के अनुसंधानों पर आधारित प्रक्षेपास्त्र। 'पुश बटन' युद्धों के लिए अनेक प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण किया गया है जो केवल बटन दबाते ही शत्रु-देश के किसी भी भूभाग को नष्ट करके लौट आते हैं अथवा जो भी लक्ष्य होता है उसे निर्दिष्ट समय के भीतर पूरा कर लेते हैं।

बमवर्षक विमान प्रथम विश्वयुद्ध में प्रयोग में आने लगे थे। उस समय वे बड़े भौंडे दिखाई पड़ते थे। युद्ध की समाप्ति पर उनको परिवहन आदि कार्यों में लगा दिया जाता था। द्वितीय विश्वयुद्ध तक स्थिति बदल गई थी और बमवर्षक वायुयानों में काफी सुधार हो गए तथा उनका उपयोग पहले से अधिक बढ़ गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध में अधिकतर वायु-युद्ध एच० ई० बम द्वारा ही होते थे। किन्तु १९४० के शुरू में जर्मनी वायु सेना ने लन्दन तथा इंग्लैंड के अन्य शहरों पर छोटे किस्म के बम गिराए थे। इन बमों के प्रहार का लक्ष्य धन-जन को ध्वस्त करना होता था। इसके बाद ब्रिटेन, हेम्बर्ग, बर्लिन, कई जर्मन नगरों तथा जापान पर जिन बमों का प्रयोग किया गया था वे वायु द्वारा आक्रमण के बड़े शस्त्र समझे गए। कुछ शहरों में प्रतिशत तक हानि हुई। जापान में अधिक नुकसान होने का एक कारण यह भी था कि वहां आग अधिक फैलती थ

थी। बिल्डिगों के निर्माण की विधि भी हानि के लिए उत्तरदायी रहती है। यदि आग पकड़ने वाला मसाला अधिक मात्रा में प्रयुक्त होगा तो निश्चित रूप से वहां अधिक हानि होगी। एच० ई० बम विशेष रूप से तीन प्रकार के होते हैं :

१. डिमोलिशन बम
२. जनरल पर्पज बम
३. ट्रैगेमेन्टेशन बम

धीरे-धीरे रासायनिक अस्त्र-शस्त्र भी बनाए जाने लगे। जर्मनी तथा रूस ने इस युद्धकला में शुरू में कुशलता प्राप्त की। गैस बम, बैक्टीरियल तथा अन्य कैमिकल शस्त्रों का निर्माण और प्रयोग शुरू हुआ।

यद्यपि वायु-शक्ति का श्रीगणेश १९०३ में ही हो गया था, किन्तु उसका असली रूप उसके ११ वर्ष बाद प्रकट हुआ। अर्थात् प्रथम महायुद्ध में ही इस शक्ति का सही अर्थों में उदय हुआ। ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस के पास उस समय सौ हार्स पावर से अधिक शक्ति के इन्जन नहीं थे। उस समय पायलट एक-दूसरे पर केवल राइफल अथवा रिवाल्वर से ही आक्रमण करते थे। शुरू में जिन बमों का प्रयोग किया गया, वे आजकल की हैंड ग्रेनेड से भी हल्के होते थे। उनकी प्रहार-शक्ति सीमित होती थी।

वायु युद्ध कला में संभवतः १९११ में ट्रिपोली पर पहले बार वायुयान का इस्तेमाल हुआ था। इटली की सेना ने अरब राष्ट्रों पर आक्रमण के लिए इसे तैयार किया था। अक्टूबर १९१२ में दूसरी बार इंग्लैंड ने आत्मरक्षा के लिए इसका प्रयोग किया। प्रथम तथा द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान वायु शक्ति प

अनेक अनुसंधान हुए। अनेक पवनपुत्रों ने अपने जीवन को जोखिम में डाला। बिना रुके कटिबन्धीय उड़ान, ध्रुवों पर उड़ान, ऊंचाई, गति आदि पर अनेक परीक्षण किए गए। बहुत से वायुपुत्र काल के ग्रास बने। जो बचे उन्होंने नये कीर्तिमान स्थापित किए।

भारत में बमवर्षक कुछ वर्ष पूर्व ही आए। १९३३ में इंडियन एयर फोर्स की स्थापना हुई थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारत को अपने समुद्री तट की रक्षा करनी थी। फलतः कुछ विमानों को सुरक्षा के लिए तैयार किया गया। उनमें छोटे-छोटे बम रखे जाते थे। ताकि अवसर पड़ने पर उनका प्रयोग किया जा सके। इन छोटे उपकरणों ने बंगाल की खाड़ी में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

आज विज्ञान ने वायु शक्ति को चौगुना बढ़ा दिया है। वस्तुतः नये-नये अंतरिक्ष यानों को देखकर यह सब चमत्कार ही लगता है। चांद पर विजय के बाद तो ४०-५० वर्ष की यह अनूठी प्रगति वास्तव में अलादीन का चिराग ही सिद्ध हुई है। आज अंतरिक्ष में जासूसी विमान छोड़े जाते है। धरती से बैठे-बैठे उन्हें चलाया जाता है। मनोवांछित स्थलोंपर उतारा जाता है। रूस की चांद गाड़ी तो धरती पर बैठे वैज्ञानिकों के इशारे पर ही चलती है। वस्तुतः आज वैज्ञानिक ने लोक-लोकान्तरों को कठपुतली की तरह नचाकर रख दिया है। किन्तु दूसरी ओर विनाश के लिए भी कोई कसर नहीं छोड़ी गई। रूस ने १९६९-७० में ऐसे छह अंतरिक्ष यान छोड़े थे जिनका जासूसी की अपेक्षा रक्षा-व्यवस्था से अधिक सम्बन्ध था। १९६८ में छोड़े गए तीन में से दो और १९७० में एक [illegible]

में ध्वस्त हो गया। अमरीका के पास आज ५,००० से ६,५०० मील तक मार करने वाले भीषण प्रक्षेपास्त्र हैं। नाटो देशों के पास ७,००० संहारक, अणुअस्त्र हैं तो वार्सा संधिदेशों के पास ३,५००। रूस के पास २००० लड़ाकू विमानों में से २०० ऐसे हैं जो अन्तर्महाद्वीपीय युद्ध के लिए हैं। मिग २३ ने उसकी वायु-शक्ति को संसार में पहले नम्बर पर लाकर बिठा दिया है। रूस का एस० ए० ६ प्रक्षेपास्त्र २५ मेगाटन के तीन परमाणु बम साथ ले जा सकता है।

अमरीका भी अपनी स्थिति को काफी मजबूत कर रहा है। सैन्य-विशेषज्ञों की राय में अमरीका के २५ प्रमुख शहरों में शत्रु के प्रक्षेपास्त्रों से बचाव एवं प्रत्याक्रमण की व्यवस्था है। अंतरिक्ष-शक्ति में उसने आश्चर्यजनक प्रगति की है। वास्तव में दोनों ही इस युग की निर्णायक शक्तियां हैं। आइए जरा अपने देश की वायु शक्ति पर भी एक नजर डालें। भारत को अमरीका या किसी अन्य देश से घबराने की इतनी आवश्यकता नहीं जितनी चीन या पाकिस्तान से सतर्क रहने की है। प्रस्तुत हैं १६७१ में भारत-पाक युद्ध से पूर्व उपलब्ध तुलनात्मक आंकड़े :

भारत	पाकिस्तान	चीन
बमवर्षक : कैनबरा	आइ एल-२८, कैनबरा (बी-६७)	टी यू-१६ (भारी बमवर्षक) टी० यू-४ (हल्के बमवर्षक)
लड़ाकू बमवर्षक : एस यू-७, एच एफ-२४ (मारुत) हटर, मिस्टियर्स	मिराज-३, मिग-१९, एफ-१०४ ए, एफ-८६	१५० आई एल-२ (हल्के बमवर्षक)
लड़ाकू : मिग-२१ (६ स्क्वा) नेट (८स्क्वा) दोनों भारत में बने		मिग-१५ मिग-१७ मिग-१९ और मिग-२१ (मिग-१९ चीन रूस की सहायता से शेन्यांग में ४ से ८ विमान प्रतिमास बना रहा है।)
माल वाही : ए एन-१२, सी-११९, एच एस-७४८, केरेबू तथा डकोटा	९ सी-१३० बी हर्कुलीस, ब्रिटिश फ्रेटस, डकोटा, एल्बाट्रोस एंफीबियन	
८९ : एम० एल्यूते-३	कमान एच एच-४३ बी हस्कीज, एल्यूतें-३	
वायुसैनिक विमान १ हजार	कुल वायुसैनिक विमान ७०० से अधिक	कुल वायुसैनिक विमान ३०००

स्पष्ट है पाकिस्तान जैसा छोटा देश युद्ध से पूर्व हमसे केवल ३०० विमानों से पीछे था। उधर चीन के पास हमसे आज भी २००० विमान अधिक हैं अर्थात् उसके पास हमसे तीन गुना विमान हैं। अतः इस दृष्टि से भारत को न केवल अपनी वायु-शक्ति को बढ़ाना है प्रत्युत वायु युद्ध-कला में भी सिद्धहस्त होने की आवश्यकता है। वायु सेना के सर्वांगीण विकास से ही हम अन्य विकसित राष्ट्रों के साथ कदम मिलाकर चल सकते हैं और विश्व की शक्ति सन्तुलन में उपयुक्त स्थान प्राप्त कर सकते हैं।

अगले अध्याय में हम अपने गगन-प्रहरियों तथा भारत-पाक युद्ध में उनकी कुशल-भूमिका पर चर्चा करेंगे।

देश के विभाजन के समय लगभग ३०,००० शरणार्थियों के निष्क्रमण की समस्या उपस्थित हो गई थी। वे पाकिस्तान में फंसे पड़े थे। हमारी वायुसेना ने इस स्थिति का साहसपूर्वक और कुशलता से सामना किया, यद्यपि इसका परिवहन-स्कवेड्रन तब अर्द्ध-निर्मित था। अभी यह समस्या हल नहीं हुई थी कि पाकिस्तान ने कश्मीर पर विशाल आक्रमण कर दिया। स्थल-सेना को बल प्रदान करने तथा सामरिक कार्रवाई जारी रखने के लिए वायु सेना का सहयोग प्राप्त किया।

दो युद्ध

भारत पर चीनी आक्रमण के दौरान, हमारी वायुसेना ऊंचाई वाले क्षेत्रों की कठिनाइयों से पूर्णतया परिचित नहीं थी। इसीलिए वायुसेना उस संघर्ष में बड़े पैमाने पर कोई योगदान नहीं कर सकी। चीनियों के पास विशाल संख्या में विमान मौजूद थे। मोटे तौर पर उनके पास लगभग ३ हजार विमान थे, जिनमें से २ हजार लडाकू, ४०० बमवर्षक तथा शेष सभी प्रकार के परिवहन एवं प्रशिक्षण विमान आदि थे तिब्बत जैसे पठार पर सामरिक कार्रवाई का संचालन करने में हमने स्वाभाविक रूप से कुछ कठिनाइयां अनुभव कीं जोकि समुद्रतल से १३ से १६ हजार फुट की ऊंचाई पर है। परन्तु त भारत-पाक युद्ध में हमारी वायुसेना ने अपनी आत्म-निर्भरता, क्षमता और युद्ध-कौशल का खुलकर परिचय दिया या शत्रु पर प्रभुत्व प्राप्ति से पहले अनेक उत्तेजनापूर्ण वायु षर्षों में विजय प्राप्त की। हम फ्लाइंग लेफ्टिनेन्ट आर० मैंसी, लाइंग लेफ्टिनेन्ट एम० ए० गणपति और फ्लाइंग लेफ्टिनेन्ट

आर० डी० लजारस की वीरता को कभी विस्मृत नहीं कर सकते, जिन्होंने पूर्वी क्षेत्र पर अपने नन्हें नैट से तीन विशाल सैबर जैटों को गिराया था :

इस घटना से पाकिस्तानी वायुसेना इतनी घबरा उठी थी कि उसे अपना युद्ध तत्व ही बदल देना पड़ा। उन्होंने दिन में आक्रमण करने के बजाय रात को लुक-छिपकर गलत-सलत ठिकानों पर बमवारी करना शुरू कर दिया। हमारे नैट और मिग के पायलटों ने जब जरा आंख उठाकर देखा, तो तुरन्त शत्रु नौ-दो-ग्यारह हो जाता।

११ दिसम्बर को पला० ले० एस-एम० कुमार ने एक और बड़ा मोर्चा फतह किया। वह पठानकोट के ऊपर जब 'कैप' में व्यस्त था तो उसे दो विमान आते दिखाई दिए। हमारे हवा-बाज ने अपने नैट में ऊंचाई की, एक जोरदार उड़ान भरी तथा दोनों मिराजों के बीच में पहुंच गया। उसने एक मिराज पर वार किया किन्तु तभी दूसरा मिराज उसका पीछा करते हुए समीप ही आ गया। हमारे पायलट ने अपना संतुलन नहीं खोया और अपना नैट घुमाकर दूसरे मिराज के पीछे पहुंच गया। उसने उस पर भी वार किया और शत्रु के विमान में आग लगाकर ही चैन ली।

इसी प्रकार के अनेक करतब हमारी वायुसेना के इन बम-बारों ने दिखाए। वस्तुतः १९६५ के युद्ध की अपेक्षा १९७१ के युद्ध में हमारे वायुसैनिकों ने शत्रु-सेना को अधिक नुकसान पहुंचाया।

कठोर प्रशिक्षण

प्रत्याशी को कठोर प्रशिक्षण देने से पहले वायुसेना चयन-बोर्ड की एक विशेष मशीन पर उसकी उड़ान-क्षमता की जांच की जाती है। चयन होकर कैडेट बनने से पहले उसे चालक-क्षमता टैस्ट में उत्तीर्ण होना पड़ता है। वायुसेना चूंकि अत्यन्त मूल्यवान मशीनें काम में लाती है, अतः चालकों के चयन की परीक्षा भी पर्याप्त कठिन होती है।

चयन के पश्चात् प्रथम आधार-चरण का समारम्भ होता है। चालक प्रशिक्षण-संस्थान में कैडेट को प्रशिक्षित किया जाता है, जहां उसे १५० हार्स पावर के भारतीय एच टी-२ विमान से उड़ान की प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है। उसे बड़े मनोयोग पूर्वक स्थल तथा आकाश में सतर्कता एवं प्रक्रिया सम्बन्धी विभिन्न उपायों का अध्ययन करना पड़ता है। उसे इनमें अभ्यस्त होने की आदत इसलिए डालनी पड़ती है क्योंकि इसके बिना वह अपने भावी जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। उसके पास किसी सन्दर्भ पुस्तक या नोटबुक देखने का समय नहीं होता। अतः उड़ान सम्बन्धी समस्त जानकारी उसे अत्यंत मनोयोग से सीखनी पड़ती है।

आगामी चरण में उसे दुर्गम बीहड़ों पर सप्लाई गिराने का प्रशिक्षण प्राप्त करना पड़ता है अथवा हाकिमपेट के जैट प्रशिक्षण में भेज दिया जाता है, जहां वह वेम्पायर जैट विमान का परिचय प्राप्त करता है। उसे हेलिकोप्टर कोर्स के लिए भी चयन किया जाता है। परन्तु प्रशिक्षण के लिए चुने गए सभी कैडेट अन्तिम चरण तक नहीं पहुंच पाते क्योंकि यदि उनमें

उड़ान की निपुण जन्म योग्यता नहीं होती तो केवल परिश्रम पर किसी कैडेट का निपुण बनना प्रायः बड़ा कठिन होता है।

नौसैन्य उड्डयन

पायलटको कई अत्यन्त खतरनाक दायित्वों का निर्वाह भी करना पड़ता है। उसे समुद्र की लहरों पर उठते गिरते तथा गोते खाते हुए विमानवाहक के तल पर उतरना पड़ता है। ऐसी दशा में जरा-सी भूल से वह अगाध समुद्र में विलीन हो सकता है।

रक्षामंत्री श्री जगजीवनराम ने भारतीय वायुसेना के अफसरों और जवानों को एक संदेश में ठीक ही कहा था—भारतीय वायुसेना का देश-सेवा का एक प्रभावशाली रिकार्ड रहा है। प्रेरक नेतृत्व, अद्‌भुत साहस और अटल कर्तव्य-परायणता के द्वारा इस सेना ने ऐसी परम्पराओं का निर्माण किया है, जिनपर यह उचितरूप से गर्वकरसकती है। भारतीय वायुसेना के प्रशिक्षण एवं तकनीक के नवीनतम घटनाक्रम से परिचित रहने का प्रयास सचमुच सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि वायुसेना अवसर पड़ने पर राष्ट्र की प्रतिरक्षा के अपने उत्तर-दायित्व का निर्वाह करने के लिए पूर्णतः तत्पर रहेगी।

गगन के इन प्रहरियों ने गत भारत-पाक युद्ध में जिस कर्त्तव्यपरायणता तथा कार्य कुशलता का परिचय दिया उससे शत्रु का मान सदा के लिए भंग हो गया। उन्होंने छम्ब, सकेसर, शकरगढ़, तथा लोंगेवाला में जिस कदर दुश्मन को पीटा, वह उसे कभी नहीं भूलेगा। हमारे पास भले ही मिराज जैसे अधिक बड़े जेट न रहे हों किन्तु नैट जैसे इन्टरसेप्टर का नाम सुनते ही शत्रु की नानी मर जाती थी।

१२. नैट का कमाल

✿ ✿

गत युद्ध के दौरान वायु सेनाध्यक्ष एयर चीफ मार्शल पी० सी० लाल ने एक भेंट में बताया था कि हमारी वायुसेना किसी भी आक्रमण का सामना करने के लिए पूर्णतया सक्षम है। हमारे नन्हें नैट दुश्मन के विशालकाय सेबर जैट को छटी का दूध याद करा रहे हैं। उन्होंने मिराजों तक के मिजाज ठंडे कर दिए। उनकी फुर्ती तथा कार्य-कुशलता को देखकर शत्रु के हौसले पस्त हो रहे हैं।

वास्तव में हमारे नैटों ने १९६५ तथा वर्तमान युद्ध में जो कमाल हासिल किए हैं उसके लिए हमारे पायलेट विशेष रूप से प्रशंसा के पात्र हैं। एक चालक का कहना था कि जब शत्रु का विमान हमारी सीमा की ओर उड़ान भरता है तो हमारा राडार तुरंत खतरे का सिगनल दे देता है, मिनटों-सेकण्डों में चालक तैयार हो जाता है और शत्रु का पीछा करता है। कई बार सैबर की तीव्र गति के कारण जब नैट पीछे रह जाता है तो उसे एक तरकीब सूझती है कि वह अपनी मिसाइलें शत्रु के पंखों पर दाग देता है। और देखते-देखते अधकटे पक्षी की तरह सैबर जमीन पर लुढ़क जाता है। नैट के चालक एक अन्य युक्ति भी अपनाते हैं। वे गोताखोर की तरह गगन-मण्डल में बड़ी तेजी से नीचे उतरते हैं शत्रु भी अपनी मिसाइलें दागता है लेकिन नैट का चालक दो सेकण्ड के लिए इंजन बंद कर देता है जिससे उसकी गति परिवर्तन हो जाती है और शत्रु की मिसाइलें निशाना चूक जाती हैं।

इसी प्रणाली से हमारी वायुसेना ने शत्रु के अनेक विमानों को ध्वस्त कर दिया। बांगला देश में तो ३-४ दिन में ही पाकिस्तान की सारी वायुसेना समाप्त कर दी। वहां के मिराजों और सैबर जेटों ने याहिया की क्रूरतावश अपनी कब्रें खुद खोदीं। उनके केवल टुकड़े बाकी बचे जो यत्र-तत्र छितर गए।

अब जरा पश्चिमी सीमा की ओर दृष्टिपात कीजिए, वहां भी घमासान लड़ाई हुई। हमारे अनेक इन्टरसेप्टरों ने बड़ी बहादुरी से दुश्मन का मुकाबला किया। हमारी विमानभेदी तोपें और रूसी एम० ए०-२ भारतीय सीमा की रक्षा के लिए प्रतिरक्षा में लगे रहे। वायुसेना की छत्र-छाया में हमारे थल-सैनिक आगे बढ़ते गए। हर्ष का विषय है कि हमारी वायुसेना के अधिकांश उपकरण अपने ही देश में निर्मित किए जाते हैं। पाकिस्तान की तरह हम विदेशों से भिक्षा मांगना उचित नहीं समझते।

यह माना कि शत्रु के २५ मिराज १५०० मील प्रतिघंटा (२.२ मैक) गति वाले हैं जो हमारे बमवर्षक विमानों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली थे तथा इसी प्रकार उनके सैबर जेट भी कई मायनों में अधिक शक्तिशाली हैं किन्तु उनका मुकाबला हमारे मारुत तथा मुखई ने बड़े साहस के साथ किया। ये सोवियत रूस से प्राप्त किए गए थे परन्तु मारुत भारत में ही बने हैं। हमारे यहां हंटर तथा कैनबरा से बढ़कर इंटरसेप्टर बहादुर नैट थे, जो पाकिस्तान के दानवीय आकार वाले वायुयानों को बात की बात में चकमा दे जाते तथा ऐसा घूंसा जमाते कि दुश्मन जिंदगी भर नहीं भूलेगा। वैसे नैटों का घूंसा उन्हें सीधे दोजख ही भेजकर चुप होता था।

हमारे नैट विमानों की आक्रामक शक्ति से पाक वायुसेना के अधिकारी इतने भयभीत हो चुके थे कि उन्होंने अपने साथियों को यह सलाह देना आरम्भ कर दिया कि जैसे ही वे अपने आसपास नैट विमान देखें तो बिना कोई जोखिम उठाए सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हों।

हमारे मिग २१ का मुकाबला करने वाले विमान पाकिस्तान के पास बहुत कम थे, किन्तु इनकी उन्नत स्थिति वाले विमानों का होना परमावश्यक हो गया था। क्योंकि शत्रु फ्रांस से फैंटम लेने का प्रयत्न कर रहा था। ये विमान शायद वह टर्की के माध्यम से लेता। इनमें सब कुछ 'आटोमैटिक' होता है तथा कुछ वायुसेना अधिकारियों के अनुसार 'ब्लैक आउट' में भी वे कामयाबी हासिल कर लेते हैं। वैसे हमारी सरकार की दूरदर्शिता से जो भारत-रूस समझौता हुआ है उससे हमें शीघ्र ही उन्नत विमान सुलभ होंगे जिनमें ईंधन भी अधिक भरा जा सकेगा। फलस्वरूप हम लंबी उड़ानें भरकर अधिक दूर तक हमला कर सकेंगे।

कर्मचारियों की संख्या की दृष्टि से हमारी वायुसेना विश्व की प्रथम आठ शक्तिशाली वायु सेनाओं में से है। तथा हम सोवियत रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, इंग्लैंड, पश्चिमी जर्मनी, जापान और फ्रांस के समकक्ष आ जाते हैं। हम लड़ाकू विमानों के तुलनात्मक आंकड़े पिछले अध्यायों में दे चुके हैं। कुल मिलाकर हमारी वायुशक्ति पाकिस्तान से निस्संदेह अधिक थी।

हां, एक बात और ध्यान देने योग्य है कि यंत्र का तब तक कोई मूल्य नहीं होता जब तक उसका चालक निपुण न हो।

कितने ही मंहगे से मंहगा विमान आप अनाड़ी या अकुशल हाथों में सौंप दें तो निश्चय ही वह मिट्टी है। उसका कोई लाभ नहीं। हमारे वायुयानिक संसार के सर्वश्रेष्ठ पायलटों में गिने जाते हैं। उन्हें मृत्यु का तनिक भय नहीं। आकाश में छलांगें भरना तथा तीव्र झंझाओं से उलझना उनके लिए बांए हाथ का खेल है। वायुसेना का अधिकारी छोटा हो या बड़ा, उसके लिए अपने आकाश की रक्षा का प्रश्न सर्वोपरि है। वह अपने जीवन को जोखिम में डालकर दनदनाता-सनसनाता शत्रु सेना पर गोले बरसाता है। देश की रक्षा में सर्वस्व न्यौछावर कर देता है। और यही है—हमारी विजय का सबसे बड़ा रहस्य जिसको दुश्मन भी मानता है।
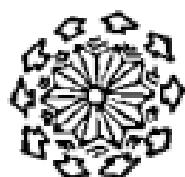
१३. निक्सन-सयुक्त राष्ट्रसंघ से समुद्री बेड़े तक

ढाका आत्मसमर्पण करने को विवश हो गया था। भारत-
ार ने बांगला देश को मान्यता प्रदान कर दी थी तथा
ीका से उपहार अथवा ऋण में मिली गाजी जैसी पन-
को डुबा दिया गया था। संयुक्त राष्ट्रसंघ में निक्सन का
न्दी प्रस्ताव 'वीटो' की भेंट चढ़ चुका था। ऐसी स्थिति में
की राष्ट्रपति श्री निक्सन के सामने धमकी देने के अति-
कोई चारा नहीं रह गया था। अतः उन्होंने अपने सातवें
ी बेड़े को बंगाल की खाड़ी की ओर बढ़ने का आदेश
। बेड़ा वियतनाम से बांगला देश की ओर चल पड़ा।

यूयार्क टाइम्स के अनुसार इस बेड़े का उद्देश्य था—बांगला
अमरीकी तथा अन्य देशों के नागरिकों को निकालकर
स्थान पर भेजना। इस 'एंटरप्राइजर' नामक जहाजी
पास १०० बमवर्षक, हेलिकाप्टर तथा अनेक छोटे नौ-
विमान भी थे। वायस एडमिरल डेमान कूपर उसके
कमांडर थे। वस्तुतः इस बेड़े के भेजने से पाकिस्तान
नैतिक बल मिलना चाहिए था किन्तु स्थिति इसके
निकली। स्वयं अमरीकी जनता तथा वहां के समा-
वों ने निक्सन की खूब खबर ली और इस प्रकार की
विरोधी नीति की डटकर आलोचना की। इधर युद्ध-
होते ही पाकिस्तान की बांगला देश वाली सेना बन्दी
गई तथा नियाजी के आत्मसमर्पण करने के तुरंत बाद
ला देश की स्वतंत्र सरकार कायम हो गई।

भारतीय सैनिकों, नाविकों तथा सामान्य नागरिकों, सभी का मनोबल बहुत ऊंचा था अतः गनबोट कूटनीति को फेल होना पड़ा। हमारा विक्रान्त भी टस से मस न हुआ, वह बंगाल की खाड़ी में अविचल खड़ा रहा। हमारी नौसेना के विमान शत्रुसेना का सफाया करते रहे। अन्ततः जब मुजीबुर्रहमान ढाका पहुंच गए और नई सरकार का गठन हो गया तो एक दिन 'एंटरप्राइज' चुपके से पीछे खिसक गया।

सैन्य विशेषज्ञों की राय में यदि ढाका आत्मसमर्पण न करता तथा बांगला देश की विजय में कुछ और देर लग जाती तो हो सकता था यह जहाजी बेड़ा कुछ गुल खिलाता। हां, यह भी सच है कि तब रूस भी एक दर्शक के रूप में न रहकर हमारी पूरी सहायता करता जैसा कि वह पहले से करता रहा था। कहते हैं उस समय रूस का जहाजी बेड़ा भी हमारी सहायतार्थ चल पड़ा था। इधर भारत पूरी तरह से इस धमकी का मुकाबला करने को तैयार था।

निक्सन संयुक्त राष्ट्रसंघ में तो फेल हुए ही, बंगाल की खाड़ी में भी सफल नहीं हो सके।

१४. जय बांगला ! जयहिन्द ! !

✿ ✿

भारत-पाक युद्ध में भारतीय सेनाओं ने जो कार्यवाही की वह युद्धों के इतिहास में सदैव महानतम सैनिक कार्यवाही के रूप में आंकी जाएगी। वास्तव में सैन्यविज्ञान की शब्दावली में इसे तड़ित अथवा तूफानी युद्ध ही कहा जाएगा क्योंकि यह केवल दो सप्ताह के भीतर ही समाप्त हो गया।

यह युद्ध भारत पर थोपा गया था। अत. भारत को आत्म-रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने पड़े। युद्ध के तीसरे दिन पाकिस्तानी सेना का मनोबल गिरने लगा। जनरल मानेकशा ने पाकिस्तानी फौज को रेडियो द्वारा धमकी दी, तो आत्म-समर्पण की सलाह भी दी। साथ ही हमारी सेनाओं ने ढाका को चारों ओर से घेर लिया। फलतः शत्रु का जोश ठंडा हो गया। मनोवैज्ञानिक युद्ध कला की एक प्रक्रिया की विजय हुई। जनरल नियाजी आत्मसमर्पण को तैयार हो गए। ढाका आजाद हो गया। मुक्तिवाहिनी ने हमारी सेना के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर जो सहयोग दिया उससे हमारे लिए विजय-श्री पाने का पथ सुलभ हो गया।

युद्ध में जटिल तथा अद्यतन उपकरण ही सब कुछ नहीं होते। उपकरणों के पीछे बैठा मानव यदि कुशल तथा प्रशिक्षित नहीं है तो अच्छे से अच्छा उपकरण भी बेकार सिद्ध होता है। भारत का जवान पाकिस्तानी सैनिकों से कहीं अधिक प्रशिक्षित तथा प्रवीण रहा है। यही हाल हमारे नौसैनिकों तथा पायलटों का था जिन्होंने जगह-जगह शत्रु के दांत खट्टे कर दिए।

हां, छम्ब क्षेत्र में सामरिक दृष्टि से शुरू में हमारी स्थिति बहुत अच्छी नहीं रही तथा हमें कठोर संघर्ष करना पड़ा। जवाबी हमले जारी रहे और बाद में छम्ब के साथ-साथ राजस्थान में भी स्थिति मजबूत हो गई।

कुछ आलोचक कह सकते हैं कि बांगला देश में कुछ पाकिस्तानी गढ़ों को शुरू में न जीतकर हमारी सेना ढाका की ओर ही बढ़ती गई और दीनाजपुर तथा रंगपुर जैसे क्षेत्र यों ही छोड़ दिए। वास्तव में हमारे कमांडरों की यह भी एक सामरिक चाल थी जिसके अनुसार हमें पहले ढाका पर विजय प्राप्त करनी थी ताकि बांगला देश की राजधानी पर अधिकार होते ही वहां विधिवत् सरकार की स्थापना कर दी जाए।

मुजीबुर्रहमान की रिहाई के समाचार भुट्टो के पाकिस्तान के राष्ट्रपति बनते ही आने लगे थे। यद्यपि उनके दफनाने के लिए कब्र भी खुदवाई जा चुकी थी, किन्तु परिस्थितियों ने पलटा खाया। स्वयं पाकिस्तान की जनता वहां के नेताओं की विरोधी हो गई।

८ जनवरी १९७२ की रात को मुजीब को उनकी इच्छा के विरुद्ध इंग्लैंड ले जाया गया। भुट्टो को आशा थी कि मुजीब का 'ब्रेनवाश' हो गया है किन्तु पिंजड़े से निकले शेर ने सच्चाई का रुख अख्तियार किया। उसने बांगला देश की स्वाधीनता की घो[illegible] की और भारत के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। श्रीमती इं[illegible] गांधी से टेलीफोन पर बात करते समय वे रो पड़े थे। अगले दिन भारत पहुंचने पर भारतीय नेताओं तथा जनता ने उनका हार्दिक स्वागत किया।

मुजीब के स्वागत में राष्ट्रपति श्री गिरि ने भाषण देते हुए

कहा—'मानवीय स्वाधीनता के ध्येय की उपलब्धि में आप बलिदान की अमरशक्ति के प्रतीक हैं।' बंगबन्धु ने भारतीय जनता, श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा अन्य नेताओं के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा—

"यह यात्रा अन्धकार से प्रकाश की ओर की यात्रा है, परतन्त्रता से स्वतन्त्रता की ओर की यात्रा है, निराशा से आशा की ओर की यात्रा है। इन नौ महीनों में मेरे देशवासियों ने कई सदियां लांघ ली हैं। जब मुझे मेरे देशवासियों से अलग किया गया तो वे रोए जब मुझे कैद में डाला गया, वे लड़े और अब जबकि मैं उनके पास वापिस जा रहा हू, वे विजयी हैं। मैं स्वतंत्र तथा सार्वभौमिक बांगला देश को लौट रहा हूं।

जय बांगला! जय हिन्द!!"

एक अन्य सार्वजनिक सभा में श्रीमती इन्दिरा गांधी के स्वागत भाषण के प्रत्युत्तर में उन्होंने भारत को अपना सच्चा मित्र बताया तथा यहां की जनता के प्रति आत्मीयता के स्वरों में कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने याहिया खां के जुल्मों की कड़ी निन्दा की और भारत से रिश्ता बनाए रखने का वचन दिया। बंगाली भाषा में भाषण समाप्त करते हुए बंगपिता ने पुनः जय बांगला तथा जयहिन्द के नारे लगाए तथा श्रीमती इन्दिरा गांधी की जय-जयकार की। भारत की प्रधानमंत्री ने भी मुजीब के प्रेम का उत्तर उन की जय-जयकार में दिया। बंगबन्धु ढाका रवाना हो गए—एक नए गणतन्त्र को पुनः बसाने के लिए। उजड़े सोनार देश को सोने-सा देश बनाने के लिए।

हां, छम्ब क्षेत्र में सामरिक दृष्टि से शुरू में हमारी स्थिति बहुत अच्छी नहीं रही तथा हमें कठोर संघर्ष करना पड़ा। जवाबी हमले जारी रहे और बाद में छम्ब के साथ-साथ राजस्थान में भी स्थिति मजबूत हो गई।

कुछ आलोचक कह सकते हैं कि बांगला देश में कुछ पाकिस्तानी गढ़ों को शुरू में न जीतकर हमारी सेना ढाका की ओर ही बढ़ती गई और दीनाजपुर तथा रंगपुर जैसे क्षेत्र यों ही छोड़ दिए। वास्तव में हमारे कमाडरों की यह भी एक सामरिक चाल थी जिसके अनुसार हमें पहले ढाका पर विजय प्राप्त करनी थी ताकि बांगला देश की राजधानी पर अधिकार होते ही वहां विधिवत् सरकार की स्थापना कर दी जाए।

मुजीबुर्रहमान की रिहाई के समाचार भुट्टो के पाकिस्तान के राष्ट्रपति बनते ही आने लगे थे। यह ... बनाने के

लिए कब्र भी खुदवाई

पलटा खाया। स्वयं

न ४७ विमान नष्ट किए। जिनमें ५ मिराज भी
त के १७ विमान जाते रहे जिनमें एक हेलिकाप्टर

। के ६० टैंक ध्वस्त किए जा चुके थे जिनमें से
टी-५९ टैंक थे।

सागर में पाकिस्तान के दो विध्वंसक नौपोत और
पोत डुबा दिए गए थे। बंगाल की खाड़ी में एक
दी गई थी।

बन्दरगाह क्षेत्र के प्रमुख संस्थानों को काफी क्षति

य थलसेना ने राजस्थान सीमाक्षेत्र में गदरा नगर,
तथा बसराम पर और बांगला देश में लकशम रेल
ब्जा कर लिया है।

य वायसेना ने मुरीद, मियावाली तथा शोरकोट
पर हमला किया। ९ पाकिस्तानी विमान नष्ट
किस्तानी विमानों ने गुजरात में ओखा बन्दरगाह
किया। कोई क्षति नहीं हुई।

तानी वायसेना ने अमृतसर तथा पठानकोट पर तीन
नगर पर एक बार हमला किया। असैनिक हवाई
भी हमला किया।

न ने छम्ब में दो इन्फेन्ट्री ब्रिगेड तथा एक टैंक
किया। भारतीय सेनाओं ने हमला खदेड़
टैंक ध्वस्त कर डाले।

नोआखाली क्षेत्र में फेनी पर कब्जा हो गया था।

भारतीय थलसेना कनाचक क्षेत्र से सियालकोट ज़िले में ६ किलोमीटर घुस गई तथा उसने चार और गांवों पर अधिकार कर लिया था।

जम्मू, पठानकोट तथा अमृतसर सीमाक्षेत्रों में भारतीय थलसेना ने अनेक छोटे हमले किए।

पूर्वी क्षेत्रों में भारतीय नौसेना ने शत्रु की कई गनबोट बेकार कर दीं और विमानवाहक से उड़कर नौसैनिक विमानों ने खुलना, चलना तथा मगला में सैनिक ठिकानों पर हमले किए।

भारत ने बांगला देश को मान्यता प्रदान की।

७ दिसम्बर

भारतीय वीरों ने सिलहट, जैसोर तथा सोनमगंज को मुक्त कराया।

पश्चिम में भारतीय सेनाओं ने छम्ब के पूर्व के क्षेत्र पर और साम्बा तथा माधोपुर के बीच २० पाकिस्तानी चौकियों पर अधिकार किया। सेमकरण तथा हुसैनीवाला के बीच में १५ वर्ग किलोमीटर पर, सिन्ध में कालेकेग तथा जालेवी पर और बाड़मेर क्षेत्र में पाकिस्तानी क्षेत्र के ४४ किलोमीटर भीतर भागन तथा डामी पर कब्जा कर लिया था।

गया।

भारतीय नौसैनिक विमानों ने शत्रु के ३ गनबोट डुबाए और चटगांव में सैन्य संस्थानों पर हमले किए।

भारतीय जवानों ने प्रतापपुर में दो और चौकियों पर तथा पुंछ क्षेत्र में ६ चौकियों पर कब्जा किया। उन्होंने उड़ी क्षेत्र के दक्षिण में एक चौकी पर, गुलमर्ग के पश्चिम में एक चौकी पर और बीकानेर क्षेत्र में सीमा के १३ किलोमीटर भीतर रुकनपुर पर अधिकार कर लिया।

६ दिसम्बर

भारतीय जवानों ने करगिल के निकट लेह सड़क पर स्थित पांचों ऊंची चौकियां अपने कब्जे में कर लीं। मुन्नवर तवी के पूर्व में पाकिस्तानी चौकी हमारे हाथ में आ गई। सियालकोट में हमारे जवान ६ किलोमीटर और आगे बढ़ गए। भारतीय वायुसेना के विमानों ने बदर, नया छोड़ तथा छोड़ में टैंकों, मोटरगाड़ियों तथा तोपों का विनाश किया।

बांगला देश में भारतीय नौसैनिक खुलना जिला मुख्यालय से २४ किलोमीटरदूर रह गए थे। पूर्वी बांगला देश में एक नदी घाट नगर पर कब्जा किया और हमारे हवाई हमलों से ५०० पाकिस्तानियों सहित एक स्टीमर डूब गया। ढाका जाने का मेघना नदी मार्ग भारतीय नियंत्रण में आ गया। घोषणा की गई कि ४-५ दिसम्बर की रात भारतीय नौसेना ने विशाखा-पतनम के निकट पाकिस्तानी पनडुब्बी 'गाजी' को डुबो दिया गया है।

१० दिसम्बर

सिल्हट-कोमिला क्षेत्र में भारतीय सैनिकों ने आशुगंज में मेघना नदी पार कर ली। ये दिनाजपुर पर अन्तिम धावा करने वाले थे। रंगपुर में उन्होंने दुराह तथा बाड़ाचगरान पर कब्जा कर लिया। कुश्तिया के बाहर लड़ाई चल रही थी।

११ दिसम्बर

भारतीय थलसेना ने रंगपुर क्षेत्र में कुश्तिया तथा आठ अन्य नगरों पर और अन्य क्षेत्र में चार नगरों मैमनसिंह, हिली, जमालपुर तथा नोआखली पर कब्जा कर लिया। नदियों के रास्ते भागते हुए शत्रु सैनिकों पर हमले करते हुए भारतीय वायुसैनिक विमानों ने खुलना तथा बारीसाल में छ: मंझले जहाज तथा १० स्टीमर और सिराजगंज में छ: नौकाएं डुबाई।

जैसलमेर क्षेत्र में हमारे जवान शत्रु क्षेत्र में पांच-छ: मील आगे बढ़े।

१२ दिसम्बर

के अतिरिक्त, डेरा बाबा नानक क्षेत्र में कोट दोआबा तथा ठकिया खानपुर की चौकियों पर भी हमारा कब्जा हो गया था। फाजिल्का क्षेत्र में सुलेमानकी के उत्तर में रगेवाला तथा मुअज्जम दो चौकियों पर भारतीय सेना ने अधिकार किया। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के निर्णय के अन्तर्गत छाड़बेट को पाच साल पहले पाकिस्तान को दिया गया था; अब उस पर भारतीय सेना ने अधिकार कर लिया था।

१३ दिसम्बर

जनरल मानिकशा ने तीसरी बार ढाका के सैनिकों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। तंगेल नगर पर अधिकार। खुलना व मैनामति में लड़ाई तथा ढाका तोपों की मार के क्षेत्र में आ गया। मैमनसिंह की ओर से प्रस्थान करने वाले सैनिकों ने तनगैल को मुक्त करा दिया। रंगपुर दिनाजपुर क्षेत्र में लखीमपुर नगर भी मुक्त हो गया। उत्तरीय क्षेत्र में पंचबीबी को मुक्त कराया और पाक सेना के डिवीजन मुख्यालय बोगरा की चौकियों पर भारतीय सेना पहुच गई। अनेक मोटर और बोट जहाज जो गोलन्दा घाट की ओर ले जाए जा रहे थे नष्ट कर दिए। रंगपुर हवाई अड्डा तथा सयँदपुर हवाई पट्टी ध्वस्त कर दी गई। सवाईमाधोपुर क्षेत्र में शत्रु के ७ पैटन टैंक नष्ट कर दिए और २ टैंक अच्छी हालत में पकड़ लिए गए। करगिल क्षेत्र में शत्रु की २ चौकियों पर कब्जा किया गया इस तरह से इस क्षेत्र में पाक की २३ चौकियों पर कब्जा किया गया। पुंछ क्षेत्र में हाजीपुरा करसी सड़क पूरी तरह से ध्वस्त कर दी। डेरा बाबा नानक क्षेत्र में शत्रु की फतेहपुर चौकी पर

बांगला देश आजाद हो जाने की घोषणा की। भारत सरकार ने पश्चिमी पाकिस्तान के सभी मोर्चों पर शुक्रवार की शाम ८ बजे से एक तरफा युद्ध-विराम की घोषणा कर दी। इस सिलसिले में प्रधानमन्त्री ने श्री निक्सन को सूचित किया कि भारत किसी अन्य देश का हिस्सा नहीं लेना चाहता। श्री स्वर्णसिंह ने इस बारे में सुरक्षा परिषद् को सूचना दी।

१७ दिसम्बर

जनरल याहिया खां ने भारत का युद्ध विराम प्रस्ताव मान लिया। और रात के आठ बजे सभी मोर्चों पर पाकिस्तान का युद्ध समाप्त हो गया। बांगला देश में सभी पाकिस्तानी सैनिकों तथा रजाकारों को युद्ध बन्दी] बनाने का काम पूरा कर लिया।

क्या पाया, क्या खोया !

✿ ✿

भारतीय हताहत सैनिकों की संख्या

	पूर्वी मोर्चा	पश्चिमी मोर्चा	योग
मृत	१०२१	१२८६	२३०७
घायल	२९१५	३२४८	६१६३
लापता	८९	२०७४	२१६३
योग	४०२५	६६०८	१०६३३

ध्वस्त विमान तथा युद्धपोत

	पाकिस्तान	भारत
विमान	९४	४५
टैंक	२४४	७३
युद्धपोत	—	१
विध्वंसक	२	—
सुरंग भेदक	२	—
पनडुब्बी	२	—
गनबोट	१६	—
अन्य	१२	—

पाकिस्तान के कुल २०७ टैंक पश्चिमी मोर्चे तथा ३७ पूर्वी मोर्चे पर नष्ट हुए एवं ६६ टैंक पश्चिमी तथा ७ पूर्वी क्षेत्र में नष्ट हुए ।

युद्ध जैसे दुस्साहस का प्रयास किया तो हमारी सेना,
मुंहतोड़ जवाब देगी।

सरदार स्वर्णसिंह ने यू० एन० ओ० में भारत की नी
सही प्रतिनिधित्व किया और वित्तमंत्री श्री वाई० एस० च
तथा अन्य सभी राजनीतिज्ञों ने एकसूत्र में आबद्ध होक
का मुकाबला किया। वस्तुतः इस युद्ध में परस्पर भेद
भुलाकर सारा राष्ट्र एक हो गया था।

शाबाश जवान

थल-सेना दिवस १५ जनवरी १९७२ के अवसर पर प्राप्त कुछ संदेश हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

राष्ट्रपति

पाकिस्तान की मिलिटरी सत्ता ने हम पर जो युद्ध थोपा था भारतीय थलसेना ने उसे गौरव के साथ जीता है। हमारे अफसरों तथा जवानों के रणकौशल एवं वीरता की देश तथा विदेशों में सराहना हुई है। उन्होंने अपने शौर्यपूर्ण कारनामों तथा भद्र व्यवहार से सभी का मन भी जीता है।

थलसेना दिवस के इस शुभ अवसर पर मैं भारतीय थलसेना के सभी अफसरों और जवानों को बधाई देता हूं तथा मंगलमय भविष्य की कामना करता हूं।

—वी० वी० गिरि

प्रधान मंत्री

सभी भारतीयों को थलसेना पर गर्व है। एक बार फिर यह सिद्ध हो गया है कि यह एक श्रेष्ठ लड़ाकू सैन्य शक्ति है। युद्ध के क्षेत्र में उच्च अनुशासन, रणकौशल तथा उत्कृष्ट सामरिक नीति और विजय पर भी गंभीर तथा विनम्र बने रहना

करता हूं कि राष्ट्र उनके पीछे है। मैं थलसेना दिवस पर उन्हें बधाई देता हूं।

—जगजीवन राम

थलसेनाध्यक्ष

आज थलसेना दिवस है और मुझे थलसेना के सभी रेंकों तथा उनके परिवारों और हमारे साथ सेवारत सैनिकों को बधाई देते हुए हर्ष हो रहा है।

गत वर्ष थलसेना को युद्ध का सामना करना पड़ा अथवा वह पूरे वर्ष युद्ध जैसे वातावरण में रही। आप लोगों को अपने परिवारों तथा घरों से दूर निर्जन क्षेत्रों तथा विषम मौसम में देश की सुरक्षा हेतु जाना पड़ा। आज आप लोगो की उपलब्धियों पर जितना हर्ष मुझे है शायद ही किसी को हो।

आपने युद्ध को झंझावत को वहन किया तथा बिना किसी शिकायत के सभी दुखों और एकाकीपन को सहर्ष सहन किया। आपको जो जिम्मेदारियां सौंपी गईं आपने उन्हे अभूतपूर्व ढंग से निभाया। मैं आप लोगों को बधाई देता हूं।

मुझे दुख है कि मैं आपको छावनियों में सामान्य जीवन व्यतीत करने हेतु सीमांत क्षेत्रों से शीघ्र वापसी का वचन नहीं दे सकता क्योंकि खतरे के बादल अभी छंटे नही और आज भी हमारी सीमाओं पर परिस्थिति अनुकूल नही है। मुझे विश्वास है कि आप लोग भविष्य में भी उसी जोश के साथ अपने कर्तव्य को निभायेंगे जिस जोश के साथ आपने अपनी विगत परम्परायें बनाईं।

देश को आपकी उपलब्धियों तथा व्यवहार पर गव
विश्वास है कि आपमें से प्रत्येक अपनी सेना का उच्च
् रखेगा।

युद्ध अभिशाप के साथ हानियों और दुखों के पहाड़
में भी अपने शहीद तथा घायल सहयोगियों के रूप
शाप को सहन करना पड़ा है। आज हमें संकल्प कर
विष्य में हमारा व्यवहार उसी स्तर का रहेगा जो
मनेबनाया है ताकि हमारे शहीद सहयोगियों का बलि
न जाए।

शाबाश, आप लोगों को शुभ कामनायें !

—एस. एच. एफ. जे. माने

परमवीर चक्र विजेता

✿ ✿

फ्लाइंग आफिसर निर्मल जीतसिंह सेखों

श्री सेखों परमवीर चक्र पाने वाले वायुसेना के प्रथम सदस्य हैं। उन्हें यह अलंकरण मरणोपरांत दिया गया है।

सैनिकों के लिए देश का सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र ही है।

श्री सेखों १४ दिसम्बर, १६७१ को श्रीनगर हवाई अड्डे पर तैनात थे। उस दिन ६ पाकिस्तानी सेबर जेटों ने श्रीनगर हवाई अड्डे पर हमला किया। गोलीवर्षा के दौरान हवाई पट्टी से विमान उड़ाना जोखिम भरा कदम था। किन्तु श्री सेखों ने प्राणों की परवाह न करते हुए अपने नैट विमान के बल पर इन छहों पाकिस्तानी सेबर जेटों का अकेले मुकाबला करने का निश्चय किया।

श्री सेखों ने दुश्मन के एक सेबर जेट को गिरा दिया और दूसरे को क्षतिग्रस्त कर दिया, जो आग लगने के बाद पाक सीमा की ओर भाग निकला। इन सेबर जेटों की सहायता के लिए दुश्मन के ४ और सेबर जेट आ गए। अकेले नैट की ४ सेबर जेटों से जोरदार लड़ाई छिड़ गई। मंत्र्या के बल के द्वारा शत्रु ने अनुकूल स्थिति बना ली। श्री सेखों के नैट में दुश्मन के विमानों की तोपों की मार से आग लग गई, किन्तु उन्होंने संघर्ष जारी रखा। अन्त में श्री सेखों के भी गोली लग गई, जिससे वह

वीरगति को प्राप्त हुए।

मृत्यु की साक्षात् उपस्थिति के बावजूद फ्लाइंग आफिसर ने जिस अद्भुत शौर्य, उच्चतम साहस, विमान-चालन में दक्षता, संकल्प तथा कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया है, उससे वायुसेना की परम्परा में नया आयाम स्थापित हुआ है।

श्री निर्मलजीत सिंह

१७ जुलाई १६४५ को जन्मे श्री निर्मलजीत सिंह ४ जून १६६७ को वायुसेना की उड़ान (चालक) शाखा में भर्ती हुए थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा खालसा हाई स्कूल मोही (लुधियाना जिला) में हुई थी। बाद में उन्होंने डी० ए० वी० इंटर कालेज, आगरा तथा टेक्निकल कालेज, दयालबाग में भी शिक्षा पाई। उनका १४ फरवरी १६७१ को विवाह हुआ था।

उनके पिता भी वायुसेना में थे। अब वह इसेवाल गांव (जिला लुधियाना) में खेती करते हैं। श्रीमती मनजीत निर्मलजीत सिंह लुधियाना में रहती हैं। फ्लाइंग आफिसर के एकमात्र भाई सुखनिन्द्र सिंह कृषक हैं।

मेजर होशियार सिंह

गत १५ दिसम्बर को ३ ग्रेनेडियर्स को बसंतार नदी (शकरगढ़ सेक्टर, पश्चिमी मोर्चे पर) के पार मोर्चा लगाने का आदेश दिया गया। मेजर होशियार सिंह बाईं अग्रिम कम्पनी का संचालन कर रहे थे। उन्हें दुश्मन की एक मजबूत चौकी जसाल पर कब्जा करना था। आगे बढ़ते समय उनकी कम्पनी पर गोलीवर्षा हुई। किन्तु उन्होंने निडरता के साथ अपने जीवन

की परवाह न करते हुए सैनिकों का हौसला बढ़ाया और अन्त में लक्ष्य पा लिया। शत्रु ने १६ व १७ दिसम्बर को तीन बार जवाबी हमले किए किन्तु शत्रु की तोपों व टैंकों की मार के बावजूद उन्होंने कब्जे में लिए गए क्षेत्र को छोड़ा नहीं। शत्रु को भारी क्षति के बाद हटना पड़ा।

सैकण्ड लेफ्टिनेंट अरुण क्षेत्रपाल

१६ दिसम्बर को बसंतार नदी के पास हुई टैंकों की भीषण लड़ाई हुई थी, जिसमें अरुण क्षेत्रपाल ने पाकिस्तान द्वारा झोंकी गई भारी तोपखाने की पूरी रेजीमेंट का कम टैंक होते हुए भी डटकर मुकाबला किया। उन्होंने अपने टैंक में आग लग जाने के बावजूद उसे छोड़ा नहीं और अपनी तोप से पाकिस्तानी टैंकों को क्षतिग्रस्त करना जारी रखा। वह स्वयं बुरी तरह घायल होने पर भी बहादुरी से डटे रहे। उनके टैंक पर फिर गोला लगा, जिससे उन्हें वीरगति प्राप्त हुई।

लांस नायक अलबर्ट एक्का

उन्होंने पूर्वी मोर्चे पर गंगासागर के पास शत्रु के छक्के छुड़ाए। उन्होंने सुरक्षा की परवाह न करते हुए एक बंकर में छिपे हुए दो शत्रु सैनिकों की हत्या करके आग उगलती लाइट मशीनगन पर कब्जा किया, जिससे उनके साथी सैनिक आगे बढ़ सकें। उन्होंने अद्भुत शौर्य दिखाते हुए एक के बाद एक सभी बंकरों से शत्रुओं का सफाया कर दिया। उन्हें मरणोपरांत अलंकरण दिया गया है।

परिशिष्ट-७

महावीर चक्र विजेता

❀ ❀

१९७१ के भारत-पाक युद्ध में थल, जल अथवा आकाश
शत्रु का मुकाबला करते हुए असीम शौर्य-प्रदर्शन के लिए सश
सेनाओं के निम्न सदस्यों को महावीर चक्र प्रदान किया गया

सेकंड-लेफ्टि० शमशेर सिंह समरा (मरणोपरांत)

मुरापारा पर हमले के दौरान जब कि वह शत्रु स्थिति
केवल २५ गज के फासले पर ही था कि मशीनगन से एक गो
आकर उसके सीने में लगी। किन्तु इसकी परवाह किए बि
इस युवक अफसर ने धावा किया तथा एक हथगोले से शत्रु
तलपर नष्ट कर दिया। तुरन्त ही वह दूसरे तलपर की ओ
दौड़ा किन्तु एक दूसरी गोली ने उसके अभियान को अधू
छोड़ दिया। दम तोड़ते समय हथगोला उसके हाथ में ही था
उसका बलिदान लक्ष्य की प्राप्ति में महान सहाय
रहा।

कमांडर कासरगाड पटनाशेट्टी गोपाल राव,

४-५ दिसम्बर को पश्चिमी बेड़े के एक लघु दल को कराची
क्षेत्र में कार्यवाही के लिए भेजा गया। शत्रु पक्ष से भारी
गोलाबारी के बावजूद भी उनका दल शत्रु के दो युद्धपोत तथा
एक युद्धनाशक डुबाने में सफल हुआ।

शत्रु के पोतों से मुठभेड़ के उपरान्त इस दल ने कराची बन्दर-

गाह पर बमबारी की तथा तेल और अन्य सैन्य प्रतिष्ठानों को क्षति पहुंचाई।

विंग कमांडर रमेश सखराम बेनेगल

इन्हें शत्रु क्षेत्र में टोह का कार्य सौंपा गया। इन्हें अपने लक्ष्यपूर्ति के लिए निरशस्त्र तथा अकेले शत्रु के भीतरी भाग में जाना पड़ा। इन अभियानों द्वारा प्राप्त सूचना से थलसेना, नौसेना तथा वायुसेना की सक्रियाओं के आयोजन में अत्यधिक मदद मिली।

सूबेदार मलकियत सिंह (मरणोपरांत)

इस वीर की बटालियन जैसोर क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण रक्षा स्थिति पर डटी हुई थी। जब शत्रु की इन्फेन्ट्री तथा आर्मर ने हमला किया तो वह एक खाई से दूसरी खाई में अपने जवानों को प्रेरित करने गया। जब शत्रु ५० गज की दूरी पर ही था तो एम एम जी तथा हथगोलों की भारी मार हुई। सूबेदार मलकियतसिंह घायल होने के बावजूद भी रेंगकर आगे बढ़ा और दो मशीन-गन चालकों को मौत के घाट उतारा, तभी शत्रु के टैंक से गोली ने उन्हें शहीद बना दिया।

कमांडर बब्रू वाहन यादव

कमांडर यादव को ४-५ दिसम्बर को पश्चिमी बेड़े की ओर से कराची तट पर बमबारी करने के लिए तैनात किया गया। शत्रु की सैन्य शक्ति का ख्याल किए बिना वह शत्रु की जल सीमा में काफी भीतर तक घुस गया जहां उन्हें शत्रु के दो

युद्ध पोतों से भिड़न्त करनी पड़ी। इस संक्रिया में इनका दल शत्रु के दो विध्वंसक तथा एक सुरंग-विनाशक को डुबाने में सफल हुआ।

विंग कमांडर एच० एस० मंगत

विंग कमांडर मंगत एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन का कमांडर अफसर था। उन्हें शत्रु क्षेत्र में टोह तथा पाकिस्तानी क्षेत्र में सैन्य संस्थानों के चित्र लेने के लिए तैनात किया गया। शत्रु के विमानों को कई स्थानों पर चकमा देकर वह अपने विमान को वापस बेस तक लाए। बेस पर आने पर मालूम हुआ कि उनका विमान बहुत क्षतिग्रस्त हो चुका था। उनके साहसिक, दृढ़ और व्यावसायिक कुशलता से शत्रु क्षेत्र में हमला करने में काफी सहयोग मिला।

लेपिट-कर्नल एच० एच० एस० भवानीसिंह

लेपिट-कर्नल एच० एच० एस० भवानीसिंह ने शत्रु के साथ मुकाबले में अद्भुत साहस, कुशल नेतृत्व और उच्चकोटि की शूरता का परिचय दिया। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अपने जवानों को पाकिस्तानी क्षेत्र में काफी भीतर ले जाकर सफलतापूर्वक चाचड़ो और वीरावाह की चौकियों पर आक्रमण किया। आक्रमण की अदम्य शक्ति का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने चार दिन और रात बिना सोये या आराम किए कार्य किया। उन्होंने अस्त-व्यस्त लड़ाई क्षेत्र में शत्रु की गोलाबारी के बावजूद अग्र- [illegible] १ से लेकर १३ पाकिस्तानियों को बन्दी बनाया। इनकी इस कार्रवाई से शत्रु के एक बड़े भू-भाग पर कब्जा करने में अपनी

सेनाओं को बड़ी मदद मिली और शत्रु को भयभीत किया जा सका।

मेजर दलजीतसिंह नारंग (मरणोपरांत)

मेजर दलजीत सिंह नारंग ने शत्रु के मुकाबले में अद्भुत वीरता का परिचय दिया। इन्हें एक पैदल बटालियन सहित ४५ कैवेलरी स्क्वाड्रन की कमान सौंपी गई थी और कहा गया था कि वे जैसोर क्षेत्र में भारतीय भू-भाग पर हमला करने से शत्रु को रोकें। जब शत्रु की पैदल और बख्तरबन्द सेना ने हमला किया तो उन्होंने बहादुरी और चालाकी का परिचय देते हुए अपने स्क्वाड्रन को सभाला और शत्रु द्वारा जोरों से फायर किए जाने के बावजूद अपने टैंक की टूरेट पर खड़ होकर गोलाबारी का संचालन किया। उनके साहस, धैर्य और व्यक्तिगत सुरक्षा के प्रति निरपेक्षता ने उनकी टुकड़ी को काफी उत्तेजित किया, जिससे शत्रु को भारी क्षति उठानी पड़ी। इस कार्यवाही के दौरान जबकि स्क्वाड्रन का नेतृत्व कर रहे थे, उन्हें एम० एम० जी० की गोली लगी और उनकी मृत्यु हो गई।

दिलबहादुर छेत्री

राइफलमैन दिलबहादुर छेत्री ने शत्रु के समक्ष विशिष्ट शूरता और अद्भुत कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। आतग्राम पर आक्रमण के समय उसने व्यक्तिगत सुरक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया और निर्भीकतापूर्वक बंकरों में लड़ता रहा। उसने शत्रु के ८ सैनिकों को अपनी खुखरी से मारा और एक मीडियम मशीनगन भी छीनी, जो उसकी कम्पनी को आगे

बढ़ने में बाधक हो रही थी। उसके निश्चय और धैर्य ने उसक
कम्पनी के सभी रैंकों के फौजियों को काफी उत्तेजित किया।

महेन्द्र नाथ मुल्ला (लापता)

१४ वीं ब्रिगेड स्क्वाड्रन केसीनियर आफिसर कैप्टन महेन्
नाथ मुल्ला की कमान में भारतीय नौसेना के दो जहाज 'ईट
किलर अभियान' के लिए तैनात किए गए थे, जिन्हें उत्तरी
अरब सागर में पाकिस्तानी पनडुब्बियों को खोज कर न
करने का कार्य सौंपा गया था। इस अभियान के दौरान
दिसम्बर, १६७१ को भारतीय नौसेना का जहाज 'खुखरी
शत्रु की एक पनडुब्बी के तारपीडो का लक्ष्य बना और डूब
गया। जहाज को छोड़ने का निश्चय कर कैप्टन मुल्ला ने
अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा पर ध्यान न देते हुए अपने जहाज की
कम्पनी की बचाव-व्यवस्था को बड़े शान्तचित्त होकर ब
विधिवत परिवीक्षण किया। बाद में भी, जबकि जहाज डूब
रहा था, उन्होंने तत्काल बुद्धि का परिचय दिया और बचाव-
कार्य का निर्देशन जारी रखा। उन्होंने एक नाविक को अपना
जीवन-रक्षक गीयर दे दिया और खुद अपनी रक्षा से इन्कार
किया। अपने जहाज के अधिकाधिक व्यक्तियों को जहाज
छोड़ने का निर्देश देकर कैप्टन मुल्ला पुनः बचाव कार्य के लिए
पोत के पुल तक गए। इस कार्य को करते हुए उन्हें अपने जहाज

विद्याभूषण वशिष्ट

एक अभियानात्मक स्क्वाड्रन के कमांडिंग आफिसर, विंग
कमांडर वशिष्ट ने ३ दिसम्बर, १९७१ की रात को चंगामंगा
जंगल में शत्रु के ईंधन व अस्त्र भंडारों पर आक्रमण करने के
लिए अपने स्क्वाड्रन के भारी बमवर्षकों के एक दल का नेतृत्व
किया। शत्रु द्वारा नीचे से फायर किए जाने पर भी उन्होंने
कुशलतापूर्वक आक्रमण किया और निर्धारित लक्ष्य को भारी
क्षति पहुंचाई। दूसरी रात को भी उन्होंने लक्ष्य को बुरी तरह
नुकसान पहुंचाया जबकि शत्रु द्वारा नीचे से गोली चलती रही।
पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर स्थित हाजीपीर के दर्रे में शत्रु के
ठिकानों पर आक्रमण करने के लिए ५ दिसम्बर, १९७१ को
उन्होंने बमवर्षकों की एक टुकड़ी का नेतृत्व किया। इस अभि-
यान में कठिनाइयां व खतरे और अधिक बढ़े हुए थे, क्योंकि
लक्ष्य क्षेत्र में नीचे से फायरिंग हो रही थी। साथ ही, पर्वतीय
ऊंचाई क्षेत्र में अपने बड़े विमान को चलाना और टुकड़ी को
कम ऊंचाई पर संचालित करना भी अत्यन्त दुष्कर था। इन
कठिनाइयों के बावजूद विंग कमांडर वशिष्ट ने कुशलतापूर्वक
आक्रमण किया और दुश्मन के ठिकानों को क्षति पहुंचाने में
उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। इन सबके अलावा, उन्होंने
शत्रु के क्षेत्र में काफी दूर तक अन्य कई अभियानों में नेतृत्व
किया था, जहां लड़ाकू विमानों का डर और विमान-ध्वंसक
फायरिंग की भी सम्भावना थी। इन सभी अभियानों में विंग
कमांडर वशिष्ट ने अपने सभी कार्य बिना कोई विमान खोये ही
किए। उन्होंने शत्रु के सुरक्षित ठिकानों पर कई रातों में

लेफ्टि-कमांडर सन्तोषकुमार गुप्ता

६ दिसम्बर, १९७१ को भारतीय नौसेना एयर स्क्वाड्रन के कमांडिंग अफसर लेफ्टि-कमांडर सन्तोषकुमार गुप्ता ने आई० एन० एस० विक्रांत से शत्रु के जहाजों पर ११ घातक प्रहार किए। इसके अलावा बांगला देश के विभिन्न क्षेत्रों में शत्रु से समुद्री संसाधनों की रक्षा भी की। शत्रु द्वारा इनके विमान को गोली लगने के बाद भी अपने प्राणों की परवाह किए बिना इन्होंने आक्रमण जारी रखा। इन्होंने अपने दुर्घटनाग्रस्त विमान को विमानवाहक पोत के डेक पर बड़ी कुशलता से उतार कर अपने बुद्धिकौशल का परिचय दिया।

लेफ्टि-कमांडर जोसेफ पियस अल्फ्रेड नोरोन्हा

८ से ११ दिसम्बर के दिनों में लेफ्टि-कमांडर जोसेफ पियस अल्फ्रेड नोरोन्हा भारतीय नौपोत पनवेल पर नियुक्त थे। इन्हें मंगला तथा खुलना के शत्रु ठिकानो पर आक्रमण करने का कार्य सौंपा गया था। इन्होंने अपने जहाज का बड़ी कुशलता से संचालन किया और शत्रु को खदेड़ते हुए अपने साथियों को प्रोत्साहित भी किया।

विंग कमांडर सिसिलवियान पारकर

आफिसर कमांडिंग विंग कमांडर ने शत्रु पर आक्रमण के समय लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया। जब ये शत्रु पर आक्रमण करके लौट रहे थे तो शत्रु के सैबर विमानों ने इन पर हमला कर दिया। इसी लड़ाई के दौरान विंग कमांडर पारकर ने एक सैबर विमान को मार गिराया तथा दूसरे विमान को दुर्घटनाग्रस्त कर दिया। एक अन्य आक्रमण में विंग

डर ने शत्रु के तेलशोधक कारखाने को नष्ट किया। पारकर का कार्य अत्युत्तम, बहादुरी तथा दृढ़प्रतिज्ञा की भावनाओं से पूर्ण रहा।

स्क्वाड्रन लीडर रवीन्द्रनाथ भारद्वाज

सद्दाघ्-बमवर्षक स्क्वाड्रन के वरिष्ठ पायलट स्क्वाड्रन लीडर भारद्वाज ने शत्रु के विभिन्न ठिकानों पर आक्रमण के समय अपने साथियों का नेतृत्व किया। ५, दिसम्बर, १९७१ को शत्रु के हवाई अड्डे को नष्ट करने के एक अभियान दल का इन्होंने सफल नेतृत्व किया। यद्यपि शत्रु ने अपनी सुरक्षा का विमानभेदी तोपों तथा अन्य साधनों से मजबूत प्रबन्ध कर रखा था तथापि इन्होंने शत्रु के तेलवाहक विमान को नष्ट कर दिया। इसी प्रकार ७ दिसम्बर, १९७१ को एक अन्य स्थान पर भी इन्होंने घातक प्रहार किया। १० दिसम्बर, १९७१ को छम्ब क्षेत्र में इन्होंने शत्रु पर बमवर्षा करके अपनी थलसेना की सहायता भी की। यहा पर इन्होंने हवाई लड़ाई के दौरान शत्रु के सैबर विमानों को भी नष्ट किया और स्वयं अपने विमान के सहित सकुशल लौट आए।

ब्रिगेडियर अनन्त विश्वनाथ नाटू

ब्रिगेडियर नाटू को शत्रु के दांत खट्टे करने के लिए अपने जवानों का मनोबल ऊंचा करने, उच्च नेतृत्व प्रदान करने तथा अदम्य साहस के लिए महावीर चक्र प्रदान किया। युद्ध के ...न इनका ब्रिगेड पुंछ क्षेत्र में सेवारत था। शत्रु ने इन पर ...री आर्टिलरी के साथ आक्रमण किया। परन्तु इन्होंने बड़ी ...दुरी से शत्रु का मुकाबला किया और एक चौकी भी अपने हाथ से नहीं जाने दी।

..फ्टि-कर्नल राजकुमार सिंह

लेफ्टि-कर्नल सिंह को उच्च नेतृत्व, बहादुरी तथा अदम्य साहस के लिए महावीर चक्र प्रदान किया गया। इन्हें जैसोर क्षेत्र की महत्वपूर्ण चौकियों पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया था। इन्होंने इस कार्य को बड़ी सैन्यकुशलता से पूरा किया। इन्होंने शत्रु के तीन बड़े आक्रमणों को विफल कर दिया और शत्रु को भारी नुकसान पहुंचाया।

मेजर जयवीर सिंह

इन्होंने अदम्य साहस, दृढ़संकल्प, बहादुरी, उच्च नेतृत्व तथा अपने कर्तव्य का पालन करते हुए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। जब शत्रु ने छम्ब क्षेत्र में जबर्दस्त हमला किया तो इस नवयुवक कम्पनी कमांडर ने अपने छोटे-छोटे शस्त्रों से शत्रु का दृढ़ता से मुकाबला किया। अगले दिन इनके प्रेरणा-दायक नेतृत्व के फलस्वरूप इनके साथी अपने मोर्चे पर शत्रु के भारी दबाव के बावजूद भी डटे रहे। इन्होंने शत्रु के दो अन्य आक्रमणों को भी विफल कर दिया और इस लड़ाई में अपनी एक खोई हुई चौकी पर भी पुनः अधिकार कर लिया।

मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी

इन्होंने अत्यन्त बहादुरी, कुशलता तथा उच्च कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया। शत्रु के टैंकों द्वारा किए गए ...पल आक्रमणों के समय में भी इन्होंने लोंगेवाला चौकी की ...पने अदम्य साहस प्रेरणादायक उदाहरण तथा रक्षात्मक ढंग ...रक्षा की और अपनी सहायता के लिए आई दूसरी कुमक के ...हुंचने तक शत्रु का दृढ़ता से मुकाबला किया। इन्होंने शत्रु

प्रहार किए। एक हमले में तो इन्होंने पाकिस्तानी वायुसेना के सरगोधा स्थित संस्थान को बुरी तरह से नुकसान पहुचाया। छम्ब क्षेत्र में अपनी थलसेना की सहायता करते हुए इन्होंने दिन में ही शत्रु की चार तोपों में से तीन को मुनव्वर तवी के पास ही शांत कर दिया, जो हमारी थलसेना को आगे बढ़ने से रोक रही थीं। शत्रु ने इन दोनों स्थानों पर अपनी सुरक्षा का सबल प्रबन्ध कर रखा था। इनके इस कार्य से इनके साथियों को भी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मिला। इन कार्यों के सम्पन्न करने में इन्होंने अपनी बुद्धिकुशलता, बहादुरी तथा वायुसेना के ऊंचे आदर्शों की परम्परा का परिचय दिया।

ब्रिगेडियर कृष्ण स्वामी गौरीशंकर

इनके ब्रिगेड को डेरा बाबा नानक क्षेत्र में शत्रु की महत्वपूर्ण चौकियों को, जिनकी सुरक्षा का शत्रु ने कड़ा प्रबन्ध कर रखा था, अपने अधिकार में लेने का कार्य सौंपा गया था। ब्रिगेडियर गौरीशंकर ने इस कार्य को अपनी बहादुरी, दिलेरी तथा अदम्य साहस से पूर्ण किया। युद्ध के दौरान वे हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहकर अपने जवानों का निर्देशन करते रहे। शत्रु ने अपनी सुरक्षा के लिए टैंक, मध्यम दर्जे की मशीनगनें और आर्टिलरी को इसमें झोंक दिया। ऐसे समय में अपने जवानों का बड़ी बहादुरी से मार्गदर्शन किया। इन्होंने शत्रु के हमले को विफल करने के साथ-साथ उसको भारी नुकसान भी पहुंचाया।

लेफ्टि-कर्नल कश्मीरीलाल रतन

शत्रु के आक्रमण को विफल करने के लिए लेफ्टि-कर्नल रतन ने अपने जवानों को प्रेरणादायक नेतृत्व प्रदान किया।

पर घातक प्रहार किया और शत्रु को पीछे हटने के लिए
कर दिया। शत्रु भागते हुए अपने १२ टैंक भी पीछे छोड़

मेजर चौवांग रिनोहोन

इन्होंने अपने अदम्य साहस, पहलबुद्धि नेतृत्व तथा क
परायणता का उदाहरण प्रस्तुत किया। इन्हें परातपुर
युद्धविराम रेखा से लगी शत्रु की चौकियों पर अधिकार
का कार्य सौंपा गया था। अपनी सैन्य कुशलता, नेतृत्व
अद्वितीय बहादुरी के कारण इन्होंने शत्रु के दांत खट्ट
दिए। इनके जवानों ने ऊंचाई पर बसे इस जटिल प्रदेश
शत्रु की ६ चौकियों को अपने अधिकार में ले लिया।

विंग कमांडर पद्मनाभा गौतम

बमवर्षक स्क्वाड्रन के कमांडिंग आफिसर विंग कमा
पद्मनाभा गौतम, महावीर चक्र, वायु मेडल ने शत्रु के भी
ठिकानों पर आक्रमण के समय अपनी स्क्वाड्रन का नेत
किया। इन्होंने ५ दिसम्बर तथा ७ दिसम्बर १९७१ की रा
को शत्रु के मियांवाली हवाई अड्डे पर घातक प्रहार कि
एक अन्य हमले में विंग कमांडर गौतम ने चार बार राके
तथा तोपों से मिंटगुमरी-रायविंड क्षेत्र के रेलवे मार्शलिंग य
पर सफल प्रहार किए। इन आक्रमणों के समय विंग कमां
गौतम ने अदम्य साहस तथा प्रेरणादायक नेतृत्व का परिच
दिया और वायुसेना की आदर्श परम्पराओं को कायम रखा।

विंग कमांडर मनमोहन बीरसिंह तलवार

बमवर्षक स्क्वाड्रन के कमांडिंग अफसर विंग कमांड
तलवार ने पांच दिनों ... रात दिन शत्रु के ठिकानों पर घात

हार किए। एक हमले में तो इन्होंने पाकिस्तानी वायुसेना के रगोधा स्थित संस्थान को बुरी तरह से नुकसान पहुंचाया। म्ब क्षेत्र में अपनी थलसेना की सहायता करते हुए इन्होंने न में ही शत्रु की चार तोपों में से तीन को मुनव्वर तवी पास ही शांत कर दिया, जो हमारी थलसेना को आगे बढ़ने रोक रही थीं। शत्रु ने इन दोनों स्थानों पर अपनी सुरक्षा । सबल प्रबन्ध कर रखा था। इनके इस कार्य से इनके ।थियों को भी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मिला। इन कार्यों के सम्पन्न करने में इन्होंने अपनी बुद्धिकुशलता, बहादुरी तथा वायुसेना के ऊंचे आदर्शों की परम्परा का परिचय दिया।

ब्रिगेडियर कृष्ण स्वामी गौरीशंकर

इनके ब्रिगेड को डेरा बाबा नानक क्षेत्र में शत्रु की महत्वपूर्ण चौकियों को, जिनकी सुरक्षा का शत्रु ने कड़ा प्रबन्ध कर रखा था, अपने अधिकार में लेने का कार्य सौंपा गया था। ब्रिगेडियर गौरीशंकर ने इस कार्य को अपनी बहादुरी, दिलेरी तथा अदम्य साहस से पूर्ण किया। युद्ध के दौरान वे हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहकर अपने जवानों का निर्देशन करते रहे। शत्रु ने अपनी सुरक्षा के लिए टैंक, मध्यम दर्जे की मशीनगनें और आर्टिलरी को इसमें झोंक दिया। ऐसे समय में अपने जवानों का बड़ी बहादुरी से मार्गदर्शन किया। इन्होंने शत्रु के हमले को विफल करने के साथ-साथ उसको भारी नुकसान भी पहुंचाया।

लेफ्टि-कर्नल कश्मीरीलाल रतन

शत्रु के आक्रमण को विफल करने के लिए लेफ्टि-कर्नल रतन ने अपने जवानों को प्रेरणादायक नेतृत्व प्रदान किया।

राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का भी इन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ परिचय दिया। इनकी बटालियन को पुंछ क्षेत्र की महत्वपूर्ण चौकियों को अपने अधिकार में बनाए रखने का कार्य सौंपा गया था। इन्होंने सुरक्षा के लिए उच्च सैन्य कुशलता का परिचय दिया। अपने जीवन की चिंता किए बिना वे अपने जवानों के पास शत्रु के आक्रमण को विफल करने के लिए पहुंचते रहे और अन्त में अपने कार्य में सफल हुए।

लेफ्टि-कर्नल रतननाथ शर्मा

इन्होंने शत्रु की महत्वपूर्ण चौकियों को अपने अधिकार में करने के लिए अद्वितीय साहस, पहलबुद्धि तथा उच्च नेतृत्व का परिचय दिया। इस कार्य को सम्पन्न करने के दौरान इन्होंने अपने साथियों के सामने एक आदर्श उपस्थित किया। शत्रु को भारी नुकसान पहुंचाते हुए इन्होंने अग्रिम पंक्ति में रह कर अपने जवानों को कुशल नेतृत्व भी प्रदान किया।

कैप्टन प्रदीपकुमार गौड़

थलसेना के एक अफसर कैप्टन प्रदीपकुमार गौड़, ६६० ए०ओ०पी०स्क्वाड्रन, आर्टिलरी को महावीर चक्र मरणोपरांत प्रदान किया गया। पश्चिमी क्षेत्र में वे आर्टिलरी का दिशा निर्देश कर रहे थे जब कि पाकिस्तान के सैबर विमानों ने उन पर गोली चलाई।

लेफ्टि-कर्नल सुरेन्द्र कपूर

लेफ्टि-कर्नल सुरेन्द्र कपूर को जैसोर क्षेत्र में सुरक्षा पंक्ति की देख-भाल का कार्य सौंपा गया था। इन पर तीन दिनों में ५ आक्रमण हुए, जिनको इन्होंने विफल कर दिया और शत्रु को

भारी नुकसान पहुंचाया।

कमांडर मोहन नारायण राव

कमांडर मोहन नारायण राव सामंत को अपनी स्क्वाड्रन को अत्यन्त जटिल, टेढ़े-मेढ़े तथा अपरिचित मार्गों से ले जाने और मंगला तथा उनके बाद खुलना में शत्रु को भारी हानि पहुंचाने के कारण महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। प्रशस्ति में कहा गया है कि कमांडर इस कार्य को सम्पन्न करते समय कई बार बाल-बाल बचे।

विंग कमांडर स्वरूपकृष्ण कौल

लड़ाकू-बमवर्षक स्क्वाड्रन के कमांडिंग आफिसर विंग कमांडर स्वरूपकृष्ण कौल ने बांगला देश के विभिन्न स्थानों के चित्र लेने के लिए स्वेच्छा से अपनी सेवाए अर्पित कीं। इस जोखिमपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने के लिए उन्हें कई बार अपने विमान को जमीन से २०० फुट की ऊंचाई पर भी उड़ाना पड़ा। इन्होंने ऐसे स्थानों के भी चित्र लिए जिनका शत्रु ने सुरक्षा की दृष्टि से कड़ा प्रबन्ध कर रखा था।

अपने सेनाध्यक्षों से मिलिए

हम यहां थल, नौ तथा वायुसेना के तीनों अध्यक्षों का प्रमाणित परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं :

जनरल साम हुरमसजी जमशेदजी मानेकशा

जनरल साम हुरमसजी फ्रामजी जमशेदजी मानेकशा ने ८ जून, १९६९ को थल सेनाध्यक्ष का पद सम्भाला।

आपके पिता डॉक्टर एच० एफ० मानेकशा ने प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान भारतीय चिकित्सा सेवा में कैप्टन के रूप में कार्य किया था। जनरल मानेकशा का जन्म ३ अप्रैल, १९१४ को अमृतसर में हुआ और उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा नैनीताल और बाद में अमृतसर में प्राप्त की।

उन्होंने १९३४ में कमीशन प्राप्त किया। सर्वप्रथम उन्हें रायल स्काट्स के साथ लगाया गया और उसके बाद उन्होंने फ्रन्टियर्स फोर्स राइफल्स में प्रवेश पा लिया। युद्ध से पहले उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान वे बर्मा में थे।

बर्मा के पहले अभियान में उन्होंने जापान के विरुद्ध लड़ाइयों में हिस्सा लिया। सितांग नदी मोर्चे पर उन्होंने जापानियों को रंगून और पीगू की तरफ बढ़ने से रोका। जनरल मानेकशा (उस समय कैप्टन) ने अपनी कम्पनी में उत्साह का संचार किया। अद्वितीय वीरता दिखाने के परिणाम स्वरूप उन्हें वीरतापूर्ण 'मिलिटरी क्रास' पुरस्कार मिला। इस लड़ाई में

उन्हें बहुत सारी चोटें लगी थी, अतः उन्हें भारत पहुंचाना आवश्यक हो गया था।

स्वस्थ होने के पश्चात् जनरल मानेकशा ने स्टाफ कालेज में प्रवेश किया और उत्तर-पूर्व सीमा पर एक ब्रिगेड में ब्रिगेट-मेजर के रूप में भरती हो गए। वे कुछ समय तक स्टाफ कालेज कोटा में प्रशिक्षण पद पर भी रहे। उसके बाद वे दोबारा बर्मा में अपनी रेजिमेंट में जा मिले, जो कि उस समय जनरल स्लिमं के नेतृत्व में रंगून-मांडले मुख्य मार्ग की ओर बढ़ रही थी।

युद्ध समाप्त होने के पश्चात् जनरल मानेकशा हिन्द-चीन में जनरल डाइसो के स्टाफ आफिसर बनकर गए। जहा पर जापानियों द्वारा आत्मसमर्पण कर देने के पश्चात् उन्होंने १०,००० युद्धबंदियों के पुनर्वास में सहायता दी। आस्ट्रेलिया को भारत की युद्ध में सहायता और उपलब्धियों के बारे में परिचित कराने के लिए जनरल मानेकशा को १६४६ में ६ महीने के दौरे पर आस्ट्रेलिया भेजा गया।

वापस आने के पश्चात् जनरल मानेकशा ने सेना मुख्यालय के मिलिटरी आपरेशन डायरेक्टोरेट मे प्रथम श्रेणी के स्टाफ आफिसर के पद पर कार्य करना आरम्भ किया और १६४८ में वे मिलिटरी आपरेशन के निदेशक बने और यह पद जम्मू और काश्मीर के युद्ध के समय भी उन्होंने सम्भाला।

जनरल मानेकशा जनरल के० एस० थिमैया के साथ काश्मीर के सैनिक सलाहकार के रूप में अमरीका भी गए। वे दो साल तक पैदल सेना ब्रिगेड में कमांडर भी रहे और एक वर्ष सेना मुख्यालय मे सैनिक प्रशिक्षण निदेशक भी रहे। १६५७ में उन्हें मेजर जनरल बना दिया गया और वे डिफेंस सर्विस

स्टाफ कालेज वलिंगटन में कमांडेंट के पद पर नियुक्त किए जाने से पूर्व जम्मू-काश्मीर में एक डिवीजन के कमांडर रहे। नवम्बर, १९६२ में वे लेफ्टि०-जनरल बने और चीनी आक्रमण के पश्चात् फौरन ही उन्हें नेफा में कोर कमांडर के रूप में नियुक्त कर दिया गया।

१९६३ में उन्हें पश्चिमी कमान जनरल आफिसर कमांडिंग इन-चीफ नियुक्त किया गया और एक वर्ष पश्चात् उन्हें पूर्वी कमान का प्रधान बनाकर कलकत्ता भेज दिया गया। उन्हें १९६८ में 'पद्म-भूषण' पुरस्कार से विभूषित किया गया।

जनरल मानेकशा इम्पीरियल डिफेंस कालेज, ब्रिटेन के स्नातक हैं और पहले भारतीय कमीशन प्राप्त अधिकारी हैं, जो कि सेनाध्यक्ष बने। उन्होंने अपना प्रशिक्षण भारतीय सेना अकादमी देहरादून में प्राप्त किया। वे अकादमी के उन प्रथम ४० कैडेटों में से एक थे, जिन्होंने १९३२ में अकादमी खोले जाने पर सर्वप्रथम इसमें दाखिला लिया।

पैदल सेना अधिकारी जनरल मानेकशा ८वीं गोरखा राइफल्स के कर्नल हैं।

१९७१ के भारत-पाक युद्ध में उत्कृष्ट नेतृत्व के लिए उन्हें 'पद्म विभूषण' से अलंकृत किया गया है।

एडमिरल सरदारीलाल मथुरादास नन्दा

एडमिरल एस० एम० नन्दा ने २८ फरवरी, १९७० को ... ए० के० चटर्जी के स्थान पर नौसेनाध्यक्ष का पद ... इनका जन्म १९१५ में हुआ और अक्टूबर, १९४१ में, ... रायल इंडियन नेवल वालन्टियर रिज़र्व में प्रवेश किया।

नौसेना मे भर्ती होने से पहले उन्होंने बन्दरगाह न्यास, कराची
''र कार्य किया।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात एडमिरल नन्दा ने कई महत्व-
्णं पदों पर कार्य किया और विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त
िए। १६४८ में उन्होंने लदन में आई० एन० एस० 'दिल्ली',
ौसेना के पहले जंगी जहाज में प्रथम लेफ्टि० का पद सभाला।
ारत लौटने के पश्चात उन्होंने २ वर्ष तक (१६४६-५१)
ौसेना मुख्यालय में डायरेक्टर आफ पर्सनेल सर्विसेज के रूप में
ार्य किया। इसके पश्चात आप आई० एन० एस० 'रणजीत'
 कमाडर बने। दुबारा उन्हे नौसेना मुख्यालय में नियुक्त कर
या गया। यहां वे चीफ आफ पर्सनेल बने और बाद मे उन्हें
मोडोर नियुक्त कर दिया गया।

१६५७ में एडमिरल नन्दा ने जगी जहाज आई० एन०
स० 'मैसूर' समुद्र में उतारा। इसके पश्चात उन्हें नौसेना गोदी
िस्तार योजना, बम्बई में महानिदेशक के पद पर नियुक्त कर
या गया। १६६१ में अति विशिष्ट सेवा पदक से विभूषित
्या गया। इसके पश्चात इन्होंने इम्पोरियल डिफेंस कालेज,
दन में प्रशिक्षण प्राप्त किया और वहां से वापस लौटने पर
ौसेना मुख्यालय में चीफ आफ मेटिरियल का पद संभाला,
ो कि कमोडोर के बराबर होता है।

एडमिरल नन्दा मई, १६६२ में नौसेना के उपाध्यक्ष बने,
ो कि रीयर एडमिरल के पद के समान होता है। दिसम्बर
६६१ में उन्हें मझगांव गोदी बम्बई में प्रबन्ध निदेशक नियुक्त
या गया, जहां उन्होने १८ महीने तक कार्य किया। इसी
ौरान उन्होंने मझगांव गोदी की योजना का पुनर्गठन किया

स्क्वाड्रन संख्या ७ में नियुक्त होने से पूर्व उन्होंने नम्बर १ सर्विस फ्लाइंग स्कूल में नेवीगेटर (दिशा निर्देशक) और फ्लाइंग प्रशिक्षक तथा नम्बर १५२ आपरेशनल ट्रेनिंग यूनिट में कार्य किया।

बमवर्षक विमानों से लेस स्क्वाड्रन ने १९४४ में जनरल विंगेट की वर्मा में सहायता की। इस कार्यवाही के परिणाम-स्वरूप इम्फाल से घेरा उठा लिया गया था। एयर चीफ मार्शल (उस समय स्क्वाड्रन लीडर थे) ने जून, १९४४ में इस स्क्वाड्रन की कमान संभाली और उसमें लड़ाकू विमान शामिल करके १९४५ में वर्मा में दुबारा कार्यवाही की। इस स्क्वाड्रन ने उत्तर बर्मा से रंगून तक सेना की सहायता की। १९४४ तथा १९४५ में की गई सेवा के बदले उन्हें 'विशिष्ट फ्लाइंग क्रास' से विभूषित किया गया।

युद्ध के पश्चात एयर मार्शल को भारतीय वायुसेना में स्थायी पद दिया गया। स्वतंत्रता के पश्चात उन्होंने रायल एयर फोर्स स्टाफ कालेज एन्डोवेर में प्रशिक्षण प्राप्त किया और कई विशिष्ट पदों—सेना मुख्यालय में डाइरेक्टर आफ प्लान, मंत्रिमंडल के उप सचिव (सेना), ट्रेनिंग कमान के एयर आफिसर कमांडिंग पर कार्य किया। वे विदेश में कई सरकारी शिष्ट मंडलों के सदस्य भी रहे। १९५४ में एक नये वायुयान का परीक्षण करते हुए वे भारतीय वायुसेना के पहले चालक थे जिन्होंने वायुयान को ध्वनि की गति से भी तेज उड़ाया।

१९५७ में उन्हें इंडियन एयर लाइंस का महा प्रबन्धक बना दिया गया और उन्होंने इस पद पर ५ वर्ष कार्य किया। साथ-साथ वे इंडियन एयर लाइंस तथा एयर इंडिया के सदस्य

भी थे। इस समय ही इंडियन एयर लाइंस ने पहली बार ल
कमाया तथा इसका आधुनिकीकरण भी प्रारंभ किया गया

१९६३ में वायुसेना में वापस आने पर श्री लाल ने वा
सेना मुख्यालय में एयर आफिसर इंचार्ज आफ मेन्टेने
पश्चिम वायुसेना कमान के एयर आफिसर कमांडिंग इन-चं
और वाइस चीफ आफ एयर स्टाफ के पदों पर कार्य किया।
प्रत्येक प्रकार के विमान को चला सकते हैं। हाल के भारत-प
युद्ध में उन्हें 'पद्म विभूषण' प्रदान किया गया था। २६ सि
म्बर, १९६९ में उन्हें हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड
नियुक्त कर दिया गया। उनमें वे प्रवन्धक निदेशक थे।

सेनाओं को बड़ी मदद मिली और शत्रु को भयभीत किया जा सका।

मेजर दलजीतसिंह नारंग (मरणोपरांत)

मेजर दलजीत सिंह नारंग ने शत्रु के मुकाबले में अद्भुत वीरता का परिचय दिया। इन्हें एक पैदल बटालियन सहित ४५ कैवेलरी स्क्वाड्रन की कमान सौंपी गई थी और कहा गया था कि वे जैसोर क्षेत्र में भारतीय भू-भाग पर हमला करने से शत्रु को रोके। जब शत्रु की पैदल और बख्तरबन्द सेना ने हमला किया तो उन्होंने बहादुरी और चालाकी का परिचय देते हुए अपने स्क्वाड्रन को सभाला और शत्रु द्वारा जोरों से फायर किए जाने के बावजूद अपने टैंक की टूरेट पर खड़ होकर गोलाबारी का संचालन किया। उनके साहस, धैर्य और व्यक्तिगत सुरक्षा के प्रति निरपेक्षता ने उनकी टुकड़ी को काफी उत्तेजित किया, जिससे शत्रु को भारी क्षति उठानी पड़ी। इस कार्यवाही के दौरान जबकि स्क्वाड्रन का नेतृत्व कर रहे थे, उन्हें एम० एम० जी० की गोली लगी और उनकी मृत्यु हो गई।

दिलबहादुर छेत्री

राइफलमैन दिलबहादुर छेत्री ने शत्रु के समक्ष विशिष्ट शूरता और अद्भुत कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। आतग्राम पर आक्रमण के समय उसने व्यक्तिगत सुरक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया और निर्भीकतापूर्वक बंकरों में लड़ता रहा। उसने शत्रु के ८ सैनिकों को अपनी खुखरी से मारा और एक मीडियम मशीनगन भी छीनी, जो उसकी कम्पनी को आगे

विद्याभूषण वशिष्ट

एक अभियानात्मक स्क्वाड्रन के कमांडिंग आफिसर, विंग
कमांडर वशिष्ट ने ३ दिसम्बर, १६७१ की रात को चंगामंगा
जंगल में शत्रु के ईंधन व अस्त्र भंडारों पर आक्रमण करने के
लिए अपने स्क्वाड्रन के भारी बमवर्षकों के एक दल का नेतृत्व
किया। शत्रु द्वारा नीचे से फायर किए जाने पर भी उन्होंने
कुशलतापूर्वक आक्रमण किया और निर्धारित लक्ष्य को भारी
क्षति पहुंचाई। दूसरी रात को भी उन्होंने लक्ष्य को बुरी तरह
नुकसान पहुंचाया जबकि शत्रु द्वारा नीचे से गोली चलती रही।
पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर स्थित हाजीपीर के दर्रे में शत्रु के
ठिकानों पर आक्रमण करने के लिए ५ दिसम्बर, १६७१ को
उन्होंने बमवर्षकों की एक टुकड़ी का नेतृत्व किया। इस अभि-
यान में कठिनाइयां व खतरे और अधिक बढ़े हुए थे, क्योंकि
लक्ष्य क्षेत्र में नीचे से फायरिंग हो रही थी। साथ ही, पर्वतीय
घाटी क्षेत्र में अपने बड़े विमान को चलाना और टुकड़ी को
कम ऊंचाई पर सचालित करना भी अत्यन्त दुष्कर था। इन
कठिनाइयों के बावजूद विंग कमांडर वशिष्ट ने कुशलतापूर्वक
आक्रमण किया और दुश्मन के ठिकानों को क्षति पहुंचाने में
उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। इन सबके अलावा, उन्होंने
शत्रु के क्षेत्र में काफी दूर तक अन्य कई अभियानों में नेतृत्व
किया था, जहां लड़ाकू विमानों का डर और विमान-ध्वंसक
फायरिंग की भी सम्भावना थी। इन सभी अभियानों में विंग
कमांडर वशिष्ट ने अपने सभी कार्य बिना कोई विमान खोये ही
किए। उन्होंने शत्रु के सुरक्षित ठिकानों पर कई रातों में

लेफ्टि-कमांडर सन्तोषकुमार गुप्ता

६ दिसम्बर, १९७१ को भारतीय नौसेना एयर स्क्वाड्रन के कमांडिंग अफसर लेफ्टि-कमांडर सन्तोषकुमार गुप्ता ने आई० एन० एस० विक्रांत से शत्रु के जहाजों पर ११ घातक प्रहार किए। इसके अलावा बांगला देश के विभिन्न क्षेत्रों में शत्रु से समुद्री संसाधनों की रक्षा भी की। शत्रु द्वारा इनके विमान को गोली लगने के बाद भी अपने प्राणों की परवाह किए बिना इन्होंने आक्रमण जारी रखा। इन्होंने अपने दुर्घटनाग्रस्त विमान को विमानवाहक पोत के डैक पर बड़ी कुशलता से उतार कर अपने बुद्धिकौशल का परिचय दिया।

लेफ्टि-कमांडर जोसेफ पियस अल्फ्रेड नोरोन्हा

८ से ११ दिसम्बर के दिनों में लेफ्टि-कमांडर जोसेफ पियस अल्फ्रेड नोरोन्हा भारतीय नौपोत पनवेल पर नियुक्त थे। इन्हें मंगला तथा खुलना के शत्रु ठिकानों पर आक्रमण करने का कार्य सौंपा गया था। इन्होंने अपने जहाज का बड़ी कुशलता से संचालन किया और शत्रु को खदेड़ते हुए अपने साथियों को प्रोत्साहित भी किया।

विंग कमांडर सिसिलवियान पारकर

आफिसर कमांडिंग विंग कमांडर ने शत्रु पर आक्रमण के समय लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया। जब ये शत्रु पर आक्रमण करके लौट रहे थे तो शत्रु के सैबर विमानों ने इन पर हमला कर दिया। इसी लड़ाई के दौरान विंग कमांडर पारकर ने एक सैबर विमान को मार गिराया तथा दूसरे विमान को दुर्घटनाग्रस्त कर दिया। एक अन्य आक्रमण में विंग

़्पिट-कर्नल राजकुमार सिंह

लेफ्टिनेंट-कर्नल सिंह को उच्च नेतृत्व, बहादुरी तथा अदम्य साहस के लिए महावीर चक्र प्रदान किया गया। इन्हें जैसोर क्षेत्र की महत्वपूर्ण चौकियों पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया था। इन्होंने इस कार्य को बड़ी सैन्यकुशलता से पूरा किया। इन्होंने शत्रु के तीन बड़े आक्रमणों को विफल कर दिया और शत्रु को भारी नुकसान पहुंचाया।

मेजर जयवीर सिंह

इन्होंने अदम्य साहस, दृढ़संकल्प, बहादुरी, उच्च नेतृत्व तथा अपने कर्तव्य का पालन करते हुए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। जब शत्रु ने छम्ब क्षेत्र में जबर्दस्त हमला किया तो इस नवयुवक कम्पनी कमांडर ने अपने छोटे-छोटे शस्त्रों से शत्रु का दृढ़ता से मुकाबला किया। अगले दिन इनके प्रेरणादायक नेतृत्व के फलस्वरूप इनके साथी अपने मोर्चे पर शत्रु के भारी दबाव के बावजूद भी डटे रहे। इन्होंने शत्रु के दो अन्य आक्रमणों को भी विफल कर दिया औरइसलड़ाई में अपनी एक खोई हुई चौकी पर भी पुनः अधिकार कर लिया।

मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी

इन्होंने अत्यन्त बहादुरी, कुशलता तथा उच्च कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया। शत्रु के टैंकों द्वारा किए गए ़पल आक्रमणों के समय में भी इन्होंने लोंगेवाला चौकी की ़पने अदम्य साहस प्रेरणादायक उदाहरण तथा रक्षात्मक ढंग ़ रक्षा की और अपनी सहायता के लिए आई दूसरी कुमक के ़हुंचने तक शत्रु का दृढ़ता से मुकाबला किया। इन्होंने शत्रु

प्रहार किए। एक हमले में तो इन्होंने पाकिस्तानी वायुसेना के सरगोधा स्थित संस्थान को बुरी तरह से नुकसान पहुचाया। छम्ब क्षेत्र में अपनी थलसेना की सहायता करते हुए इन्होंने दिन में ही शत्रु की चार तोपों में से तीन को मुनव्वर तवी के पास ही शांत कर दिया, जो हमारी थलसेना को आगे बढ़ने से रोक रही थीं। शत्रु ने इन दोनों स्थानों पर अपनी सुरक्षा का सबल प्रबन्ध कर रखा था। इनके इस कार्य से इनके साथियों को भी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मिला। इन कार्यों के सम्पन्न करने में इन्होंने अपनी बुद्धिकुशलता, बहादुरी तथा वायुसेना के ऊंचे आदर्शों की परम्परा का परिचय दिया।

ब्रिगेडियर कृष्ण स्वामी गौरीशंकर

इनके ब्रिगेड को डेरा बाबा नानक क्षेत्र में शत्रु की महत्वपूर्ण चौकियों को, जिनकी सुरक्षा का शत्रु ने कड़ा प्रबन्ध कर रखा था, अपने अधिकार में लेने का कार्य सौंपा गया था। ब्रिगेडियर गौरीशंकर ने इस कार्य को अपनी बहादुरी, दिलेरी तथा अदम्य साहस से पूर्ण किया। युद्ध के दौरान वे हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहकर अपने जवानों का निर्देशन करते रहे। शत्रु ने अपनी सुरक्षा के लिए टैंक, मध्यम दर्जे की मशीनगनें और आर्टिलरी को इसमें झोंक दिया। ऐसे समय में अपने जवानों का बड़ी बहादुरी से मार्गदर्शन किया। इन्होंने शत्रु के हमले को विफल करने के साथ-साथ उसको भारी नुकसान भी पहुंचाया।

लेफ्टि-कर्नल कश्मीरीलाल रतन

शत्रु के आक्रमण को विफल करने के लिए लेफ्टि-कर्नल रतन ने अपने जवानों को प्रेरणादायक नेतृत्व प्रदान किया।

हार किए। एक हमले में तो इन्होंने पाकिस्तानी वायुसेना के रगोधा स्थित संस्थान को बुरी तरह से नुकसान पहुंचाया। म्ब क्षेत्र में अपनी थलसेना की सहायता करते हुए इन्होंने न में ही शत्रु की चार तोपों में से तीन को मुनव्वर तवी पास ही शांत कर दिया, जो हमारी थलसेना को आगे बढ़ने रोक रही थीं। शत्रु ने इन दोनों स्थानों पर अपनी सुरक्षा सबल प्रबन्ध कर रखा था। इनके इस कार्य से इनके ाथियों को भी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मिला। इन कार्यों के सम्पन्न करने में इन्होंने अपनी बुद्धिकुशलता, बहादुरी तथा वायुसेना के ऊंचे आदर्शों की परम्परा का परिचय दिया।

ब्रिगेडियर कृष्ण स्वामी गौरीशंकर

इनके ब्रिगेड को डेरा बाबा नानक क्षेत्र में शत्रु की महत्वपूर्ण चौकियों को, जिनकी सुरक्षा का शत्रु ने कड़ा प्रबन्ध कर रखा था, अपने अधिकार में लेने का कार्य सौंपा गया था। ब्रिगेडियर गौरीशंकर ने इस कार्य को अपनी बहादुरी, दिलेरी तथा अदम्य साहस से पूर्ण किया। युद्ध के दौरान वे हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहकर अपने जवानों का निर्देशन करते रहे। शत्रु ने अपनी सुरक्षा के लिए टैंक, मध्यम दर्जे की मशीनगनें और आर्टिलरी को इसमें झोंक दिया। ऐसे समय में अपने जवानों का बड़ी बहादुरी से मार्गदर्शन किया। इन्होंने शत्रु के हमले को विफल करने के साथ-साथ उसको भारी नुकसान भी पहुंचाया।

लेफ्टि-कर्नल कश्मीरीलाल रतन

शत्रु के आक्रमण को विफल करने के लिए लेफ्टि-कर्नल रतन ने अपने जवानों को प्रेरणादायक नेतृत्व प्रदान किया।

भारी नुकसान पहुंचाया।

कमांडर मोहन नारायण राव

कमांडर मोहन नारायण राव सामंत को अपनी स्क्वाड्रन को अत्यन्त जटिल, टेढ़े-मेढ़े तथा अपरिचित मार्गों से ले जाने और मंगला तथा उनके बाद खुलना में शत्रु को भारी हानि पहुंचाने के कारण महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। प्रशस्ति में कहा गया है कि कमांडर इस कार्य को सम्पन्न करते समय कई बार बाल-बाल बचे।

विंग कमांडर स्वरूपकृष्ण कौल

लड़ाकू-बमवर्षक स्क्वाड्रन के कमांडिंग आफिसर विंग कमांडर स्वरूपकृष्ण कौल ने बांगला देश के विभिन्न स्थानों के चित्र लेने के लिए स्वेच्छा से अपनी सेवाएं अर्पित कीं। इस जोखिमपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने के लिए उन्हें कई बार अपने विमान को जमीन से २०० फुट की ऊंचाई पर भी उड़ाना पड़ा। इन्होंने ऐसे स्थानों के भी चित्र लिए जिनका शत्रु ने सुरक्षा की दृष्टि से कड़ा प्रबन्ध कर रखा था।

उन्हें बहुत सारी चोटें लगी थी, अतः उन्हें भारत पहुंचाना आवश्यक हो गया था।

स्वस्थ होने के पश्चात् जनरल मानेकशा ने स्टाफ कालेज में प्रवेश किया और उत्तर-पूर्व सीमा पर एक ब्रिगेड में ब्रिगेट-मेजर के रूप में भरती हो गए। वे कुछ समय तक स्टाफ कालेज कोटा में प्रशिक्षण पद पर भी रहे। उसके बाद वे दोबारा बर्मा में अपनी रेजिमेंट में जा मिले, जो कि उस समय जनरल स्लिमें के नेतृत्व में रंगून-मांडले मुख्य मार्ग की ओर बढ़ रही थी।

युद्ध समाप्त होने के पश्चात् जनरल मानेकशा हिन्द-चीन में जनरल डाइसो के स्टाफ आफिसर बनकर गए। जहा पर जापानियों द्वारा आत्मसमर्पण कर देने के पश्चात् उन्होंने १०,००० युद्धबंदियों के पुनर्वास में सहायता दी। आस्ट्रेलिया को भारत की युद्ध में सहायता और उपलब्धियों के बारे में परिचित कराने के लिए जनरल मानेकशा को १९४६ में ६ महीने के दौरे पर आस्ट्रेलिया भेजा गया।

वापस आने के पश्चात् जनरल मानेकशा ने सेना मुख्यालय के मिलिटरी आपरेशन डायरेक्टोरेट में प्रथम श्रेणी के स्टाफ आफिसर के पद पर कार्य करना आरम्भ किया और १९४८ में वे मिलिटरी आपरेशन के निदेशक बने और यह पद जम्मू और काश्मीर के युद्ध के समय भी उन्होंने सम्भाला।

जनरल मानेकशा जनरल के० एस० थिमैया के साथ काश्मीर के सैनिक सलाहकार के रूप में अमरीका भी गए। वे दो साल तक पैदल सेना ब्रिगेड में कमांडर भी रहे और एक वर्ष सेना मुख्यालय में सैनिक प्रशिक्षण निदेशक भी रहे। १९५७ में उन्हें मेजर जनरल बना दिया गया और वे डिवीजन कमान

नौसेना मे भर्ती होने से पहले उन्होंने बन्दरगाह न्यास, कराची
''र कार्य किया।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात एडमिरल नन्दा ने कई महत्व-
्र्ण पदों पर कार्य किया और विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त
िए। १६४८ में उन्होंने लदन में आई० एन० एस० 'दिल्ली',
ौसेना के पहले जंगी जहाज में प्रथम लेफ्टि० का पद सभाला।
ारत लौटने के पश्चात उन्होंने २ वर्ष तक (१६४६-५१)
ौसेना मुख्यालय में डायरेक्टर आफ पर्सनेल सर्विसेज के रुप में
ार्य किया। इसके पश्चात आप आई० एन० एस० 'रणजीत'
: कमाडर वने। दुबारा उन्हे नौसेना मुख्यालय में नियुक्त कर
त्या गया। यहां वे चीफ आफ पर्सनेल बने और बाद मे उन्हें
मोडोर नियुक्त कर दिया गया।

१६५७ में एडमिरल नन्दा ने जगी जहाज आई० एन०
स० 'मैसूर' समुद्र में उतारा। इसके पश्चात उन्हें नौसेना गोदी
िस्तार योजना, बम्बई में महानिदेशक के पद पर नियुक्त कर
ाया गया। १६६१ में अति विशिष्ट सेवा पदक से विभूषित
ज्या गया। इसके पश्चात इन्होंने इम्पोरियल डिफेंस कालेज,
दन में प्रशिक्षण प्राप्त किया और वहां से वापस लौटने पर
ौसेना मुख्यालय में चीफ आफ मेटिरियल का पद संभाला,
ो कि कमोडोर के बराबर होता है।

एडमिरल नन्दा मई, १६६२ में नौसेना के उपाध्यक्ष बने,
ो कि रीयर एडमिरल के पद के समान होता है। दिसम्बर
६६१ में उन्हें मझगांव गोदी बम्बई में प्रबन्ध निदेशक नियुक्त
ाया गया, जहां उन्होने १८ महीने तक कार्य किया। इसी
ौरान उन्होंने मझगांव गोदी की योजना का पुनर्गठन किया

स्क्वाड्रन संख्या ७ में नियुक्त होने से पूर्व उन्होंने नम्बर १ सर्विस फ्लाइंग स्कूल में नेवीगेटर (दिशा निर्देशक) और फ्लाइंग प्रशिक्षक तथा नम्बर १५२ आपरेशनल ट्रेनिंग यूनिट में कार्य किया।

बमवर्षक विमानों से लेस स्क्वाड्रन ने १९४४ में जनरल विंगेट की बर्मा में सहायता की। इस कार्यवाही के परिणाम-स्वरूप इम्फाल से घेरा उठा लिया गया था। एयर चीफ मार्शल (उस समय स्क्वाड्रन लीडर थे) ने जून, १९४४ में इस स्क्वाड्रन की कमान संभाली और उसमें लड़ाकू विमान शामिल करके १९४५ में बर्मा में दुबारा कार्यवाही की। इस स्क्वाड्रन ने उत्तर बर्मा से रंगून तक सेना की सहायता की। १९४४ तथा १९४५ में की गई सेवा के बदले उन्हें 'विशिष्ट फ्लाइंग क्रास' से विभूषित किया गया।

युद्ध के पश्चात एयर मार्शल को भारतीय वायुसेना में स्थायी पद दिया गया। स्वतंत्रता के पश्चात उन्होंने रायल एयर फोर्स स्टाफ कालेज एन्डोवेर में प्रशिक्षण प्राप्त किया और कई विशिष्ट पदों—सेना मुख्यालय में डाइरेक्टर आफ प्लान, मंत्रिमंडल के उप सचिव (सेना), ट्रेनिंग कमान के एयर आफिसर कमांडिंग पर कार्य किया। वे विदेश में कई सरकारी शिष्ट मंडलों के सदस्य भी रहे। १९५४ में एक नये वायुयान का परीक्षण करते हुए वे भारतीय वायुसेना के पहले चालक थे जिन्होंने वायुयान को ध्वनि की गति से भी तेज उड़ाया।

१९५७ में उन्हें इंडियन एयर लाइंस का महा प्रबन्धक बना दिया गया और उन्होंने इस पद पर ५ वर्ष कार्य किया। साथ-साथ वे इंडियन एयर लाइंस तथा एयर इंडिया के सदस्य